मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)

अनुसन्धान - ८१

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य विषयक संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

संपादक : विजयशीलचन्द्रसूरि

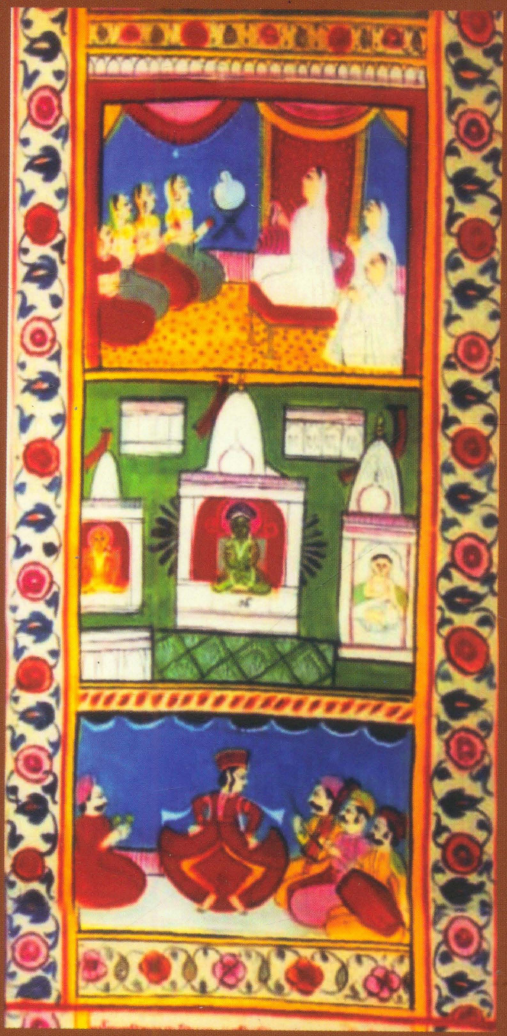

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य
नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि - अमदावाद

July 2020

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)
'मुखरता सत्यवचननी विघातक छे'

अनुसन्धान

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य-विषयक
सम्पादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

८१

सम्पादक :
विजयशीलचन्द्रसूरि

श्रीहेमचन्द्राचार्य

कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अहमदाबाद
जुलाई - २०२०

अनुसन्धान ८१

आद्य सम्पादक : **डॉ. हरिवल्लभ भायाणी**

सम्पादक : **विजयशीलचन्द्रसूरि**

सम्पर्क : C/o. **अतुल एच. कापडिया**
A-9, जागृति फ्लेट्स, पालडी
महावीर टावर पाछळ, अमदावाद-३८०००७
M. 99798 52135
E-mail : s.samrat2005@gmail.com

प्रकाशक : **कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अहमदाबाद**

प्राप्तिस्थान : (१) **आ. श्रीविजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर**
१२, भगतबाग, जैननगर, नवा शारदामन्दिर रोड्,
आणंदजी कल्याणजी पेढीनी बाजुमां,
अमदावाद-३८०००७
M. 99798 52135 (अतुल एच. कापडिया)

(२) **सरस्वती पुस्तक भण्डार**
११२, हाथीखाना, रतनपोल,
अमदावाद-३८०००१
फोन : ०७९-२५३५६६९२

प्रति : २५०

मूल्य : ₹ 150-00

मुद्रक : **क्रिश्ना ग्राफिक्स, किरीट हरजीभाई पटेल**
९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद-३८००१३
(फोन: ०७९-२७४९४३९३)

निवेदन

संशोधन एटले अनावरण. ग्रन्थभण्डारोमां सदीओथी सचवायेला ग्रन्थोने के कृतिओने नवेसरथी लिपिबद्ध करी प्रकाशित करवा ते संशोधन; काळना गर्त्तमां दटायेलां-छूपायेलां अनेक शास्त्रीय, ऐतिहासिक अथवा तात्त्विक तथ्यो / रहस्योने उजागर करवां ते संशोधन.

मारे रसप्रद छे आ प्रक्रिया. आपणने जो रस पडे, गमवा मांडे, तो आ प्रक्रिया आपणने घणुं घणुं नवुं ज्ञान संपडावे, शीखवाडे अने निर्द्वन्द्व आनन्द पण आपे.

एक वात फरीफरीने याद राखवी घटे : संशोधन थकी कोई नवा सत्य, तथ्य के तत्त्वनी प्राप्ति थती नथी. संशोधन द्वारा जे तथ्यादि मळे छे ते तो पहेलेथी तेना स्वरूपमां विद्यमान हतां ज; मात्र आपणे तेने जाण्यां के जाणतां नहोता. तेथी तेवां तथ्यो ज्यारे जोवा-जाणवा-वांचवामां आवे छे त्यारे आपणने कशीक नवीन उपलब्धि थयानो रोमांच अनुभवाय छे; आ रोमांचमां ज संशोधननी साची मजा छे.

दा.त. एक प्राचीन ग्रन्थनुं नाम विविध ग्रन्थोमां तथा अन्यस्त्रोतोमां वारंवार उल्लेखाय छे; परन्तु ते ग्रन्थ कोईने प्राप्त थतो के थयो नथी. जाणकारोए ग्रन्थालयो फेंद्या होय पण तेमने पण जड्यो न होय. हवे ते ग्रन्थ, ओचिंतो ज, कोई डाभडा के पोथीभण्डारो फेंदता-अवेरतां, कोई शोधकना हाथमां-नजरमां आवी जाय अने तेना ख्यालमां आवे के 'आ तो फलाणो-दुर्लभ गणाय छे ते ग्रन्थ!', त्यारे-ते क्षणे ते शोधक केवो रोमहर्ष अनुभवे ! अने पछी ते ग्रन्थ प्राप्त थयानुं जगत् समक्ष जाहेर करतां तेमज ते पछी ते ग्रन्थ पर काम करवामां तेने केटलो आनन्द थाय ! साचो संशोधक हशे तो ते आवी स्थिति कल्पी शके छे. मत्सरी के शोध अने शोधकनो द्वेषी हशे तेने आ रोमांचनी अनुभूति स्वप्नमांय नहि मळे.

साचो संशोधक हमेशां अवनवुं शोधी काढवा माटे तलसतो होय छे. आवा तलसाटने लईने तेनी दृष्टि पण तीक्ष्ण अने सूक्ष्मेक्षणमां नीवडेली बनी

जाय छे, परिणामे सामान्य विद्वान्ने ज्यां कशुं ना जडे त्यां शोध-सामग्री तेनी राह जोती होय तेवुं घणीवार बने छे.

आवरणो अनेक प्रकारनां होय छे. काळनुं आवरण, विस्मृतिनुं आवरण, भ्रान्तिनुं आवरण, रूढ मान्यतानुं आवरण, अन्धश्रद्धानुं तथा झनूननुं आवरण, अज्ञाननुं आवरण, अस्वीकारनुं आवरण, आम विविध आवरणोने हटावीने तथ्यात्मक बाबतोने अनावृत करवानुं कार्य करी जाणे ते साचा अर्थमां संशोधक.

— शी.

भूलसुधार

अनुसन्धान-८० ना त्रीजा आवरणपृष्ठ पर 'आवरणचित्र-परिचय' आप्यो छे, तेमां (आवरण १) छे त्यां (आवरण ४) अने (आवरण ४) छे त्यां (आवरण १) एम समजवानुं छे.

आवरणचित्रो विषे

प्रस्तुत अंकमां प्रकाशित, आ. श्रीजगच्चन्द्रसूरि-सम्पादित 'विज्ञप्तिपत्र'मां राजस्थानी शैलीनां सुन्दर चित्रो पण छे. ते पैकी केटलांक चित्रोनी तसवीरो तेमणे पाठवी छे, ते १ थी ४ आवरण-पृष्ठोमां आपवामां आवी छे.

अनुक्रमणिका

पण्डितमिश्र श्रीसाधुमेरुगणिकृता यात्रासप्ततिका	सं. गणि सुयशचन्द्रविजय मुनि सुजसचन्द्रविजय	१
विजयदानसूरि पुण्यरास	सं. गणि सुयशचन्द्रविजय मुनि सुजसचन्द्रविजय	२३
गूढा-प्रहेलिका-समस्या-हरियाळी	सं. उपा. भुवनचन्द्र	५६
विनंतिपत्र (सचित्र)	आचार्यश्रीविजय जगच्चन्द्रसूरि	६१
श्री महावीरप्रभुना जीवनना अधिकृत नकशास्वरूप ग्रन्थ	— शीलचन्द्रविजय	८२

पण्डितमिश्र(?) श्रीमेरुगणिकृता
यात्रासप्ततिका

— सं. गणि सुयशचन्द्रविजय
मुनि सुजसचन्द्रविजय

'यात्रा' श्रावकजीवनना ११ वार्षिक कर्त्तव्योमांनु १ कर्त्तव्य छे। 'ते दरवर्षे जघन्यथी एकवार करवी' एवुं पू.आ. श्री रत्नशेखरसूरिजी म. 'श्राद्धविधिप्रकरण, प्रकाश-५'मां फरमाव्युं छे। आगळ महाराजजी ए यात्राना ३ प्रकार कहे छे - (१) अष्टाह्निका यात्रा (२) रथयात्रा (३) तीर्थयात्रा।

तीर्थ — शत्रुंजय-रैवताचलप्रमुख अनेक शाश्वत अने अशाश्वत तीर्थस्थानो अने तीर्थंकरना जन्म-दीक्षा-केवळज्ञान-निर्वाण-विहारथी पवित्र थयेल अनेक भव्यजीवोने शुभनुं आलंबन आपनार भूमिओ। छ'री पालवापूर्वक कराती ते तीर्थोनी यात्रा एटले 'तीर्थयात्रा'।

ए समय हतो ज्यारे तीर्थयात्रा आजना समय जेटली सरळ न हती। एक गामथी बीजे गाम के एक नगरथी बीजे नगर जवानां साधनो अल्प हतां। वळी रस्तामां आकरां टाढ-ताप, नदी-नाळां-वन-चोर-डाकु वगेरे अनेक प्रकारनी मुश्केलीओ पण रहेती हती। तेमां दूरना कोई प्रदेशनी यात्रा जाणे पडकार गणातो। मात्र शारीरिक नहीं, मानसिक सज्जता पण एटली ज होय तो यात्रा जवानो विचार करातो। एमां पण सामान्यजन माटे कोइ सार्थ ते तीर्थ—नगर तरफ जतो होय तो के कोइ व्यक्ति जाहेरातपूर्वक यात्रिगणना रक्षणनी जवाबदारी स्वीकारे अर्थात् बधाने साथे लइ जवा कोई समर्थ व्यक्ति तैयार थाय तो ज तीर्थना के तीर्थपतिना दर्शन थाय।

वधुमां आ यात्रामां दरेक यात्रिकोए पोतपोतानी भोजनादिनी व्यवस्था करवानी रहेती; सार्थनी दुकानमांथी जीवनोपयोगी वस्तु मूल्यथी मळी जती। सार्थपति के संघपति साथे आवेला साधु-संतोनी, परोणाओनी अने जेओ पोतानी पण व्यवस्था करवा शक्तिमान न हता तेवा बधानी सघळी व्यवस्था करता। रस्तामां आवता गाम-नगरादिना चैत्यो-तीर्थभूमिओने जुहारतो ते सार्थसंघ धीरे-धीरे गन्तव्य तीर्थस्थाने पहोंचतो। त्यां उछामणी बोलवापूर्वक 'तीर्थमाळ' पहेरवामां आवती।

हवे ते सार्थ जो त्यांथी पुनः स्वनगरे पाछो फरवानो न होय तो कोइ अन्य सार्थ साथे यात्रिक स्वनगरे पाछो फरे अने जो संघ साथे गयो होय तो पुनः ते मार्गे के अन्य मार्गे रस्तानां तीर्थो जुहारतो पाछो फरे ।

आम तीर्थदर्शन ते काळे खूब दुर्लभ हतां । एटले ज ते-ते प्रदेशना लोको अन्य प्रदेशना ते-ते तीर्थना वर्णनना आधारे पट्टो (आरस/कपडा के अन्य वस्तुना) बनावी तेना ज दर्शनथी तीर्थदर्शननो सन्तोष पामता । अस्तु ।

तीर्थ के तीर्थपति साथे सम्बन्ध होय तेवा अनेक ग्रन्थो-प्रकरणो-लघुकाव्यो-स्तोत्रो-स्तवनो ज्ञानभण्डारमांथी प्राप्त थाय छे । ज्यारे तीर्थयात्रा सम्बन्धी वातो जणावता होय तेवा ग्रन्थो बहु ज अल्पसंख्यक हशे एवुं अमारुं मानवुं छे।

प्रस्तुत कृति पण तेवी तीर्थयात्राविषयक कृति छे । कृतिकारे तेमां तीर्थयात्रा सम्बन्धी पोतानी गुरुपरम्परा पासेथी सांभळेला विचारो बालजीवोना हित माटे काव्यमां गुंथ्यां छे । कृतिनां महत्तम काव्यो शार्दूलविक्रीडित छन्दमां छे । ज्यारे श्लो. १२-६६ स्रग्धराछन्दमां, श्लो. ६२ कामक्रीडाछन्दमां, श्लो. ६३-६५ वसन्ततिलका-छन्दमां, श्लोक. ६४-७० शालिनीछन्दमां, श्लो. ७६ उपचित्राछन्दमां छे ।

कृति सरळ संस्कृतमां रचायेल छे । छतां तेमां- 'मज्जाजैन०' श्लो.६, 'चोरचरटाः' श्लो. ३९, 'सार्थेन' श्लो. ४०, 'अङ्गीठकं' श्लो. ४१, 'छुटितैः' 'पट्टलैः' 'ढिक-लत्ताभ्यां' 'कर्चरीपर्पटिकां' 'फावितम्' श्लो. ३३, 'चिक्कणं' श्लो. ४९, 'घनघना' श्लो. ६७-जेवा भाषामां बोलातां शब्दोने कर्त्ताए सीधा संस्कृतमां प्रयोज्या छे ।

कृतिमां कृतिकार विषे, तेमना गच्छ के तेमनी गुरुपरम्परा विशे नानी सरखी पण नोंध नथी । मात्र कृतिनी रचना सं. १५१६मां थइ होवानुं अन्त्य पद्यमां जणावायुं छे ।[१]

कृतिसार :

कृतिमां शत्रुञ्जयतीर्थयात्राविषयक - 'यात्रा कोने कहेवाय ? कोण करे ? क्यारे करे ? कइ रीते करे ? यात्राप्रयाण पहेला शुं शुं करवुं ? यात्राप्रयाण- दिवसे

---

१. अन्तिम पद्यमां 'साधुमेरुगणिपण्डितमिश्रा उक्तवन्तः' एवा शब्दो छे. ते परथी आवा कर्ता पं.साधुमेरुगणि होवानुं निश्चित छे. तेमनो परिचय शोधीने लखी मोकलवा कृति-सम्पादकोने विनंती.

शुं खावुं- शुं त्यागवुं ? यात्रा दरम्यान शुं ध्यान राखवुं ? तीर्थस्थाने शुं करवुं - शुं न करवुं ? यात्राथी पाछा आवीने शुं करवुं' इत्यादि विविध विषय उपर कृतिकारे सरस प्रकाश पाड्यो छे। तेमांना केटलाक विषयो यात्री एवा गृहस्थने माटे, केटलाक संघपति माटे अने केटलाक यात्रासंघमां साथे जनार साधु माटे छे। अहीं तेमांनी केटलीक विशेष नोंध भावार्थस्वरूपे जुदी तारवी मूकी छे।

यात्रिक माटे :

श्लो. १५-१६-१७ → तीर्थयात्रा दरम्यान कोईने पण असभ्य-मर्मघाती वचन वचन न कहेवुं।

श्लो. २१ → पोताना घरे-जिनचैत्यमां-पौषधशाळामां अपूर्व (महोत्सव) करे। कसाई वगेरे पासेथी जीव छोडावे। पछी सारा शुकनवाळा दिवसे मंगळ करी प्रस्थान करे।

श्लो. २२ → यात्राए जता पूर्वे पोताने अने बीजाने अनृणी करे अर्थात् लेणुं होय तो माफ करे, देणुं होय तो चुकवी दे। जिनालयमां स्नात्र भणावी नवी धज़ा चढावे। पोताना विरोधी वर्ग साथे क्षमापना करे।

श्लो. २३ → यात्रा दिवसे चाटवा जेवुं द्रव्य अने मीठुं (उपरथी) भोजनमां ले नहीं। दूध पण भोजनमां ले नहीं।

प्रीतिदानथी अने सारां वचनोथी स्वजनवर्गने प्रसन्न करे।

पत्नी ऋतुवंती होय, जन्म-मरण सम्बन्धी सूतकना दिवसो पूरा थया न होय, ज्योतिषनी दृष्टिए नबळो दिवस होय, के नीच पुरुष साथे आववानो होय तो ते दिवसे पण प्रयाण न करवुं।

श्लो. २४ → यात्राना दिवसे वस्त्र न धोवां, क्रीडा(रमत) न रमवी, नख न समारवा, तेलमर्दन करी स्नान करवुं नहीं, माथुं गुंथवुं नहीं, मैथुनसेवन पण करवुं नहीं।

श्लो. २५ → जो यात्रा करवा जनार व्यक्ति श्रीमंत न होय तो तेणे श्रेष्ठ-सात्त्विक अन्न ना मळे तो खीच / शाक (?) के तेल चोपडेलुं ढोकलुं खाइने यात्रार्थे प्रयाण करवुं।

श्लोक २७ → रस्तामां कोई देणदार मळे तो तेनी पासे पराणे देणुं

(आपेली रकम) यात्रिके मागवी नहीं । तेम ज रस्तामां शत्रु मळे तो तेना प्रत्ये द्वेष राखी कोइपण ख़राब विचार करवा नहीं । अने विरोध करनार व्यक्तिने पण क्षमा आपवी ।

श्लो. २८ → मार्गमां आर्थिक रीते दु:खित साधर्मिक-शारीरिक अक्षम - गरीब व्यक्तिओनी सेवा करवी । जीर्णचैत्यनो उद्धार करवो - ते माटे प्रयत्न करवो । केदखानामांथी केदीओने छोडावका । रस्तामां आवता दरेक तीर्थधामोमां महोत्सवपूर्वक स्नात्र भणावी ध्वजारोपण करवुं । आ बधां कार्यो खूब प्रसन्नताथी करवां ।

श्लो. २९ → बीजाना खेतरमां प्रवेशीने तेने पूछ्या वगर शेरडी-धान्य-कडब(घास)-कलिंगर-चीभडुं(काकडी)-नागरवेल(पान)-केरी-रायण जेवी वस्तु लेवी नहीं । शेरडीने के उगेला पाकने वाळी - मरोडीने नुकसान न करवुं ।

श्लो. ३१ → मार्गमां चाली रहेला गाडाओनी वच्चे बलपूर्वक पोतानुं गाडुं पसार करवुं नहीं । तेम करवाथी परस्पर कलह थाय छे जे घणा कर्मबन्धनुं कारण छे ।

श्लो. ३८ → तीर्थयात्रामां – तीर्थस्थानमां क्यारे पण कोइ पण स्त्रीनी छेडछाड करवी नहीं ।

श्लो. ३९ → संघना यात्रिकोने कोइ पण प्रकारनी पीडा आपवी नहीं। बलात्कारथी के चोरीथी तेमना द्रव्यादिनी चोरी करवी नहीं ।

श्लो. ४१ → उधेही प्रमुख अनेक जीवोनी जयणा (जीवदया)नी बुद्धिवाळा यात्रिके बने त्यां सुधी मार्गमां रसोई के ठंडीथी रक्षणार्थे चूलो-तापणुं वगेरे न करवुं । अने छतां जो घणा व्यक्ति माटे ते आवश्यक ज होय तो जयणापूर्वक काष्ठ जोइ-जोइने करवुं ।

श्लो. ४२/४३ → अनेक दोषोनुं कारण होवाथी वारांगना (वेश्या-नगरवधू)ने संघमां बोलावकी नहीं ।

श्लो. ४४ → भाभी, साळी के नवयौवनवाळी अन्य कोइपण स्त्रीनी वात छोडी दो, स्वपत्नी साथे पण मोह(राग)ने वधारनार हास्य वगेरे करवुं नहीं । अने चपलतानो त्याग करवो ।

श्लो. ४५ → विशेष आरम्भ-समारम्भ करी पर्वदिवसे साधर्मिकवात्सल्य करवुं नहीं । पर्वत उपर रसोइ न करवी । वस्त्र धोवा अळगण पाणी न वापरवुं।

त्रसजन्तु होय अर्थात् जलचर जीवो होय तेवा सरोवरमां साथे रहेला बळद वगेरे पशुने जळपान न करावववुं ।

श्लो. ४६ → तीर्थस्थानमां (गिरिराज उपर) मळ-मूत्र विसर्जन करवुं नहीं। परस्पर कोइ पण प्रकारनो क्लेश करवो नहीं ।

श्लो. ५३ → ऋतुवंती नारीए तीर्थस्पर्शना करवी नहीं । तीर्थस्थाने (गिरिराज उपर) प्रिय व्यक्तिनो अग्निसंस्कार करवो नहीं ।

संघपति माटे :-

श्लो. ९ → संघपति देव-गुरु प्रत्ये भक्तिवाळो, साधर्मिक प्रत्ये विनम्र, गरीब-अनाथ जीवो प्रत्ये दयाळु, मधुर वचनवाळो, धैर्यवान्, वीर, न्यायवान्, सर्वने योग्य व्यवहार करनार, जनसमूहमां प्रसिद्धिप्राप्त, दुष्टने शिक्षा आपनार, सौम्य, बुद्धिमान, गंभीर होय ।

श्लो. ५६ → ते क्षुधा-तृषाथी पीडित साधु-साध्वी-क्षुल्लक- क्षुल्लिकानी तथा (संघमां आवेल) कुटुम्बोनी सेवा करनारो तथा गाय-घोडो-बळद-भेंस, उंट वगेरे प्राणीओनी चिन्ता करनारो होय ।

श्लो. ६३ → ऊंचा शिखर उपर रहेला-फरकता ध्वजथी शोभित, (सुन्दर) जिनबिम्बोथी युक्त अने जेमां श्वेत चामर विंझाइ रह्या छे तेवो रथ साथे राखी संघपति तीर्थयात्रा करे ।

श्लो. ६४ → ते मार्गमां आवता गाम-नगरना दरेक जिनालयमां गीत-गानप्रमुख आडम्बरपूर्वक स्नात्रमहोत्सव करे अने शासननी शोभा वधारे ।

श्लो. ६५ → ते दरेक नगरादिमां स्वामीवात्सल्यपूर्वक बधा साधर्मिकने पहेरामणी आपे अने जिनशासननी स्तवना करनार भाट-चारणप्रमुख लोकोने उचित मानदान आपे ।

साधु माटे :-

श्लो. ६७ → संघ साथे तीर्थयात्रा करवामां (कोइवार) रात्रे (वहेली सवारे - अंधारामां चालवुं पडे छे । झाकळ-धुम्मस-उजेही अने घास तृण वगेरे वनस्पति विराधना थाय छे । वृक्षादिनो घणो संघट्टो थाय छे । आम अष्टप्रवचनमातानी विराधना थाय छे ।

श्लो. ६८ → तीर्थयात्रा करवामां समये पडिलेहण वगेरे थतुं नथी । वळी

आवश्यक पण विधिपूर्वक थतां नथी । गोचरी-पाणीविषयक शुद्धि पण पूर्णपणे सचवाती नथी । उतारा माटेनां स्थान पण दोषरहित प्राप्त थतां नथी । अजाणतां पण स्त्री-पशु वगेरेनो संघट्टो थइ जाय छे । प्रमाद आववाथी उपकरणो उपाडवाना स्थाने गाडा वगेरे वाहनमां मूकवानो दोष सेवाय छे । अने तेम करवाथी फल-फूल-अनाज वगेरेथी भरेला ते गाडा वगेरेमां रहेला बीज वगेरे जीवोनी विराधना थाय छे.

श्लो. ६९ → आम सेंकडो दोषनो सम्भव थवाथी साधु भारेकर्मी थाय छे। ज्यारे साधु माटे तो दीक्षा ए स्थापनातीर्थ करता पण मोटुं तीर्थ छे । छतां बाह्य आडम्बरथी मोह पामेला अभिमानी, अल्पबुद्धिवाळा घणा साधुओ आ रीते तीर्थयात्रा करे छे । तेमने यात्रानुं यथार्थ फल कइ रीते मळे ?

श्लो. ७० → लोभी अने अभिमानी, वेश मात्र धारण करनारा जे साधुओ शत्रुंजयतीर्थ उपर आपणा पूर्वाचार्योए पण कदी नहीं करावेली पोतानी द्रव्यपूजा करावे छे । तेओ दुर्गतिमां ज जाय छे ।

श्लो. ७१ → गृहस्थने तारवाना बहानाथी पण साधुए 'हुं पात्र छुं' एवुं कही/समजी गिरिराज उपर वस्त्रादिनुं दान लेवुं नहीं, कारणके आ वस्त्रादिनो उपंभोग अतिकठिन छे, अर्थात् अपात्रने ते यथेच्छ फल देतो नथी, उलटुं दोष-दुर्गतिनुं कारण थाय छे ।

श्लो. ७३ → अक्षोदञ्चक (स्थापना) - जाडीकामळी-जीणी कामळी - नवा पात्रानी मूर्छा नहीं करनारो, लोकोनी साथे हळवा-मळवानी-लोभ-हास्य-विकथा अने चंचलतानी वृत्तिथी मुक्त, सत्कारादिगौरव अने गारवने जीतनारो, धर्मोपदेशमां उद्यत, भूख-तरस-ठंडी-गरमी वगेरे कष्ट सहन करनारो अने कोइपण प्रकारनी लौकिक कामना वगरनो साधु संघ साथे तीर्थयात्रा करे ।

अहीं एक विशेष उल्लेखनीय बाबत ए पण छे के कृतिकारे सम्पूर्ण कृतिमां 'इन्द्रमाळ-तीर्थमाळ' अंगे कोइ उल्लेख कर्यो नथी ।

प्रान्ते,

प्रस्तुत भावानुवाद स्वरूप करेल नोंधमां कृतिकारश्रीना आशयने जो अनुकूळ न लखायुं होय तो क्षमायाचना सह सम्पादनार्थे प्रस्तुत कृतिनी हस्तप्रत आपवा बदल-'राधनपुर - श्रीलावण्यविजयजी ज्ञानभण्डार'ना कार्यवाहकोनो खूब-खूब आभार ।

*

वन्दित्वा रचिताञ्जलिर्भगवतामर्च्यां चतुर्विंशतिं,[१]
मुग्धानुग्रहहेतवे पुनरपि श्रीधर्मलाभेच्छया ।
पूज्योपासनया श्रुताच्च किमपि ज्ञात्वा प्रयत्नाद् मना-
-गद्रि**श्रीविमलादितीर्थ**विषयं **यात्राविचारं** ब्रुवे ॥१॥ [शार्दूल]

मोहव्यूहं[२]दवाशुशुक्षणिं[३]शिखाकादम्बिनीसन्निभा,
भव्याभीष्टपरम्पराविततरणे सङ्कल्पवल्लीसमा ।
श्रीतीर्थङ्करशासनोज्ज्वलतरप्रासादकेतूपमा,
सा यात्रा स्वकुटुम्ब-सङ्घसहितैः कार्या बुधैरुत्सुकैः ॥२॥

ये सप्ताधिकषष्टिभेदविदितं निर्याणयाने रथं,
सम्यक्त्वं परिपालयन्ति कृतिनश्चन्द्रप्रभानिर्मलम् ।
भार्या-यौवन-गेहकार्य[४]निकरानालीढचित्ता दृढा
आत्मानं जिनयात्रया सरभसं सम्यक् पुनन्त्युत्तमाः ॥३॥

न्यायोपात्तधनं व्ययन्ति वपुषा कष्टं सहन्ते घनं,
दुर्मोचं भवनापणादि सकलं मुञ्चन्ति पुण्यार्थिनः ।
भोगाभोग[५]पराङ्मुखाः सगुरवः[६] शत्रुञ्जये रैवते,
यात्रां कर्मविनाशिनीं सुपरिणा[७] धन्या नराः कुर्वते ॥४॥

आजन्मार्जितसर्वकल्मषहरी यात्रा विशुद्धा कृता,
तस्यै मत्सरमुख्यदोषहरणात्[८] स्वं येन नोज्ज्वालितम् ।
कोटिस्तेन वराटिकालवकृते हा ! हारिताऽनार्यया,
बुद्ध्या बाटिकयाऽरघट्टकवरो विक्रीत एवाऽसता ॥५॥

---

१. अर्हतां चतुर्विंशति – चुवीसी, कथम्भूताम् – ? अर्च्यां – पूजनीयाम् । २. वपुर्मोहः[१] प्रियामोहः[२] सन्तानमोहः[३] लक्ष्मीमोहः[४] गृहमोहः[५] हट्टमोहः[६] कर्षणमोहः[७] पशुमोहः[८] – इत्यादिमोहानां व्यूहः-समूहः । ३. आशुशुक्षणिः – अग्निः । भार्या च यौवनं च गेहं चेत्येषां कार्यनिकरेऽनालीढं-अणलागूं चित्त छइ जेहनइ । ५. भोगानामाभोगः-विस्तारः । ६. गुरुभिः सह । ७. सुपरिइं । ८. तस्यै यात्रायै मत्सर एव मुख्यदोषः, तेषां हरणात् नोज्ज्वालितम् – अजूआल्युं नहीं ।

मज्जाजैनमहाजनैर्बहुविपत्संसारकारागृह-
वासोद्विग्नमनोभिरुद्यमपरैर्न्यायात्तवित्तव्ययैः ।
श्रीशत्रुञ्जयभूधरेश्वरमहत्तीर्थादियात्रोत्सवाः,
कर्त्तव्याः किल रामणीयककला-कल्याण-कीर्तिप्रदाः[९] ॥६॥

मुक्ता-शुक्ति-सुवर्ण-रूप्यखनयो वज्राकरो रोहणो,
द्राक्षा-चम्पक-नालिकेर-कदली-गोशीर्षमुख्या यथा ।
स्वाभाव्येन शुभा इमे वसुमतीमध्ये पदार्थास्तथा,
सिद्धक्षेत्रमिदं भवेऽर्हदुदितं जानीत पुण्यात्मकम् ॥७॥

अज्ञातोपनिषद्भिरद्भुतगुणे श्रीतीर्थयात्राविधौ,
बाह्याडम्बरकीर्त्तिपात्रनिपुणैः स्वं मन्यमानैः परम्[११] ।
मुग्धैर्गड्डरिकाप्रवाहपतितैः कष्टं कियत् सह्यते ?,
सम्यक् तत्त्वमिहोपलक्ष्य सुधियस्तस्मादुपक्राम्यताम् ॥८॥

श्रीअर्हद्-गुरुभक्तिभावितमनाः साधर्मिकप्राञ्जलो,
दीना-नाथदयामयो मधुरवाक् धीरश्च वीरो नयी ।
सर्वस्योचितकृद् वदान्य-विनयी[१२] दुष्टस्य शिक्षाप्रदः,
सौम्यः सङ्घपतिः सुधीर्विजयते गाम्भीर्यसर्वंसहः ॥९॥

भव्या-भव्य-विषा-मृता-घ-सुकृतोद्योता-न्धकारौषध-
व्याधि-स्व-र्नरक-प्रकीर्ति-कुयशो-रत्ना-श्ममुख्या यथा ।
रम्या-रम्यतया निसर्गत इमे श्रीजैनतीर्थे पर-
-तीर्थे सर्षप-मेरुवद् गुरु तथा ज्ञेयं बुधैरन्तरम् ॥१०॥

शक्ति-क्षान्तिबहुक्षमो[१३] गुरुतया मानार्हमानप्रदः,
सारां सर्वजने करोति[१४] विनयी देवे गुरौ भक्तिमान् ।
सर्वत्राऽपि च सावधानहृदयो यात्रां विधत्ते सुधी-
स्तस्यैवैहिक-पारलौकिकसुखश्रेणी भवेन्निश्चला ॥११॥

---

९. कथम्भूता उत्सवाः ? कला-शोभा, कल्याण अनइ कीर्त्ति । १०. कथम्भूतैर्मुग्धैः ? अद्भुतगुणे यात्राविधौ अज्ञातोपनिषद्भिः - अणजाण -- छइ जेणइ । ११. पुनः कथम्भूतैर्मुग्धैः ? स्वं परं-प्रकृष्टं मन्यमानैः । १२. वदान्य(ः)-[अव]दात च(श्च)पुनर्विनयी च वदान्यविनयी । १३. शक्तिश्च क्षान्तिश्च, ताभ्यां बहुक्षमः । १४. सर्व जननी सार करइ ।

श्रीमत्सम्यक्त्वधारी[१] जिनवचनरतो ब्रह्मचारी[२] विशुद्धो
भूसंस्तारी[३] सचेताः सकरुणहृदयः पादचारी[४] ससत्त्वः ।
सारम्भाहार-वस्तुव्रजरसपरिहारी[५] रसज्ञाक्षजेता[१५]
एकाहारी[६] निरीहो विमलगिरिपथे याति धन्यः स एकः ॥१२॥
[स्रग्ध०]

श्वासो यावदिहाऽस्ति तावदतनुः शोषो[१६] गृहारम्भिणा-
मत्वैवं क्षणभङ्गुरं जगदिदं मोहव्यपोहान्नरैः[१७] ।
वीवाहा-पण-कर्षणादि सकलं मुक्त्वैवमेवोद्यनै-
र्यात्रा यैः क्रियते यथेष्टफलदा दक्षास्त एव क्षितौ ॥१३॥

अथ क्रियाविधिः

पेयं प्रासुकवारि सारयतनापाल्या(ः) सशील(लं?) व्रताः,
प्रत्याख्यान-परोपकारकरणे कार्यं तथाऽऽवश्यकम् ।
वक्तव्यं विगताभिमानमनिशं सप्रश्रयं[१८] वर्त्मनि,
रेकारादिककट्वसभ्यवचनं त्याज्यं पुनश्चापलम् ॥१४॥

अथ दुर्वाक्यरिः*

दस्यो ! काहलिकश्च शाकिनिक ! रे कारागृहक्षेपण-
योग्यो लम्पट ! मांसकारिवचनोच्छिष्टो बकध्यानिकः ।
दासो मारय कारणेन महताऽप्युग्रं शठो[१९] निर्दयो,
घ्रा(घा)तस्तीर्थपथे[२०] सुधीरिति वदेद् वाक्यं न मर्मश्रयम्[२१] ॥१५॥

अथ मर्मोक्तिः

हत्याकारक रे ! परस्वममितं[२२] पार्श्वे तवाऽस्ति स्थितं,
पड्क्ति नाऽर्हसि रेऽमुकोऽपरिमितो[२३] मन्तुः कृतोऽस्ति त्वया ।
न स्वं वेत्सि धृतस्तदा नटविटान्तःस्थश्चरन् विक्रिया-
-मीदृक्षं कलहेऽपि तीर्थपथिकैर्वाच्यं न मर्माश्रयम् ॥१६॥

---

१५. जिह्वेन्द्रियजेता । १६. सोस । १७. मोहनी फेडवा थिकी । १८. सविनयम् । १९. उग्र(ग्रं) शठो-धूर्तः । २०. खाटकी । २१. तीर्थमार्गि जातु पुरुष एहवूं वचन न बोलइ । २२. परेषां स्वं-द्रव्यम् । २३. अमुक-एक तइं मन्तु-अपराध कीधु ।

* 'रे'कारोऽसभ्यवचने कथं प्रयुज्यते तद् दर्शयति – दुर्वाक्य-रिः(रे) ।

पुनर्गालिः

अक्षिस्फोट भुवास हा हत लपत् तुण्डोऽन्त्यजः कीदृशः,
शूल्यामस्य मुखे पुरीष-रजसी क्षिप्त्वाऽर्द्धचन्द्रं[२४] कुरु ।
कुष्टिन् ! पद्दक ! गर्दभान्ध ! बधिरो भङ्क्ष्यामि वक्त्रं पदौ,
हस्तौ दन्तचयं म्रियस्व निपुणैर्वाच्यं न तीर्थाध्वनि ॥१७॥

शूली-सूचनात् शूलीक्षेपणार्हः । तथा १५-१७ काव्ययोर्गाली(लि)पद्धतिः सूचिता ।[२५] नोक्तियुक्तिर्विलोक्या ।

एकेनाऽपि पुरा नृशंसवचसा प्रोक्तेन शोश्रूयते,
जन्माऽवाप्य भवान्तरे शुभकुले पुत्रेण मात्राऽपि च ।
शूलीक्षेपण-हस्तकर्त्तनविपत् प्राप्ता महादारुणा,
धर्मिष्ठेन नरेण कर्णकटुका गालिर्न देया तंतः ॥१८॥

पापारम्भपराः सुशीलविकला अप्रासुकाहारिणो,
दुर्दान्ताः कुटिलाः कुतूहलरता लोकप्रवाहेरिताः ।
ये सप्तव्यसनाभिभूतमनसस्तीर्थाध्वसञ्चारिणः,
स्तोकास्तोकतृणाद्यदत्तहरणास्ते दीर्घसंसारिणः ॥१९॥

पैशुन्यं व्यवसायकेलिपरता पाश्चात्यचिन्ता हठा-
ऽहङ्कारेण परापवादवदनं मौढ्यं परद्रोहणम् ।
रौद्रध्यान-परोपहासकरणं सावज्ञं[२६]निर्भर्त्सनं,
यात्रायामिति वर्जनीयमपरं प्रायः प्रमीलादिकम् ॥२०॥ तथा-

स्वस्थाने जिनगेह-पौषधगृहे कारापणं किञ्चन-
पूर्वं तत्सकलं विधेयमचलं यात्रास्थितिं जानता ।
पश्चान्मारिनिवारणं वितनुते जीवावनं शौनिकात्
प्रस्थानं कृतमङ्गलः सुशकुनैः कुर्यात् पुनः सद्दिने ॥२१॥

देव-ज्ञान-धनस्य साधिकृतिना स्वस्मिन् परस्मिन्नृणं[२७],
त्याज्यं यन्(द्) नरकार्त्तिकारणमिदं स्नात्रं च देवालये[२८] ।

---

२४. अद्धर्चन्द्रं - गल्लहत्थु । २५. ए बिहुं काव्यनइं विषइ उक्तिनी युक्ति न जोवी । २६. अवज्ञा सहित । २७. ऋणम् । २८. देवालये स्नात्रं निर्माप्य ।

निर्माप्योरुमुदा[२९] वरध्वजपटो देयो विरोधी पुनः,
क्षन्तव्यो बहुलक्षमागुणभृता यात्रा ततस्तन्यते ॥२२॥
यात्रारम्भदिने प्रलेहलवणं[३०] त्याज्यं पयो[३१] भोजने,
सन्तोष्यः स्वजनव्रजः सुवचनैर्दानैश्च वर्ज्यः कलिः ।
पत्नी पुष्पवती[३२] द्विसूतकदिनं[३३] नभ्राडकालोऽधमो[३४][३५]
हृष्टः[३६] सृष्टवराशनः[३७] कृतजिनाद्यर्च्य(र्च)–प्रणामश्चरेत् ॥२३॥
सिक्प्रक्षालन[३८]–केलिनिर्मिति–नखोत्तारादि मेधाविना
स्नानं तैलखलिप्लुतं[३९] च शिरसः सन्दर्भणं[४०] मैथुनं,
नक्षत्र–ग्रहयोग–वार–तिथिमच्चन्द्रोदयादिक्रमान्(द)
नानाशुद्धियुते मुहूर्तदिवसे त्याज्यं प्रयत्नात् पुनः ॥२४॥
भुक्त्वा क्षिप्रमथीति[४१] तैलसहितं पिण्याकमेवाऽथवा[४२],
गन्तव्यं विमलाचले शुभधिया द्रव्यं न चेत् पुष्कलम् ।
विज्ञेयो गृहमेधिनां तनुधियां गर्भस्य मासोऽन्यथा,
सङ्क्षेपेण सविस्तरेण यदि वा यात्रा विधेया ततः ॥२५॥
तिर्यग्नारकयोर्गतिद्वय–विपद्व्रातै[४३]र्भवी मुच्यते,
श्रीसिद्धाचलयात्रया फलमिदं प्रायेण साधारणम् ।
ये त्वत्यन्तविवेकिनो ज़प–तपो–दानादिधर्मे रता–
स्तीर्थेऽस्मिन् सुखमाप्स्यतेऽतिविपुलं[४४] तैर्वेत्ति तद् बोधिदः[४५] ॥२६॥
अर्हद्भक्तिरतोत्तमर्ण[४६A]बलिना प्राप्ताऽधमर्णान्तिके[४६B],
लभ्यं[४७] बह्वपि तीर्थवर्त्मनि बलाद् याच्यं न भूयो रिपुम् ।

---

२९. उरु–प्रौढः । ३०. स्वादार्थं लवणम् चाटवा सरीखूं अवलेही प्रमुख वस्तु चाटइ नहीं । लवण आस्वा[द]इ नहीं । ३१. भोजने–भोजनविषये पयो–दुग्धम् । ३२. रजस्वला । ३३. बि दिहाड(डां) सूतिकनां । बि सूतिक–वृद्धि–क्षयनां । ३४. वर्षाकालि मुहूर्त न लेवूं । ३५. अधम पु. साथिइं न लेवुं । अथवा अधम दिहाडइ मुहूर्त न करिवूं । ३६. हर्षसहित जइवूं । ३७. सृष्टि–नीपजावूं – वारु अशन ते जिमी चालवूं । ३८. वस्त्रप्रक्षालन । ३९. तेल खलिइं नाहवूं । ४०. माथानूं गूंथवूं । ४१. खीच । शाकमात्रम् । ४२. पिण्याक ढोकलूं । ४३. ए बिहुं गतिनी आपदानुं व्रात–समूह । ४४. पामस्यइ । ४५. बोधिदः–तीर्थंकरो जानाति । ४६A. उत्तमः (मर्णः) लहिणीआत पुरिषिइं । ४६B. अधमर्णान्तिके–देणीआतनइं विषइ घणुइ अर्थ लहिणु हुंतु तीर्थमार्गनइं विषइ पराणइं मागइ नहीं । ४७. द्रव्यादिक लहिणूं ।

दृष्ट्वा जातु न दुष्टधीरपि तदा कार्या तथा द्रोहकः,
क्षन्तव्यो ग्रहवान् क्वचिच्च न भवेदाऽऽयव्ययालोकनात्[४८] ॥२७॥
दुःसाधर्मिक-हीन-दीन-गुणकृत्-प्राग् जीर्णचैत्योद्धृता-
वुद्योगो(द्युक्तो)[४९]ऽपि च बन्द(न्दि)मोचनचणः[५०] स्मेराननः[५१] कार्यकृत् ।
मार्गे धामनि धाम्नि देवभवने स्नात्र-ध्वजारोपणात्
पञ्चातोद्यसुशब्द[५२]ताण्डवमहोत्साहात् कृती सञ्चरेत् ॥२८॥
इक्षूणां ग्रहणं प्रविश्य कणशादानं परक्षेत्रके,
कुर्युर्दण्डकमोटनं च चणकोत्पाटं कणाम्बा[५३]ग्रहम् ।
ये कालिङ्ग-मतीर-नागलतिका-माकन्द[५४]-राजादनी-
मुख्यं चौरिकयेति लान्ति कुधियस्तेषां हि यात्रा वृथा ॥२९॥
मूलं गृञ्जन[५५]-भृङ्ग-बेर-बदरी वृक्षोद्भवं माक्षिकं,
ये जिह्वाविवशास्तथाऽन्यदपि यत् खादन्त्यखाद्यव्रजम् ।
निश्यश्नन्ति पिबन्त्यपेयमपि ये तोयं पटाशोधितं,
वस्त्राङ्गे क्षिपयन्ति मुत्कलजले तद्यात्रया किं फलम् ? ॥३०॥

अन्यच्च-

गच्छन्तः शकटव्रजे स्वशकटं मध्ये क्षिपेयुर्बलाद्,
ये निस्त्रिंशमनोरपारकलहं* पश्चान् मिथः कुर्वते ।
तेषां क्लिष्टहृदां सुतीर्थगमनं वैफल्यमापद्यते,
भूयः प्रत्युत[५६] पातकं बहुभवैर्दुर्वेद्यमास्कन्दति[५७] ॥३१॥

[अथ दुष्कलत्रोक्तिः(?)]

पुत्र्याः सम्प्रति पाणिपीडनमहः कार्योऽस्ति नोर्जस्वला[५८]
यूयं गो-महिषी-स्नुषाप्रसवनं द्रव्यव्ययो नः कुतः? ।
नग्नीभूय ददाति देवभवने को वैजयन्तीं बहि-
र्धर्मेणैव च [illegible](?) गाः[५९] स्वसदने बाला म्रियन्ते क्षुधा ॥३२॥

---

४८. आय-वरा(व्यया)नु जोणहरु किहींइं ग्रहिवाय नहीं - बन्धाइ नहीं । ४९. उजमाल हुइ । ५०. तत्परः । ५१. हर्षिइं करी विकसित मुख हुइ । ५२. पंचशब्दउं । ५३. कडब । ५४. अम्ब । ५५. गाजर । ५६. उपनूं । ५७. बांधइ । ५८. द्रव्य उपार्जवानइ ऊजमाल नहीं तुम्हे । ५९. गाइ धर्मिइं दिउ ।

* अनोरपार-अपार ।

मार्गश्चाऽपि मलिम्लुचादिभयकृद् यात्राक्षणः कोऽधुना ?
भिन्तेऽन्तः करपत्रवद् वहति चौकोर्त्तिमिहाऽऽसारिणीम्[६०] (?)।
उच्चाटैर्म्रुजालवत् परिवृता [६१]निष्कालखण्डा अहो !
पत्न्येत्थं विविधप्रकारवचसा गच्छन् नरो वार्यते ॥३३॥

तथा – सुतस्य लेखशालाकरणं[१], सुतायाः सीमन्तसमयः[२], पुत्रार्थे वैवाहिका आगन्तार[३], ऋणसम्बन्धिनः पीडयन्तः सन्ति[४], दायादा वणिक्[६२A]पुत्राश्च निरङ्कुशाः स्वच्छन्दं गृहसूत्रं विनाशयिष्यन्ति, ग्रन्थिकां च करिष्यन्ति[५], [६२B]अग्रेऽपि छुटितैः पट्टलैरागम्यमानमस्ति दन्तलालैर्ढिकलत्ताभ्यां सन्ति दिना नीयमानाः[६] कथमपि कथमपि दन्तानापीड्य कालोऽस्ति गृह्यमाणः[७] मत्तो वणिक्(ग) इति कर्चरीपर्पटिकां [६३]कुर्वाणोऽस्ति कुत्राऽप्यऽस्य न क्षात्रं फावितं इति पिशुनप्रवेशो भविष्यति, युष्माकं स्मरति यात्रा, इत्यादि बहुधा युक्तिभिर्यात्रानिषेधकर्त्री कुकलत्रोक्तिः ।

अतः–पूर्वं तावदगारबन्धनमयं हातुं न शाशक्यते,
यात्रार्थं यदि साहसेन महता तत्याज तत् तत् तदा[६४] ।
अज्ञैः कृत्रिमकीर्त्तिहर्षधरणान् मूल्यातिगं दुर्लभं,
तत् पुण्यं बटु–भट्टचाटुवचनैर्हा ! किं मुधा हार्यते[६५] ॥३४॥
पूर्वं श्रीभरतेश–चक्रिसगरौ श्रीनैषधो[६६] रामराट्,
पुण्यश्लोक[६७] युधिष्ठिरो नरपतिः श्रीश्रेणिकः सम्प्रतिः ।
कीर्त्तिः स्फूर्तिमती निगर्वविदुषा स्वश्रेयसे विक्रमा–
–दित्यक्ष्माप–कुमारपालनृपती एषां पुनः कार्यते[६८][६९] ॥३५॥
श्रेयांसाख्यकुमाररत्न–मदना आनन्द–कामादयः,
श्राद्धा जावडि(ड)–साजणाभडवराः सान्तू(न्तुः)तथा वाग्भटः ।

---

६०. करवत । च–पुनः ओकोर्तिः – घरनी चिन्ता रूपिणा सारणि वहइ छइ । ६१. निकाल जाला गुछउ (?) ६२A. वाणुत्र । ६२B. ते कुटुंबी वाणत्र साथिइं छूटे पाटले विटवूं । ६३. कचरकूटि करइ छइ । ६४. तद् तद् अगारबन्धनं यदि महता साहसेन तत्याज । ६५. अहंकारपरिहरणे उपायमाह । ६६. नैषधः–नलराजा । ६७. पुण्य कहीइ–पवित्र, श्लोक कहीइ–कीर्त्ति जेहनी । ६८. एहनी कीर्त्ति करावीइ । ६९. जीवदया गुण वेलडी, रोपी रिसहजिर्णिद । श्रावककुलि मंडषि चडी, सींची कुमरनरिंदि । चित्रकृत् काव्यकर्त्ता च कु० (कुमारपालः?)

आभू-आम्बड-वस्तुपाल-समराः सारङ्ग-साचाभिधौ,
भीमः सालिग-पेथडाख्य जगडू एषां यशः ख्यायते ॥३६॥
सञ्जावान् हृदि कोऽपि सश्रुतिशिराः श्रीवन्द्यसद्देशनां[७०],
कामं श्रोष्यति चेत् तदा जिनवरादिष्टं गरिष्ठं गुणैः ।
श्रीशत्रुञ्जय-रैवताचलयुगं तीर्थोत्तमं ज्ञास्यति,
संसारागमरोधकं प्रति सतोऽ[७१]स्त्यन्यत् पुनर्नेदृशम् ॥३७॥
ये कुर्वन्ति निरङ्कुशा अतिमदोन्मत्ताश्च तीर्थे पर-
स्त्रीणां वक्षसि हस्त-वाहन-वपुःसंश्लेषजा विक्रियाः ।
तेषां पातकिनां कुलक्षणवतां स्वच्छन्दसञ्चारिणां
कल्पान्तेऽपि सुनिन्द्यदुर्गतिगमादुद्वर्त्तनं दूरतः ॥३८॥
सङ्घं वर्त्मनि ये तुदन्ति[७२] मलिना रात्रौ तथा छद्मना,
तस्याऽऽछिद्य बलेन चोरचरटाः कुप्यादि गृह्णन्ति ये ।
पच्यन्ते सुचिरं घनाघनिचिता[७३] अत्यन्तपीडासहाः,
कुम्भीपाकगताः कुकर्मवशगास्ते शोचनीया बुधैः ॥३९॥
शेषांहःकणतः - शुभाः सगरजाः[७४] सार्थेन सर्वे मृता
हा हा ! षष्टिसहस्रकाः कटुरसो दुष्कर्मणां कीदृशः ?।
यैः शत्रुञ्जयतीर्थवर्त्मनि पुरा सङ्घश्चलन् लुण्टित-
स्तत्पापेन चिरोप[भु]क्तमशुभं वाचां न यद् गोचरम् ॥४०॥
कर्त्रेदं न यथा तथा शुचिधिया धर्मार्थिनाऽङ्गीठकं,
बह्वर्थे यदि तत्करोति [च] तदा शुद्धिर्विधेयैधसाम्[७५] ।
कीटोद्भेदि[७६]निकादिजन्तुनिलयं काष्ठादि न ज्वालयेद्,
भाव्यं बादर-सूक्ष्मसर्वभविनां रक्षापरेणाऽध्वनि ॥४१॥
तथा - वेश्यादर्शनमात्रतो बत नृणां स्नानेन शुद्धिर्मता,
जल्पन्तीति कुलिङ्गिनोऽपि दमिनां वाक्येषु किं भण्यते ?।
तस्मात् तीर्थपथे त्यजन्तु भविका वाराङ्गनानर्त्तनं,
चित्तं मन्मथमिश्रितं भवति तद् यात्राफलं हन्यते ॥४२॥

---

७०. चेद्-यदि कोऽपि सञ्जावान्-पुमान् श्रीवन्द्यसद्देशनां श्रोष्यति । ७१. सत्पुरुष प्रतिइं एहवूं अनेरूं को तीर्थ न प्रवर्त्तइ । ७२. तुदन्ति-पीडयन्ति । ७३. अघनिचिताः-पापिइं भर्या । ७४. सगरचक्रिजाः । ७५. इंधणनी । ७६. ऊदेही ।

जन्तू रज्यति रूपदर्शनरसाद् जागर्ति कामः पुनः
पुंश्चिह्नं श्रवति क्रमादशुचिता सङ्गीतकालोकनात्[७७] ।
इत्येनः प्रसरीसरीति[७८] विविधं प्रायेण धर्मच्छलात्,
सङ्घे वारवधूनिमन्त्रणमहो ! तस्माद्(न्)न युक्तं खलु ॥४३॥[७९]

कार्यं नैव निजप्रियादिभिरपि स्त्रीभिश्च काभिः समं,
हास्यं मोहविवर्द्धनं समदृशा[८०] यात्राविधिं तन्वता ।
स्थातव्यं स्थिरमुद्रया चपलतात्यागेन पुण्यात्मना,
तीर्थस्योत्कलिकोपरायणधिया[८१] सिद्धिं परामिच्छता ॥४४॥

आदिशब्दात् — 'प्रजावती'-मातुलपत्नी[८२] 'श्याली'-श्यालकपत्नीप्रभृति-ग्रहणम् । तथा ऽन्याभिः सुरूप-नवयौवनोन्मदाभिः साद्भुतशृङ्गाराभिर्विलासिनीभि-र्बालरण्डाभिः, कुलटादिभिः सार्द्धम् ।

आरम्भत्यजनेन पर्वदिवसे कार्यं न साधर्मिक-
वात्सल्यं यदवारितान्नपचनं[८३] नाऽधित्यकायां[८४] शुभम् ।
वस्त्रापूतजलेन धावनमिदं वस्त्रव्रजस्योचितं,
यात्रायां त्रसजन्तुवारिणि पयःपानं न चोक्षां वरम् ॥४५॥[८५]

ये तीर्थे मल-मूत्र-मैथुनरताः स्तब्धा मिथो द्वेषिण-
स्तानाश्लिष्यति वज्रलेपसदृशं पापं महादुःखदम् ।
तेनैनोभिरभीरुणा यतनया त्याज्या दुराशातना,
यस्माद् वाञ्छितशर्मसन्ततिरसास्वादो भवेत् सर्वदा ॥४६॥

वस्त्रापूतजले नदीप्रभृतिके स्नानां-शुकक्षालनाद्
वर्षाचङ्क्रमणेन जन्तुनिवहारम्भेण नानाविधम् ।

---

७७. वेशानां नाटक जोवाथकी । ७८. एनः-पापम् । एनः कहीइ पाप, प्रकर्षेण प्रसरतीति प्रसरीसरीति । ७९. वेशावधू । ८०. समा दृग् यस्य । ८१. तीर्थनी उत्कर्षता । ८२. भाईनी कलत्र । ८३. ये अवारीतूं अंन(अन्न) पचवूं चीटणी ऊपरि पय शुभ न कहीइ (?) ८४. अधित्यकायां कहीइ पर्वत ऊपली भुंइ । तिंहा अवारीनूं अन्न पचीइ नहीं । ८५. [चोक्खुं?] एनः-पातकम् ।

मिथ्याधर्ममतिः प्रभूतदुरितं चक्रेऽन्यतीर्थे जनः,
सर्वं शुद्ध्यति तद् यथोक्तविधिना जैनेन्द्रतीर्थे रयात्[८६] ॥४७॥

कृत्वा पाण्डुसुताः[८७] स्वगोत्रकदनं तीर्थस्य माहात्म्यतः,
सिध्यन्ति स्म तपो विधाय नचिरात्[८८] शत्रुञ्जये सव्रताः ।
अत्राऽन्येऽपि च कण्डुराट् प्रभृतयः सिद्धाः महत्पातकाद्,
ब्रूमस्तस्य कियत् स्वरूपमपरं तीर्थाधिपस्याऽऽश्रयात् ॥४८॥

बाल-स्त्री-वधबन्धनादिजनितं कर्माऽशुभं चिक्कणं,
प्राप्नोति प्रलयं जले लवणवत् तीर्थस्य सेवावशात् ।
दुष्टं चाक्रिकपोतकश्मलनिभं[८९] तीर्थेऽत्र यद् यत् कृतं,
चीडीभूय लगेत् तदुत्थविपदां भूयश्चिकित्सा न हि[९०] ॥४९॥

धन्योऽसौ **धनपाल**पण्डितवरः **श्रीब्रह्मवंशोद्भवः**,
श्राद्धत्वेन न यस्य कोऽपि करणिः **श्रीभोज**राज्येऽभवत् ।
प्रान्ते येन कृता चिरं गिरिवरे सेवा तथा यत्कृता-
-ऽद्यापि **श्रीऋषभार्हतो** निरुपमा **पञ्चाशिका** वर्त्तते ॥५०॥

प्राग् **नन्दीअक**धाम्नि[९१] **नन्दिवर्द्धन**नृपप्रासादजीर्णोद्धृतिं,
यश्चक्रे किल **मञ्जरीं तिलकतं**[९२] **श्चम्पूकथां** सप्रथाम् ।[९३]
जिग्ये येन च नास्तिको[९४] गुरुयतः(तिः) **खण्डप्रशस्तौ** यश-
स्तत्त्वज्ञं **धनपालपण्डितपतिं** तं वर्णयामः कियत् ॥५०॥

सिद्धान्तश्रुतिजागरूकहृदयः श्रीशासनोद्योतकः,
शुद्धध्यानपरो यथाविधि बुधः श्रीसिद्धक्षेत्रं प्रति ।

---

८६. रयात्-वेगात् । ८७. पाण्डवइं कुंर हण्या ते पीत्राई भाई । ८८. न चिरात् इति शीघ्रम् । ८९. पईडा मांहिल्यूं वस्त्र । ९०. ते पापथी ऊपनी आपदा ते चीड थइनइ लागइ । ते आपदानइं चिकित्सा न कराइ एहवीइ आपदा प्रलय थाइ । ९१. पूर्विइ नांदीआ गामनइं धाम्नि कहीइ-ठामी एतलइ नांदीआ गामनइ ठामि । ९२. जेणइ धनपालइ "तिलकमंजरी" ग्रंथ कीयु । तिलक आगलि मंजरी जोडीइ एटलई "तिलकमंजरी" नाम थाइ । ते चम्पूकथा कहीइ । तेह भणी(घणी?) गद्यबन्ध छइ । -ए बीजी पूंठी नु अर्थः । ९३. सप्रथां कहीइ विख्यात छइ । ९४. जेणइ नास्तिकनुं गुरु यति वेषधारी जीत्युं ।

सङ्घं सङ्घपतिः प्रकाशयति[९५] यो विश्वत्रयाह्लादकं,
सोऽर्हत्त्वं[९६] लभते नरामरमहद्राज्येन्दिरापूर्वकम्[९७] ॥५१॥

अथ सुकलत्रोक्तिः-

निन्द्यैर्भोगसुखैर्विपाककटुभिस्त्वं केन लोलुभ्यसे,
सन्तानादिसमस्तवस्तुनिचयं स्वप्नेन्द्रजालोपमम् ।
मत्वा कल्मषघातिनीं प्रिय ! कथं यात्रां न तंतन्यसे[९८],
इत्येवं सविवेकिनी सहचरी भर्त्तारमुत्साहयेत् ॥५२॥

तीर्थं पुष्पवती[९९] जडा स्पृशति चेत् तस्या महत्पातकं,
नित्यक्षेमकृते सुधीः शुचिवपुस्तीर्थं समारोहति ।
*अन्तःशल्यचयं कृती प्रकटयेद् यत्र प्रियालोरध-[१००]
-स्तीर्थाशातनभीरुणोपरि चितादाहो न कार्यः कदा ॥५३॥

मन्यन्ते क्षुरकर्मणा[१०१] स्वमधिकं ये मानयन्ति स्वयं,
भोगाद्यैहिककार्यसाधनकृते गृह्णन्ति चाऽभिग्रहम् ।
संस्कारं मृतकस्य चाऽस्त्रनयनं कुर्वन्ति तीर्थेऽर्हतां,
मिथ्यात्वं तदनेकधातिविषमं लोकोत्तरं त्यज्यताम् ॥५४॥

कुव्यापारि-कुठक्कुरा[१०२] अकरुणा ये देवलोकादयो,
देवार्थानुपजीवयन्त्यनयतः सङ्घातिरैग्राहकाः ।[१०३]
पापाः शश्वदभक्ष्यभक्षणरता उन्मार्गगास्तेन वै,
ते वारान् कति दुर्गतिप्रणयिनो[१०४] जानाति तत् केवली ॥५५॥

क्षुत्-तृट्बाधितखिन्नसाधु-श्रमणी-सत्क्षुल्लक-क्षुल्लिका-
शुश्रूषां विदधत् कुटुम्बनिचये निःसारसारां पुनः ।

---

९५. प्रकटयति । ९६. ते तीर्थंकरपणूं पामइ । ९७. मनुष्य-देवनी महाराज्यलक्ष्मीपूर्वक । ९८. कां [केम] नथी विस्तारतु । ९९. रजस्वला । १००. यत्र-तीर्थेऽधः उपर्यपि [च] चितादाहो न कार्यः, कस्य ? प्रियालोः-वल्लभस्य । १०१. ये आपण पूं क्षुरकर्मिइं करी अधिकूं फल (फूल) मानइ । १०२. कुठाकुर । १०३. संघनी रै-लक्ष्मी । १०४. दुर्गतिना वल्लभ ।

* 'प्रियालु-रायणवृक्ष, तेनी नीचे पंडितजन पोताना मनना शल्य-समूह प्रगट करे' – एम अर्थ भासे छे ।

गव्य-श्वा[१०५]-वृष-सेरभी[१०६]-करभकस्तोमस्य चिन्तां वहन्
सङ्क्वेशश्चलतीति तीर्थगमने दक्षः स यद् गीयते ॥५६॥
ये दामोदर[१०७]-कालमेघ[१०८]-शरभू[१०९]-सोमेश्वर[११०]-द्वारका
तीर्थं फल्गु[१११] सरस्वतीप्रभृतिकं कुर्वन्ति मिथ्यादृशः ।
केचिद् **यक्षकपर्दि**पूजनरताः **श्रीअम्बिकाया**स्तथा,
नेत्थं शाश्वतसम्पदे विधिरयं श्रीजैनयात्रार्थिनाम् ॥५७॥
वासो[११२] मोदकसिंहकेसरवरेषूच्चैश्चतुर्जातकैः[११३],
सद्दुग्धे[११४] तव राजवर्य! सितया रत्नैर्यथा काञ्चने ।
तद्वत् पुण्यभरेण वित्तनिचये योगः प्रशस्तोऽङ्गिना-
मेवं[११५] तीर्थवरे विशेषसुकृतं श्रीसर्ववित्पूजया ॥५८॥
कोऽहं ? कस्य **कलत्र**-पुत्र-सदनं ? कस्येन्दिराविस्तरो ?,
जीवानां मृगतृष्णिकेव सकला भ्रान्तिर्विदित्वेति यः ।
श्रीतीर्थद्वितयादि-नेमिजिनपौ[११६] देवौ ववन्दे नहि,
दग्धः सोऽपि करे गतोऽपि पृथुको हाहा! मुधा तज्जनुः[११७] ॥५९॥
सद्वाचंयमपञ्चकोटिसहितश्चैत्रीयराकातिथौ[११८],
प्राक् सिद्धोऽजनि[११९] पुण्डरीकगणभृत् ख्यातस्ततोऽयं गिरिः ।
नाम्ना **पर्वतपुण्डरीक** इति यस्तत्रोपवासं तदा,
निष्पानं विदधाति शुद्धमनसा त्याज्यः स उग्रैनसा[१२०] ॥६०॥
निष्पानानि गुरोर्गिरा परिहृते स(आ?)हार-नि(नी)हारयोः,
स्पष्टः षष्टतपांसि सप्त कुरुते शत्रुञ्जयस्योपरि ।
धर्मध्यानपरोऽष्टमाष्टमयुतान्येतन्महातीर्थभू-[१२१][१२२]
-माहात्म्येन तृतीयजन्मनि कृती स प्राप्नुयान्(द्) निर्वृतिम् ॥६१॥

---

१०५. घोडी । १०६. भिंसि । १०७. कृष्ण । १०८. गिरनारि कालमेघ नामिइ क्षेत्रपाल । १०९. ब्रह्मा [कार्त्तिकेयः?] ११०. [सोमनाथ-शिवः?] १११. फल्गु' इति असार । ११२. वास हुइ । ११३. जिम सिंहकेसरा मोदकनइं विषइ जाइफल-जावित्री-तज-तमालपत्र-एणइ चतुर्जातकिइ करी । ११४. यथा सद्-उत्तम दुग्धे तव राजशर्करा । ११५. एणइ प्रकारिइं वर-प्रधान तीर्थनइं विषइ श्रीसर्वज्ञनी पूजाइं करी विशेष सुकृत हुइ । ११६. श्रीतीर्थद्वितये आदि-नेमिजिनपौ । ११७. जन्म । ११८. सद् (सन्तः) - उत्तमा ये वाचंयमाः । ११९. प्रथमसिद्धोऽजनि । १२०. उग्रपापेण । १२१. एहवा छठ आठमु अट्ठम सहित । १२२. तीर्थभूमिका ।

भो भो ! भव्याश्चेत् संसारात् पन्तातङ्कादुद्विग्ना
भूयो नित्योद्योते नित्याह्लादे मोक्षे संविग्नाः ।
तर्हीदानीं व्यापद्हर्त्रीं(र्त्रीं)[१२३] सद्रीत्या सान्द्रामोदाः[१२४],
श्रेयःकर्त्रीं श्रीसिद्धक्षेत्रे यात्रां कुर्वन्तु द्राक् ॥६२॥ कामक्रीडाच्छन्दः ॥
उत्तुङ्गभृङ्गचटुलध्वजशोभितेषु[१२५], देवालयेषु जिनबिम्बविभूषितेषु ।
सुस्यन्दनेषु[१२६] वरचामरवीजितेषु[१२७], सिद्धाचले चलति सङ्घपतिः
ससङ्घः ॥६३॥ [वसन्त०]
स्थाने स्थाने स्नात्रविस्तारकारी वाद्यध्वानैर्गीतगानैश्च नित्यम् ।
मार्गे शोभां शासनस्य प्रकुर्वन्, सङ्घाध्यक्षो[१२८] याति पारं भवस्य ॥६४॥
[शालिनी]
वात्सल्य-सङ्घपरिधापनिके विधत्ते, मानोचितं[१२९] च जिनशासनगायनानाम् ।
चन्द्रावतंसनृप-कार्त्तिकश्रेष्ठितुल्यः, श्राद्धो भवेत् सुगुरुशिक्षितसद्विवेकः ॥६५॥
[वसन्त०]
ज्ञात्वा सङ्घं चलन्तं तदनु सरभसा धाविता धाविता ये,
धाटीवाहा इवाऽज्ञा विकशि(सि)तवदना यान्ति यात्रामिषेण ।
दीक्षातत्त्वानभिज्ञा[१३०] विविधजनसंमूह[१३१]प्रवाहे वहन्तः,
साध्वाभासा[१३२]श्चिरं ते भवजलधिगता दुःखभाजो भवन्ति ॥६६॥
रात्रौ चङ्क्रमणं तुषार-महिका-प्रोज्झेहिकानां[१३३] हरित्-
कायानां च विराधना घनघना[१३४] स्पर्शस्तरूणां बहुः ।
ताः पञ्चाऽपि विराधिताः समितयः स्युर्गुप्तयस्ता अपि,
साधूनां न चरित्रपालनमिदं सङ्घस्य सार्थे तथा ॥६७॥
वेलायां प्रतिलेखना न विधिना नाऽऽवश्यकं तादृशं,
शुद्धिः क्वाऽपि न चाऽन्नपानविषया नोपाश्रयः शुद्धिमान् ।

---

१२३. हन्त्री (?) । १२४. आनन्द पाम्या । १२५. चपल । १२६. स्यन्दनेषु-रथेषु । १२७. वारुर(?) उपरि देवाला बियास्या छइ तेह भणी चामर ढलाइ । १२८. सङ्घपतिः । १२९. ये (जेने) जेहवूं मान पोसाइ । १३०. दीक्षानूं(नुं) जे न जाणइ, एहवा जे पासत्था-उसन्ना (ओसन्न) प्रमुखद्रव्यलिङ्गी । १३१. अनेरा जे पामरलोक, तेहनी परिइं । १३२. असत्य-खोटा साधु ते साध्वाभास कहीइ । १३३. उजेही । १३४. घणी घणी विराधना ।

स्त्रीसङ्घट्टपरम्परोपकरणादेर्मोचनं वाहने,
बीजादिक्रमणं प्रसून-फल-पत्रा-ऽऽमान्न[१३५]पूर्णेऽनसि[१३६] ॥६८॥

इत्थं दोषशतोद्भवेन यतिनां पिण्डोंऽहसा भार्यते,
तेनाऽऽद्यं व्रतिनां मतं भगवती दीक्षैव तीर्थं गुरु ।
बाह्याडम्बरमोहिता मदमिताः[१३७] प्रायो घनाः साम्प्रतं,
हा हूता बहुभिक्षवः कृशधियस्तेषां क्व यात्राफलम् ? ॥६९॥

लुब्धाः स्तब्धा लिङ्गिनस्तीर्थशृङ्गे, पूज्यां(जां) मिथ्या स्वस्य ये स्वापतेयैः[१३८]।
पूर्वाचार्याकारितां[१३९] कारयेयु[१४०]-रात्मानं ते दुर्गतिं ही नयन्ति ॥७०॥[शालिनी]

पात्रीभूय गृहस्थतारणमिषाद् दानं न तीर्थोपरि,
ग्राह्यं संयमिनाऽतिदुर्जरमिदं पानान्नवस्त्रादिकम् ।
यात्रैषा विशदा कृता गुरुतरश्रेयःप्रदात्री ततो,
राग-द्वेषं(ष)जयाद् यथाविधि जना अस्यां त्वरन्तां[१४१] मुदा ॥७१॥

आचाम्लादितपःक्रियापरतया **श्रीहेमसूरिर्यथा**,
यात्रायां किल **सिद्धराज**नृपतेः सार्थे चचालाऽऽग्रहात् ।
इत्थं कार्यविशेषतो यदि मुनिः सङ्घे चरेज्जातुचिद्,
यात्रा सैव तु पारलौकिकफला तन्निर्जरायै मता ॥७२॥

अक्षो-दञ्चक कम्बलो-[१४२]र्णवसन[१४३]-प्रत्यग्रपात्रा[१४४]दिक-
मूर्च्छा-मेलन-लोभ-हास्य-विकथा-चापल्यमुक्तो यतिः ।
सत्कारादिगुरुत्वगारवजयी धर्मोपदेशोद्यतः,
क्षुत्-तृष्णा-तप-शीतकष्टसहनः सङ्घे निरीहश्चरेत् ॥७३॥

यात्रातो निजगेहमागतवता श्राद्धेन साधर्मिक-
वात्सल्यं जिन-साधुपूजनविधिः कार्यः स्वशक्त्या पुनः ।
निर्ग्रन्थस्य यथा तपः प्रविततं[१४५] मुख्यं तथा गेहिनो,
दानं मुख्यतया जगाद भगवानित्थं विभाव्यं सता ॥७४॥

---

१३५. [आमान्न]-अपक्वान्न । १३६. अनसि-शकटे । १३७. मद पाम्या । १३८. आणइ खोटइ स्वापतेयं कहीइ द्रव्यिइं करी ये द्रव्यलिङ्गी पूज्यां, पूजा अथवा प्रतिमा । १३९. पूर्वाचार्यिइं अणकरावी । १४०. करावइ । १४१. ऊतावला थाउ । १४२. जाडु काम्बलु । १४३. झीणी काम्बली । १४४. नवां पात्रां । १४५. विख्यातम् ।

इत्थं शुद्धपरोपकारमतिना मार्गानुसारान्[१४६]मया,
श्रीशत्रुञ्जय-रैवताचलमहत्तीर्थद्वयोल्लासिनी ।
यात्रासप्ततिका विवेकि-सरलप्राणिप्रिया भाषिता,
भाषा[६]-ग्ला[१]-विषु[५]-भू[१]समासु[१४७] रचिता भूयात् सतां प्रीतये ॥७५॥
साधुमेरुगणिपण्डितमिश्रा[१४८] दूरतः कृतकुमार्गतमिश्राः[१४९] ।
उक्तवन्त इति तीर्थविचारं, भावतो हृदि विदन्तु विनेयाः ॥७६॥ [उपचित्रा]

॥ इति यात्रासप्ततिका समाप्ता ॥

॥ मुग्धशिष्योपयोगिनी ॥छा॥

कृत्वा पापसहस्राणि, हत्वा जन्तुशतानि च ।
इदं तीर्थं समासाद्य, तिर्यञ्चोऽपि शिवं गताः ॥१॥

मयूर-सर्प-सिंहाद्या हिंस्रा अप्यत्र पर्वते ।
सिद्धाः सेत्स्यन्ति सिद्धयन्ति, प्राणिनो जिनदर्शनात् ॥२॥

एकैकस्मिन् पदे दत्ते, शत्रुञ्जयगिरं(रिं)प्रति ।
भवकोटिसहस्रेभ्यः, पातकेभ्यः प्रमुच्यते ॥३॥

वज्रलेपायितैः पापै-र्जन्तुरत्यन्तदुःखभाग् ।
तावद् यावन्न सिद्धाद्रि-मधिरुह्य जिनं नमेत् ॥४॥

के रोगाः? कानि कष्टानि ?, कानि पापानि भूतले ?।
पुरतः पुण्डरीकाद्रे-स्तमांसीव विवस्वतः ॥५॥

ऋषिहत्यादिभिः पापै-र्भवकोटिकृतैरपि ।
मुच्यते दर्शनादस्य, स्पर्शनात् तु किमुच्यते ? ॥६॥

लावणे सागरे बिन्दु-सङ्ख्यया मीयते जलम् ।
न चाऽत्र सङ्ख्या सिद्धानां, भूत-भवत्-भविष्यताम् ॥७॥

---

१४६. मार्गानुसारात् - श्राद्धानामयं मार्गः । १४७. [भाषा] ग्लौः-चन्द्रः, इषु-पञ्च, भूः-पृथ्वी - इति संवत्सरेषु । भू१-इषु५-ग्लौः-चन्द्रः१-भाषा६ - एतलइ संवत् १५१६ वर्षे । १४८. पण्डितमिश्राः पूज्याः । १४९. दूरतः कृतं कुमार्गतमिश्रं(सं)-अन्धकारम् [यै स्ते] ।

शत्रुञ्जयसमं तीर्थं, नाऽस्ति त्रिजगतीतले ।
यस्य दर्शनमात्रेऽपि, श्रीवत्सोऽगात् परं पदम् ॥८॥

तीर्थानामुत्तमं तीर्थं, नगानामुत्तमो नगः ।
क्षेत्राणामुत्तमं क्षेत्रं, सिद्धाद्रिः श्रीजिनैर्मतः ॥९॥

आरम्भाणां निवृत्तिर्द्रविणसफलता सङ्घवात्सल्यमुच्चै-
र्नैर्मल्यं दर्शनस्य प्रणयिजनहितं[१५७] जीर्णचैत्यादिकृत्यम् ।
तीर्थो(र्थौ)न्नत्यं जिनवचनकृतिस्तीर्थसत्कर्मकृत्त्वं(?),
सिद्ध(द्धे)रासन्नभावः सुरन(व)रपदवी तीर्थयात्राफलानि ॥१०॥

छट्ठेणं भत्तेणं, अपाणएणं तु सत्त स(ज)त्ताए ।
जो कुणई सित्तुंजे, सो तइयभवे लहइ सिद्धिम् ॥११॥
[शत्रुञ्जय लघुकल्प, गा.१८]

C/o. सुंदरबा आराधना भवन
रांदेर रोड, अडाजण
सूरत-७

*

१५०. सप्रेमजनम् – स्वजनमित्राद्यम् ।

विजयदानसूरि पुण्यरास

— सं. गणि सुयशचन्द्रविजय
मुनि सुजसचन्द्रविजय

आ.श्री हेमविमलसूरिजी म. तपागच्छना प्रभावक पुरुष हता । तेमनी परम्परामां आ. श्रीआनन्दविमलसूरि पण हेमविमलसूरिजीनी जेम ज प्रभावक थया। तेमणे सं. १५८२ मां क्रियोद्धार कर्यो हतो । तेमनाथी तपागच्छमां ३ परम्पराओ चाली (१) विजय परम्परा – जेमां विजयदानसूरि, विजयहीरसूरि विगेरे प्रभावको थया (२) सागरपरम्परा – जेमां उपा. विद्यासागर, पं. सहजसागरादि महापुरुषो थया (३) विमल परम्परा – जेमां पं. ऋद्धिविमल, आ. ज्ञानविमलसूरि विगेरे महामुनिओ थया। प्रस्तुत कृतिमां विजयपरम्पराना प्रभावक आचार्य विजयदानसूरिजीना जीवनचरित्रनी वातो वर्णवाई छे. ।

रास परिचय :

अहीं कृतिना मंगलाचरणमां कविए मा सरस्वतिने नमस्कार करवारूप मंगल आलेखी दूहाबद्ध पद्यद्वारा आदिनाथ प्रभुने तथा वीरप्रभुने नमस्कार करता काव्यनुं मङ्गलाचरण प्रयोजे छे । आ नमस्कारनुं वर्णन पू. धर्मदास गणि कृत उपदेश-माळा प्रकरणना "जगचूडामणि... पद्यना पद्यानुवादरूपे होई विशेष ध्यानार्ह छे । अहींथी ज काव्यनी प्रथम ढाळनी शरुआत थाय छे । चोपाई छन्दमां रचायेली काव्यनी आ ढाळमां कविए सौ प्रथम तीर्थङ्कर प्रभुना समवसरणनी वर्णना करी त्यारपछी अनुक्रमे प्रभु वीरना ११ गणधरोनी तेमज ४५ आगमोनी संक्षिप्तमां वर्णना करी छे । विशेषे आ वर्णन पद्योमांना देवदुन्दुभि, ध्वजदण्ड, चामर तथा पगथीयानी वर्णनानां पद्योमां कवि वडे कराएली उत्प्रेक्षा अतिसुन्दर छे । वळी वच्चे वच्चे कविए गणावेली ६४ इन्द्रनी तथा १४ पूर्वना माप अंगेनी गणतरी पण उल्लेखनीय छे ।

त्यारपछीनी काव्यनी बीजी ढाळ देशाख रागमां छे। आ ढाळमां मुख्यत्वे विजयदानसूरिजीनी परम्परानुं आलेखन करता कविए प्रभु वीरना प्रथम पट्टधर आर्य गौतमथी लई छेक आ श्री हेमविमलसूरि सुधीनी गुरुपरम्परानो टूंकमां चितार आपी प्रान्ते आ. श्रीआनन्दविमलसूरि तथा आ. श्रीविजयदान-सूरिजीना गुणवैभवने वर्णववा पूर्वक ढाळनुं समापन कर्युं छे ।

काव्यनी त्रीजी ढाळ विजयदानसूरिजीना जीवनचरित्रनी पहेली ढाळ छे ।

आ ढाळमां कविए सहु प्रथम गुरु भगवन्तना नगरादि सम्बन्धि वर्णनानो प्रारम्भ करता त्यांना प्राकृतिक सौन्दर्यनुं वर्णन कर्युं छे । त्यार पछी ते नगरना नामादिनुं, त्यांना आवासोनुं, श्रावकोनुं, चैत्योनुं, राज्याधिकारीओनुं तेमज लोकोनी सुखसमृद्धिनुं वर्णन कर्युं छे । खास आ ढाळमां नोंधाएली त्यांना आदिनाथ, पार्श्वनाथ तथा जीरावला प्रभुना प्रासादनी तेमज त्यांना राजा भाणनी राज्यसत्तानी विगत काव्यनी ऐतिहासिक सामग्री छे ।

सूरिजीना माता-पिता-वंश तेमज हेमविमलसूरिजी द्वारा विजयदानसूरिजीनी (दीक्षा माटे) मांगणी कर्यानी इतिहास सम्बन्धि केटलीक वातो चोथी ढाळनी सामग्री छे । जो के आ ढाळनां महत्तम पद्यो सामुद्रिक शास्त्रनी वर्णनाना जोई शकाय छे जेना परथी आपणने सामद्रिक शास्त्रनुं ज्ञान तो प्राप्त थाय ज छे साथे साथे कृतिकारना तद्विषयक ज्ञाननो पण परिचय प्राप्त थाय छे । कृतिनी पांचमी ढाळ विजयदानसूरिजीनी गुणवर्णनानी छे । खास तेमां तेमना ज्ञानदर्शन तथा चारित्रनी समृद्धिनी वातो आलेखाई छे । अहीं ढाळान्तमां कविए योगोद्वहन करवा पूर्वक अध्ययनादि करता मुनिश्री(विजयदानसूरिजी)ने पण्डित पद प्राप्त थयानी अगत्यनी वातो आलेखी छे ।

उलालाना रागमां गवाएली काव्यनी छठ्ठी ढाळमां कविए लोभादि चारे कषायोनुं स्वरूप आलेख्युं छे । कषायने वश थई जीवो केवां अकार्यो आचरे छे तेनुं वर्णन करता कवि जाणे मुनिश्री(विजयदानसूरिजी)ना चित्तमां रहेली (तत्कालीन साधु समाजमां प्रसरेली) व्रतशैथिल्य सम्बन्धि मनोव्यथानुं वर्णन करता होय तेवुं लागे छे । वळी ढाळना अन्तमां "प्रणमी पास जिणंद चारित्र हऊओ आणंद तथा धरीउ संवर सार, महाव्रत गुणभंडार" ए पदोना उपलक्षणथी पार्श्वनाथ प्रभुनी छायामां क्रियोद्धार कर्यानी विगतोनुं आडकतरी रीते आलेखन करी कवि पोतानी आगळनी वातनुं समर्थन करता होवानुं जोई शकाय छे । अहीं ढाळमां वर्णवायेली क्रियोद्धार सम्बन्धि विगत तेमज ढाळ पछीना दूहामां वर्णवायेली सं. १५८५मां मालवा-उज्जैनना बहादुरपुरमां व्यवहारीओ वडे कराएल महोत्सवमां विजयदानसूरिजीने आचार्यपद अपायानी विगत ऐतिहासिक दृष्टिए महत्त्वपूर्ण छे । जो के ढाळ पूर्वेना वस्तु छन्दमां कविए पदस्थापना अंगे जे चित्रकोटनो उल्लेख कर्यो छे ते शा कारणथी कर्यो छे ते अमने स्पष्ट थतुं नथी ।

सूरिजी परनी भक्तिथी प्रेराइने श्रावक-श्राविकाओए केवा उल्हासपूर्वक विजयदानसूरिजीनो पदमहोत्सव कर्यो तेनी वर्णना तो काव्यनी सातमी ढाळमां कराई

ज छे । साथे साथे आ पद महोत्सव प्रसंगे मुनि विमलदान (अन्य पण मुनिओ हशे)ने पण्डित पद अपायानी महत्त्वपूर्ण विगत पण नोंधाई छे । त्यारपछी विजयदानसूरिजीनी शिष्यसम्पदा वर्णवती नवमी ढाळ छे । अहीं कविए ढाळना शरुआतना पद्योमां राजविजय, विनीतसागर, विद्यासागर नामना सूरिजीना प्रमुख शिष्योनो गुणोल्लेख करवा पूर्वक परिचय आलेखी पछीनां पद्योमां गच्छाश्रित मुनिओना गुणोनुं तेमज सूरिजीना शेष शिष्योनो फक्त नामेल्लेख करी ढाळनुं समापन कर्युं छे । विशेषमां अहीं ढाळ पछीना वस्तु छन्दबद्ध पद्यमां आलेखाएली सूरिजीना ३२ पण्डितशिष्योनी तेमज ५०० जेटला अन्य साधु साध्वीना परिवारनी विगत ध्यानार्ह छे ।

रासनी १०मी तथा ११मी ढाळ तत्कालीन चैत्योना उल्लेखवाळी होवाथी महत्त्वपूर्ण छे । अहीं १०मी ढाळनां शरुआतनां पद्योमां कविए सोरठदेशना (प्रायः) वेरावळमां थयेल प्रतिष्ठा महोत्सवनो उल्लेख कर्यो छे । जो के ढाळनां २ पद्यो त्रूटक होवाथी कवि चोक्कस शुं दर्शावे छे ए स्पष्ट थतु नथी, परन्तु वेदिका मण्डपनी तेमज गन्धोदकथी भरेला कळशोथी न्हवण कराव्यानी विगतो परथी आ विधानो प्रतिष्ठा सम्बन्धि होवानी वातने पुष्ट करे छे । वळी "वेलाउलथी पाटणि पधारीया, करी प्रतिष्ठा मंडाण रे" ए पद पण उपरोक्त वातनुं पूरक जणाय छे । आ ढाळनां शेष पद्योमां विजयदानसूरिजीनी पाटण तरफनी विहार वर्णना छे । सूरिजी ज्यारे पाटण पधार्या त्यारे पाटणना कया कया वाडामां, कया कया भगवाननां केटलां जिनालयो हतां तेनी विगते वर्णना अहीं ग्रन्थस्थ थई छे । अमे अहीं परिशिष्टमां ते जिनालयोनी विगतोनी १ सूचि बनावी मूकी छे। साथे साथे ते सूचिनी पाटणनी अन्य चैत्य परिपाटी साथे तुलना करी तेनी टूंकनोंध पण आपी छे ।

(१) सं. १६०३मां ज्यारे पाटणमां ८७ जिनालयनी नोंध कृतिकारे करी छे त्यारे तेमनी पूर्वेना (सं. १५७६) कवि सिद्धिसूरिजीए ७० जिनालयोनी, तो तेमनी पछीना (सं. १६१३) कवि संघराजे १६३ जिनालयोनी नोंध आपी छे ।

(२) कवि सिद्धिसूरि कृत चैत्यपरिपाटीमां जे केटलेक स्थळे १ थी वधु चैत्यो हतां त्यां प्रस्तुत कृतिकारनी नोंध मुजब ओछां के वत्तां चैत्य होय तेवुं आ रासमां एक बाजु देखाय छे । तो बीजी बाजु कवि संघराजकृत चैत्यपरिपाटीमां पण आवुं तो बन्युं साथे साथे संघराजकृत चैत्य परिपाटीमां न होय तेवां अप्रसिद्ध स्थानोनां नामो पण अहीं जोवा मळ्यां जे प्रस्तुत रासनुं विशेष कही शकाय । दा.त. सतरीक वाड, सईवाड, हंसापुर, नंदापुर, वाडी[पुर] वगेरे...

आगळनी ढाळना अन्त्य पद्यो (पद्य नं. २१९, २२०), ''जिहा जिहां...भणी'' तथा ''एतले देसे...वखाणीइ'' द्वारा ''विजयदानसूरिजीना आज्ञाना अनुरागी श्रावको कया कया देशमां वसेला छे तेनुं वर्णन हवे (आगळनी ढाळमां) करीशुं.'' तेवो हवालो नाखी कविए १३मी ढाळमां आगळनी वातना अनुसन्धानमां विजयदानसूरिजीना भक्तोनां गामोनो सविस्तार चितार आलेख्यो छे। जोके अहीं फक्त घणदेवी, तरवाडा जेवा गामोनो ज उल्लेख छे तेवुं नथी, सुरत, अमदावाद, महेमदाबाद जेवा मोटा शहेरोनो पण उल्लेख अहीं जोवा मळे छे। अमे अहीं परिशिष्टमां ते दरेक गामोना नामनी सूचि आपी छे। साथे साथे अप्रसिद्ध गामोनां वर्तमान नामोनी नोंध पण आपी छे। अप्रसिद्ध गामोना वर्तमान सन्दर्भनी नोंध मळी नथी त्यां प्रश्नार्थ चिह्न कर्युं छे। विद्वानो आ अंगे ध्यान दोरे।

त्यारपछीनी काव्यनी उपान्त्य ढाळमां सूरिगुण वर्णना छे। ज्यारे अन्त्य ढाळनो पूर्वार्ध सम्पूर्ण रासनी समरी (टूंक नोंध) रूपे अने उत्तरार्ध सूरिजीनी विशेष उपमाओना वर्णनमां रोकायो छे। अहीं ढाळनां प्रथम २ पद्यो द्वारा प्रस्तुत रासनुं ''पुण्य रास''नाम प्रयोज्यानी तथा अन्त्य पद्यो द्वारा सं. १६०३मां राजसागरसूरिजीना शिष्य वासण वडे प्रस्तुत कृति रचायानी नोंध आपी कविए रासनुं समापन कर्युं छे.

खास नोंध :

प्रस्तुत कृतिमां आलेखाएली सूरिजीना जीवनचरित्रनी महत्त्वनी नोंधो करता जैन परम्परानो इतिहास भा. ४ मां मळती तद्विषयक नोंधो घणी भिन्न छे तेथी अहीं अमे ते बन्ने नोंधो तुलना करवा विद्वानो समक्ष मूकी छे। विद्वानो आ बाबत पर विशेष प्रकाश पाथरे।

नोंध	कृतिगत वर्णन	जै.प.इति भा. ४
गृहस्थपणानुं नाम	...?	[लखमण]*
मातानुं नाम	भरमादे	भरमादे
पितानुं नाम	भावड	जगमाल (भामोशा)
गामनुं नाम	इडर-साबली[पुर]	जामलानगर
वंश	ओसवाळ	वीसा ओसवाळ
गोत्र	—	करमिया
राजानुं नाम	भाण	—
दीक्षानुं नाम	—	उदयधर्म

दीक्षा संवत्	–	१५६२
आचार्य पद संवत्	१५८५	१५८७
आचार्यपद स्थळ	मालव उज्जैनना बहादुरपुर	सिरोही
गच्छाधिपपद संवत्	–	१५८७
गच्छाधिपपद स्थळ	–	सिरोही

* आ नाम भीम कविकृत विजयदानसूरि भासमां मळे छे ।

कृतिकार परिचय

कवि वासण आ. राजविजयसूरिजीना शिष्य छे । तेओ साधु कवि छे के गृहस्थ कवि ए चोक्कस समजातुं नथी । जो के तेमणे प्रस्तुत कृति सिवाय सं. १५४१मां बीजी एक कृति ''आनन्दविमलसूरि रास''नी पण रचना करी छे त्यां आ बाबतनो कोई खुलासो मळतो होय तो तपासवुं घटे । बीजुं ए पण खरुं के आनन्दविमलसूरिजी रास रचना संवत् जोता बन्ने कविओ एक ज छे के जुदा ते पण शोधवुं रह्युं ।

प्रत परिचय :

प्रस्तुत कृतिनुं सम्पादन एक मात्र प्रत परथी तैयार, करायेली वाचना छे. श्री वैराग्यरति वि. म.ना वर्धमान जिनरत्नकोशना प्राप्त डेटा मुजब आ कृतिनी अन्य हस्तप्रत संवेगी उपाश्रय ज्ञानभण्डार सिवायना अन्य कोई भण्डारमां मळती न होई आ कृतिने अमे यथाशक्ति शुद्ध करी सम्पादित करी छे । जो के कृति लेखनमां तेमांय खास साचा क्रमांक आपवा माटेना सुधारा करवा पड्या छे । बीजुं कृतिलेखकनी बोलचालनी भाषा उतरी होई तेवुं क्यांक-क्यांक देखाता तेवा शब्दोने पण शब्दकोशमां ऊतारवानुं योग्य गणी मूकवाचना यथातथ राखी छे । विशेषे त्यां फक्त वाचको न समजी शके तेवा पाठने वाचनामां सुधार्यो छे ।

*

विजयदानसूरि [पुन्य?] रास

॥ ए ॐ ॥ श्रीश्री ५ विजयदानसूरिगुरुभ्यो नमः ॥

॥ राग - गुडी (वस्तु छंद?)

विमल मति दिउ विमल मति दिउ मात सरसत्ति ।
हंसगमनी मन मोहती शासनदेवति नाम कहीइ । {॥१॥}
( )
रामा पदमा वागवादिनी, जस पसाइ सवि सुक्ख लहीइ ।
चरणे नमी ते मातजी गाइसि सुद्ध(साधु)-शृंगार ।
पुन्यरास श्रीपूज्यनु विजयदानसूरि गणधार ॥२(१)॥
अनंत सुखकर अनंत सुखकर श्रीजिनधर्म ।
भविक जीव हितकारक करि नितुअ रूडां जिन ध्यान ।
मरम जाणि तेहनु पामीइ रूडां बहुमान {॥३॥}
समकित निरमल पामीइ गुरु तणि सपसाय[१] ।
करुं भगति रास रचुं पूजिनुं[२] प्रणमी वीर जिन पाइ(य) ॥४(२)॥

दूहा- पाय प्रणमूं श्रीवीरना, चुवीसमु जिनराय(ज) ।
नाम जपंता तेहनूं, फलीइ वंछित काज ॥५(३)॥
जग-चूडामणि आदिदेव, वीर जिन तिलक समान ।
आदि जिन लोक-आदित[३] समा, वीर जिन चक्ष[४] समान ॥६(४)॥

चउपई-
वर्द्धमान जिन प्रणमूं वीर, मंदि(द)रि(र)गिरि जिम प्रणमूं धीर ।
अनंत पदारथ जे गुरु तणा, न्यान-प्रमाणि जाणि घणा ॥७(५)॥
सुर नर केरी परषद बार, निज निज पूछि धर्मविचार ।
रयण सोवन रूपा पगार[५], समोसरण तणु अधिकार ॥८(६)॥
दुंदुभि मधुरी वाजि भली, जाणि भगति करूं एकली ।
पासि जिनवाणीनी जोड, सुणतां सुर नर पुहुचि कोड ॥९(७)॥
छत्रत्रय ते मस्तकि भलां, जाणि भगति करूं एकलां ।
उपरि चेईत[६]-[त]रूअर तार[७], बारगणु ते गुणभंडार ॥१०(८)॥

खीरुदधि वारि जिस्या ऊजला, चउसठि चमर ढलि निरमला ।
रज काढी जिन पापह तणी, ऊजलपण आविउं तेह भणी ॥११(९)॥
धजादंड ते सिह(सहि)स जोअण, पवन करी ते बोलि वयण ।
आवु लोको प्रणमु पाय, त्रिभोवन केरु बिठु राय ॥१२(१०)॥
रयण-सिंघासण हरखि घणूं, मझ ऊपरि मन जिनवर तणूं ।
उत्तम संगति उत्तमना कर्म (काम?), तेह भणी सहूइ करि प्रणाम ॥१३(११)॥
सरगि मृ(म)र्ति[८] अनि पातालि, त्रिहुं भवननु एह क्रपाल[९] ।
पाखलि[१०] त्रणि गढ सेवा आदरी, त्रणि प्रदक्षणा देई करी ॥१४(१२)॥
कोसीसां[११] ऊपरि रतन, करि प्रणाम नि बोलइ वचन ।
एहनी संगति करि जेह, जनम-जरादिक छूटइ तेह ॥१५(१३)॥
चतुर पोलि चिहुं पासे पवित्र, साहामी(मा)[१२] निरखइ जिननां नेत्र ।
चिहुं पखि धर्म प्रकाशि एह, दान सील तप भावना तेह ॥१६(१४)॥
फूलपगर[१३] ते सोहामणु, पंच वरण महिमहि[१४] घणु ।
सुगंध-कीरति ताहरी नाथ, सयल लोकनि करि सनाथ ॥१७(१५)॥
पांवडीआरां[१५] बोलि असूं[१६], अरे लोको विमांसु[१७] कसुं[१८] ।
आवी प्रणमु मन-उल्हासि, ऊंची गतिनु ए अभ्यास ॥१८(१६)॥
ए त्रिगढानूं मंडाण, तिहां कणि बिठा त्रिभुवनभांण ।
प्रणमि सुर नर कोडि सुजाण, त्रणि भुवनमांहि वरती आंण ॥१९(१७)॥
भवनपतिना वासि कह्या, बिहु स्त्रे(श्रे)णे ते दस दस थया ।
व्यंतर बिहुं ठाणे बत्रीस, एतलइ बार अनि च्यालीस ॥२०(१८)॥
कलप[१९] तणा कह्या दस इंद्र, दोइ ज्योतिषी सूरिज नि चंद ।
चुसठि अमरेसर इम थाय, भगति प्रणमि जिनना पाय ॥२१(१९)॥
गणधर गिरूआ ग(गु)णभंडार, बूझ्या पनर-सि(स)त परिवार ।
इंद्रभूति ते पहिलूं नाम, बीजूं **अगनिभूति** अभिराम ॥२२(२०)॥
वाइभूति ते त्रीसु कही, **विगतस्वामि** ते चुथु सही ।
पंचम गणधर **स्वामि सोधर्म**, द्रष्टिवादना जाणि मर्म ॥२३(२१)॥
मोरी[य]-मंडी[त]-पुत्र सजाण[२०], **अकंपित** आठमु प्रणाम ।
अचलभ्रात मेतारिज नाम, **प्रभ(भा)स** गणधर करूं प्रणाम ॥२४(२२)॥

त्रपदी[२१] सूत्र कहूं वचन, **मस्तकि** हस्त ठवीउ जिन ।
अंग उपांग पूरव जाणि, **पदानसारिणी**[२२] लबधि प्रमाण ॥२५(२३)॥
अंजन-ढग कीजि एकलु, **सिणगार्या** गजथी ऊंचु भलु ।
एतलूं अंजननु घोलाइ[२३], **एक पूरव** पहिलूं तु लिखाइ ॥२६(२४)॥
अहीइथी[२४] ठाणि बिमणा **कीजीइ**, चऊद लगि आंकि लीजीइ ।
सि एकासि बाणुं गज थाइ, **पूरव** चऊदमूं तु लिखाइ ॥२७(२५)॥
तहीइ[२५] हूता श्रुतकेवली, ए वडा न्याननी संपत्ति मिली ।
हवणां[२६] पंचितालीस[२७] आगम, पूरा न जाणीइ तेहना मरम ॥२८(२६)॥
आचारां{अ}ग ते धरम-आचार, **सोअ[ग]डांगि** सोक्रीतविचार ।
ठाणांगि ठाणानूं नाम, **समवा[यां]गि** समवा[य]नूं काम ॥२९(२७)॥
भगवंत प्रकासि **भगवती**, प्रश्न पूछि **गोयम** यती ।
न्याता चालइ साधर्म-न्यात, **उपासिग**(गि) श्रावक विज्ञात[२९] ॥३०(२८)॥
अंति ऊपनां केवलन्यांन, **अ(अं)तगडदसांग** तेहनूं नाम ।
अंत(अनुत्त)रविमांनि पुहुता अणगार, **अनुत्तर(रो)[व]वाई** तेहनूं विचार ॥३१(२९)॥
आश्रव नि संवर दा(द्वा)र, **प्रश्नव्याकरण** तेहनु विचार ।
पाप पुन्य तणउं फल **कहि**, **विपाकश्रुतांग** सुणतां लहि ॥३२(३०)॥
एतलि एकादसांग कह्यां, **ऊपांग** गुरु-पसाई लह्यां ।
सघली भलामण **उ[व]वाई कहि**, **राइपसेणी** राजा-तत(त्त) लहि ॥३३(३१)॥
जीवाभिगम पंनवणा, जीव-गति विचार घणा ।
जंबूदीप-पंनती(त्ति) नांम, द्वीप समुद्र विचार[ण] ठांम ॥३४(३२)॥
चंद-सूर-पंनती(त्ति) कही, चंद सूर विचार लही ।
छ छेद पांच **निरआवली**, दस पइंनामांहि मिली ॥३५(३३)॥
मा[हा]नसीथ[३०] **नसीथ ऊ(उ)तराधि[य]न, दसवीकालिक** सुणतां पुन्य ।
अनयोगद्वार[३२] नि **नंदीसूत्र**, तेह प्रकासि सर्वज्ञ-पुत्र ॥३६(३४)॥
ए सघलानी जूजूई व्रति(वृत्ति), ते पाखि सूधी न जाणि निरति[३२] ।
तेह कारणि कीधां प्रकरण, झलहलतां आगमनिं आभरण ॥३७(३५)॥
ए सूत्र वखाणि माहरु जुगह-**प्रधांन**, **विजिदानसूरि** गुणह-निधांन ।

कहूं परंपरा पाटह तणी, सुणतां सफल सुकृत आपणी ॥
कहि **वासण** सुणतां सोभा घणी ॥३८(३६)॥

दूहा – ॥ राग–देसाख ॥

गणधर पाटि परमपरा, तिहां निरतु विचार ।
उछ्वि[३३] लगि बापडा, न लहि धरम–अधिकार ॥३९(३७)॥
गणधर पाटि परमपरा, अनेक गछपतिराय ।
नाम सुणतां तेहनूं, हे(हि)अडि आणंद थाय ॥४०(३८)॥
वीर–पटोधर साध–सिंगार, **गोयम सोहि(ह)म** गुणह भंडार ।
आपणी रधि–पद तेनि भलावूं, जिनशासनि रूअडूं रे भावूं ॥४१(३९)॥
न्यान–प्रमाणि जिनजी जांणि, ए गणधरना गुण वखांणि ।
दुप(प्प)स आचारिज जुगह–प्रधान, चिर प्रतपु एहना संतान ॥४२(४०)॥
सोधर्मपाटि **जंबू** गणधार, जेहनि सोहि सीलसिंगार ।
नवाणू कोडि सोव्रना(न)[३५] जेणि परिहरी, बत्रीस लक्षणवंती आठि रे नारी
॥४३(४१)॥
उपदेस देतां **प्रभवस्वामि** मिलीआ, पांचसइं परवार वंछित फलीआ ।
जंबू–पाटि साध–सोभामान, **प्रभवस्वामी** गुणनिधा[न] ॥४४(४२)॥
तास पाटि **संजमभवसूरि**, करम–रिपु जीपवा साचु सूर ।
अंग उपांग आगम चिंतन देई, **दसवीकालिक** सूत्र करेई ॥४५(४३)॥
जसोभद्र संभूतविजि भद्रबाहू, थूलिभद्र आरजि(ज) माहागिरि साहू ।
स्वस्तिक(सुस्थित?)सूरि इंद्रदिन(न्न) {दिन} **सूरि** नाम, तस पाटि
सीहगिरिसूरि अभिराम ॥४६(४४)॥
वि(वइ)रस्वामि व[इ]रसेन चंद्रसूरि जेह, **सामंतभद्र** पाटि **देवसूरि** तेह ।
प्रद्योतन मानदेव मानतुंग मुणिंद, **भक्तामर** स्तव **आदि** जिणंद ॥४७(४५)॥
वीर्याचारज जइदेव श्रीदेवानंद, विबुध नरसंग समुद्र ।*
मानदेव विबुधप्रभ जयाणंद कहीइ, [र] **विप्रभ जसोदेव विमलचंद्र** सही[इ]
॥४८(४६)॥
अं(उ)द्योतन सिवदे[व] अजितसूरि, विजयदेव सोमप्रभ मुनिचंद्रसूरि ।
अजित सुहस्तसूरि विजइ हंस एह, **माणिक जगचं(च्चं)द्र देविंद्र** तेह
॥४९(४७)॥

धर्मघोष सोमप्रभ सोमतिलक, देवसुंदरसूरिपाटि विवेक ।
सोमसुंदरसूरी(रि) गणधार, जेणइ सोहाव्यउ तपगछ-भार ॥५०(४८)॥
मुनिचंद्र रत्नसेखर लक्ष्मीसागर, विजयचंद्र सुमतिसाध(धु)सूरि सोहाकर ।
हेमविमलसूरि सोभामांन, तस पाटि गछपति गुणनिधान ॥५१(४९)॥
अनुक्रमि हऊआ मुनी(नि)वर वीर, धरम-धोरिंधर साहसधीर ।
संप्रति सोहि जिनशासनि राय, **आणंदविमलसूरि** प्रणमूं पाय ॥५२(५०)॥
प्रगट कीउ जेणि साधे[३७]आचार, षटकाय जीवनु रक्षाकार ।
अवृनि(ति)[३८] प्रमाद मनावी आण, राग द्वेष जीता मोह मैयण[३९]-
बान(ण)॥५३(५१)॥
—गी देखाडी साधजी केरी, दिनि दिनि चडती अधिक अधिकेरी ।
मूरति मोहण समता-भंडार, पंच महाव्रत पंचाचार ॥५४(५२)॥
सोम-दृष्टि सहिजि दयाल, जस कीरति निरमली विशाल ।
अमृत वचन वाणी मषि[४०] एहवी, गंग-तरंग-वारि निरमल जेहवी ॥५५(५३)॥
दरिसण दीठि मनडूं मोहि, अशु(सु) गछपति तपगछि सोहि ।
जंगम तीरथ समतावंत, क्रिपासागर ए भगवंत ॥५६(५४)॥
दसविध यतीय धरमसुं पूर, तप-तेजि ऊगिउ शासनि सूर ।
समकित-ऊद्धार कीउ राजेंद, **आणंदविमलसूरि** मुणिंद ॥५७(५५)॥
उदइवंत पाट तम्हारु रषिराज[४१], संघ तणा फला[४२] वंछित काज ।
पुन्नि-वेलि पूजि सि[४३] हथि वावी, मणोहर फूल फले सोहावी ॥५८(५६)॥
रतन-पुरुषनि पदवी दीधी, पूजि पोसइ[४४] तेहवी परि कीधी ।
गछपति **विजि{इ} दानसूरिंद**, पाए नमि नर नारी वृंद ॥५९(५७)॥
तेह तणा सुणि गुणग्राम, वंछितफल हुइ तेहनि नामि ।
संघ-परषदमांहि सद्गुरु सोहि, नयणे देखंता मनडूं मोहि ॥६०(५८)॥
तारण तरण पोत[४५] समान, एहवा श्रीगुरु गुणनिधान ।
सुंदर परिवार ताहरु रे आज, जिवंता[४६] सोहि रषिराज ॥६१(५९)॥
रास थडाबंध[४७] साधुगुणे वाधु[४८], गुरुभगतिं आघेरु[४९] साधु ।
पूजि ऊपना ते देस गाम नाम, सांभलतां हुइ वंछितकाम ॥६२(६०)॥

॥ राग-धन्यासी ॥

दूहा- तव रतन जे पामीइ, गुरु तणु सुपसाइ ।
तेह तणा गुण गाईइ, समकित निरमल थाइ ॥६३(६१)॥
पुढवीमंडण उत्तम नार, सरोवरमंडण हंस ।
तिम संघमंडण श्रीगुरु कह्या, जे छिइ उत्तम वंश ॥६४(६२)॥

॥ ढाल ॥

उत्तम वंश तमारुं एह, नाम लेईनि कहीइ तेह ।
सकल मंगल हुइ तारि नामि, चरण नमी पूजि करूं प्रणाम ॥६५(६३)॥
रलीयामणु रातु देस, सदा स(सु)भिखता[५०] करि प्रवेस ।
बारमास त्यांहां नीपजि अन्न, सहिकार तरूअर सोहिवन्न[५१] ॥६६(६४)॥
सालि सेलडी सहिजि अपार, राअ सगंध चोखा अतिहिं अपार ।
नदी सरोवर गामि गामि, निरमल नीर भर्या अभिराम ॥६७(६५)॥
जलचर थलचर जे जीव होइ, वांकी द्रष्टिइं न जोइ कोइ ।
भाट भोजिक[५२] गुण गंधर्व जेह, विप्र वेद घणा उच्चरि तेह ॥६८(६६)॥
वसि गाम चऊदसि चऊआ(सा)ल[५३], ते माहि **ईडर साबली** विशाल ।
चोल[५४] तणा जिहा अविहड रंग, छाइल[५५] भिरव[५६] सालू[५७] संग ॥६९(६७)॥
मीणा[५८]रांना मोटा अ(आ)वास, सदा तेअनि ए अभ्यास ।
समकितद्रष्टी श्रावक वसि, साध-साधवी देखी उल्हसि ॥७०(६७)॥
श्रीआदि जिणंदतणु प्रासाद, वाजि मनोहर घंटानाद ।
बीजि भवनि श्रीपारस जिन, स्वामी मझनइं सदा प्रसन्न ॥७१(६९)॥
श्रीजीराउलिं जिनवर तात, भूमंडलि तीरथ विक्षात ।
राज करि राजा श्रीभांण, राजनीति सहू मांनि आंण ॥७२(७०)॥
सिगरणा[५९] विगरणा[६०] घणा, अधिकारी हींदूराय तणा ।
विवहारीआनी संपत्ति घणी, बिहुं पासे श्रेणि हाटह तणी ॥७३(७१)॥
मांडवीआना[६१] मोटा मुहूत[६२], घोडे चड्या दीसि सेलुत[६३] ।
देस नयर तूं कहिउं मंडाण, ते वचन करजो परमाण ॥७४(७२)॥
जिहां जनम्या एहवा पुरुष सुजाण, तेह भणी एह करिउं वखांण ।
ईडर साबली मधि जे गाम, तेह तणुं भलि लीजि नाम ॥७५(७३)॥

दहीं दूध घ्रत झाझां मिलि, वीर वंदेवा जईइ जामलि ।
..... ॥७६(७४)॥

॥ राग-सामेरी ॥

दूहा

उत्तम संगति उत्तम थया, उत्तम करणी जेह ।
उत्तम वंश तेहनु, उत्तम थाइ तेह ॥७७(७५)॥
उत्तम वंश उत्तम घरे, उत्तम ते सजन ।
उत्तम माइ बाप तेह तणां, जिहां एहवा पुरुष रतन ॥७८(७६)॥

॥ ढाल ॥

उसवंसि सिणगार ए, साह **भावड**-मल्हार ए ।
सा [र?] ए मात **भरमादे** ऊयरि धर्या ए ॥७९(७७)॥
बंधव पांचि जोड ए, पुहुचि जि धर्म-कोड ए ।
मोडि ए मान जीपि मिथ्या तणुं ए ॥[७८]॥
हेमविमलसूरीसर-सीस ए, **दानहर्ष पंडित** मुनीस ए ।
सीस ए लक्षणवंत जाणीउ ए ॥[७९]॥
सामुद्रिक **शास्त्रि** जे कहां[६५] ए, चित्त धरीनि जे लहां[६५] ए ।
संग्रहां[६६] ते लक्षण पंडितजीइ ए ॥[८०]॥
पि(प)हिलूं जोई आ[इ] ए, लक्षण सफल थाइ ए ।
पा[इ] ए ऊरध रेखा अंगूठडि ए ॥[८१]॥
पाणि पा(प)ग-नख पग-तला, उ(अ)धर नयण राता निरमला ।
उत्तम नरा जिह्वा तालू साते कह्या ए ॥[८२]॥
नलवटि[६७] रेखा त्रणि चार ए, दीरघ आऊखूं अपार ए ।
कोट-वाटली[६८] कंभ[६९] सरखी उत्तम नर(रा) ए ॥[८३]॥
हसती[७०] सीह मय[७१] मीन सरीखी[इ], आखि उत्तम नर निरखीइ ।
परखीइ पर(पुरु)ष-प्रधान ते जाणीइ [ए] ॥[८४]॥
प्रलंब[७२] हत(थ) बाह निरमली, तेजवंत नख समी आंगली ।
जो वली स(शु)क-चना(चंचा)[७३] सरखी नासिका ए ॥[८५]॥
हंस मोर मृग दादुर[७४] परखु, आ रे उदर जोउ तेहना सरखु ।
[--]नख ए परखु हुइ राजेसरू ए ॥[८६]॥

वाघ वृषभ मृग हिगिअ, तेना सरखी जंघा सोहि[अ]
मनमोहि ते नर बहू नर नारीआ ए ॥[८७]॥
हृदिकमल चुशा(सा)ल ए, सो घडित निरमल विशाल ए ।
क्रपाल ए ते नर सामुद्रकिं कहि ए ॥[८८]॥
कोडंबक[७५] व्रख[७६] पूय[७७] तणी परि, दंतरेखा ऊजल भरि ।
पंति परि बत्रीसि उत्तम नर(रा) ए ॥[८९]॥
हसत(स्त)–कमल(लि) जे आकार, साल(सांभ)लु तेनु अधिकार ।
गुणकार[ए] चिति(त्त) देईनि जांणीइ ए ॥[९०]॥
चक्र शंख वज्र बाण ए, प[उ]म कल[स] इहिनांण[७८] ए ।
जाणं ए ते नर हुइ नराधी(धि)प(पु) ए ॥[९१]॥
कुरव[७९] मगर[८०] गेह सर, तरास[८१] त(न?)ग[८२] नंदाव्रत चामर ।
अमर [ए] ते नरनि सदा नमि ए ॥[९२]॥
इम अनेक लक्षण छि घणां, मरम जाणि विद्या तणा ।
आपणा पुन्य–पसाइ नीपजि ए ॥[९३]॥
स्त्रीनइ कहा वामांगि ए, पर(पुरु)ष नि जिमणि अ(अं)[गि ए] ।
संगि ए जाणी पंडित अवलोकीइ ए ॥[९४]॥
मात पितानि करि वीनती, पुत्र तम्हारु माहायती ।
गछपती अहिनाण एना लक्षण तणा ए ॥[९५]॥
मात पिता न लोपि लाज ए, सारू संघनूं काज ए ।
मुनिराज ए **विजिदान** नाम ठविउं ए ॥[९६]॥
महोछव भला चारित तणा, संघ सजन आवि घणा ।
आपणा मनोरथ मात–पिता पूरवि ए ॥[९७]॥

॥ ढाल – नमणानु(?) ॥

मात करि रे ऊव(वा)रणां,[८४] बंधव दि आसीस[रे]
बहिनर(री) दि आसीस रे ।
जि–वंतु तूं लहूलडु,[८५] प्रतिपु कोडि वरीस रे ॥[९८]॥
पंच महाव्रत ति धर्यां, पांचिइं मेर समान रे ।
पांचि संवरि[८६] दीपि[या], पांचि गुणनिधान रे ॥[९९]॥

पांचि परमेष्ठि जपजो, पांचनि वसि ए करज्यो [रे] ।
पांच प्रमादनि जीपयो, पांचइ आचार धरजो रे ॥[१००]॥
पांच स(सु)मति त्रणि गुपतिसूं, चारित्र धरयो साध रे ।
सासना(न)देवि पसाउलि, शि(श)रीरि निराबाध रे ॥[१०१]॥
खीरवृक्ष[८७] शाखा परि, पसरू गि(गु)हिर गंभीर रे ।
निम(र्म)[ल] चारित्र वछ ताहरूं, चडतूं गंगाजल नीर रे ॥[१०२]॥
चडती कला जिसी चंदनी, दिन दिन अधिक अ(उ)द्योत रे ।
न्यान दरिसण नि चारित्र, निरमला ताहरा जोइ रे ॥[१०३]॥
वदन-कमल पूजि ताहरूं, जईसु[८८] शरदकुं चंद रे ।
तम[८९] दीठि आणंदीइ, नर नारीनां ए व्रंद रे ॥[१०४]॥
वचन-वसि रे भारती, अमृत वांणीअ मुखि रे ।
देसणा दान ताहरी, स(सु)खी होसि नरलखि रे ॥[१०५]॥
हेम सारसत नि प्राकु(कृ)त, त्रिहु परि व्याकरण जाणि रे ।
वेद पुराण नि समृती[९०](ति), नाममाला नाम वखाणि रे ॥[१०६]॥
मूरति देखी ताहरी, सब कहि हरख अपार रे ।
सील-सनाह[९१] सोहामणा, लीलावंत अणगार रे ॥[१०७]॥
तपगछि केरु राजीउ, सही दीसि ताहरी ए पि(प)रि रे ।
श्री पदवी भली दीपती, आवि ताहारि करि रे ॥[१०८]॥
शास्त्र-मरम जाणि सूखिम, विद्या तणु भंडार रे ।
जे दीइ गुरु वाचना, ततकालि आवि अपार रे ॥[१०९]॥
योग वहि पूजि निरमला, द्वादशांगी अभ्यास रे ।
पंडित पदवी थापीनि, गुरुजीइ मस्तकि ठवीउ वास रे ॥[११०]॥
मिथ्यात्व-गज-घटी(ट्ट)[९२] जीविया, साधि पंचानन रत्न रे ।
समकित बीज ऊछेरवा, अवतार तोरु धिन(न्न) रे ॥[१११]॥
आणंदविमलसूरि तणा, एवा सखि[९३] सजाण रे ।
वनि[९४] करी आणंदसूं, मानि सहि गुरुनी आण रे ॥[११२]॥

॥ राग - देसाख ॥

दूहा-(?) मूलग(गु)ण पोति हता तु आवूं चारित(त्र),
आणंदविमलसूरी तणा सखि हऊआ पवित्र ।

न्यान दू(पू)रि अवलोकीउं(उ) जोऊ(उ) तत्त्व-विचार ।
साचा मारग साधना मूंकु लोभ विकार ॥[११४]॥

॥ ढाल ॥ ऊलाल ॥

लोभ वरुऊ(उ)[९५] सहू जाणि, मन वचनि चित्ति आणि ।
तु नही चारित्र लगार, पेट भराई अधिकार ॥[११५]॥
जेहनि लोभनी ममतां, ते पासि नही सुख समतां ।
जेहनि लोभनु सोस, तांहां[९६] छि राग नि दोस ॥[११६]॥
जे[ह]नि लोभ बु(ब)हु मान, तेहना दूबला कान ।
जे[ह]नि लोभसूं रंग, तां[हां] छि पापनुं संग ॥[११७]॥
जेहनि लोभ नि लालचि, तेहनि संजिमसूं नही र(रु)चि ।
जेह लोभसूं राता, ते सदा - - - - ॥[११८]॥
जे[ह]नि त्रसणां[९७] ए तरणी[९८], तांहां सी चारित्रकरणी ।
लोभ तांहां क्रोध मान माया, ए सनि(वि) [सं]सारना पाया ॥[११९]॥
संजलनू[९९] केवल वारइ, प्रत्याख्याणी(नी)[१००] देवगति निवारइ । {२}
त्रीजिइ मुगति चूकइ, लेई त(ति)रीअमांहि मूंकइ ॥३[१२०]॥
अनंतनबंधी ते गति पालइ, जीवनि नरगमांहि घालइ ॥{४}
ते मारइ[१०१] जिनजीइ जीता, नाठा ते भुइं बीहता[१०२] ॥५[१२१]॥
क्रोध नरयागति पइठु,[१०३] मान मानवमांहि दीठु ।{६}
राज रमणि रधि चूंकइ, मानवी मान न मूंकइ ॥७[१२२]॥
त्रिहुनी बहिनडी माया, तेणइ त(ति)री[१०४]-ठाम पाया ।{८}
देवलोकि पुहुतु ए लोभ, देवा संसारनी थोभ[१०५] ॥९[१२३]॥
सकति घणु व्यापइ, पाइकु कहिनइ ए नापइ(?) ।{१०}
धन धि(ध)न श्रीजिनधर्म, अवर न जाणइ ए मर्म ॥११[१२४]॥
सरगि मनषिह पालि, सहूइ लोभनि आलि[१०६] ।
संजमधारि ए वरजि, ग्रिहतनि नांइनू गरजि(?) ॥[१२५]॥
सि(स)हिस बत्रीस सेवि नरवरा, ता...गाम छन्नू कोडि परवर्या ॥[१२६]॥
लाख चुरासी एहि गि[हां], नवनिधान एते लिहां
सहिस चुसठि ए अंतेउरी ॥[१२७]॥*

---

* आ बन्ने गाथाओ त्रूटक होय तेवुं लागे छे ।

रूपिइं रंभा ए सुंदि(द)री, एवी रधि वीराजे घरि ।
एहवा चक्रवति(र्ति) कहीआ, मूंकी लोभ सख[१०७] लहीआ ॥[१२८]॥
एहवी जी(जि)नजीनी वाणी, ते मारि पूजि चित्ति आणी ।
प्रणमी पास जिणंद, चारित हऊओ आणंद ॥[१२९]॥
धरीउ संवर सार, महाव्रत गुणभंडार ।
जीता अवृ(विर?)ति प्रमाद, श्रीगुरुतणइ प्रसाद ॥[१३०]॥
रतनपुरुष पूजि जाणी, लक्षण जोई चित्ति आणी ।
सूरीसर पद आपी, **आणंदविमलसूरि** थापी ॥[१३१]॥

॥ राग-असाउरी ॥

दूहा- संवत पन्नर पंचासीइ (१५८५), माघ सकलपखि सार ।
सूरीसर-पद-थापना, वरति[१०९] जय-जयकार ॥[१३२]॥
मालवदेस मनोहरु, **ऊजेणी बाहाद(दु)रपुर** ।
उच्छव करि व्यवहारीआ, पदवी लि मुनिवर ॥[१३३]॥

वस्तुः पदवी पामी पदवी पामी सूरि-सिंगार ।
रतन-पुरुष पूजिं जाणीआ लक्षणवंत विनयवंत एह ।
जोगि देखी गुण एहना असु भाव मनि धरिउ तेह ।
चतुरविध संघ साखि करी, आणी मनि उल्हास ।
आणंदविमलसूरीसरि सि हथि ठवीओ वास ॥[१३४]॥
देस मालव देस मालव मुहुत मंडाण ।
(?) अखिर अति घणु तांहां पद थापना कीध ।
नयर-सिरामणि **चित्रकोट** जस सोभाग तेह तणु प्रसिद्ध ।
उत्तम देस उत्तम गुरु उत्तम संघ परवार ।
आणंदविमलसूरी(रि) थापीआ **विजयदानसूरि** गणधार ॥[१३५]॥

॥ ढाल-कलसनु ॥

थाप्या गणधार, धिन अवतार परवार, संघ सहू आविआ ए ।
सक(कु)ली(लि)णी नारी, बहू सिणगारी, माणिक मोती वधाविआ
[ए]॥[१३६]॥

ढम ढोल ध्रसूकि,[११०] नाद न चूकि, वाजि मनोहर ताल ए ।
मादल[१११] मृदंग, वाजि चंग, शृंगी[११२] भेरी विसाल [ए] ॥[१३७]॥
भू(भूं)गल[११३] नफेरी,[११४] वाजि झलेरी, अधिकेरी करि सरति[११५] ।
तूरे[११६] तवल[११७] दमामां,[११८] अति हिं सोहम,[११९] रामा नाचि नरति ॥[१३८]॥
उछव अपार, बहू परिवार, जि जि मंगलाचार ।
आवि वधावा, गुण सोहावा,[१२०] तोरण घरि घरि बारि ॥[१३९]॥
नयर अभिराम, मोटा काम, माम[१२१] मोटि लाज ।
अम[१२२] पवित्र कीधा, थया प्रसिद्धा, भलि आविउ रषिराज ॥[१४०]॥
अम्ह सुरतरु फलीउ, ए जोग मिलीउ, वलीउ अम्हारु दिन ।
श्रीआणंदविमलसूरि, पाटि निरमल परि, थाप्यु पुरुषरतन(न्न) ॥[१४१]॥
बहु धन खरचि कोडी, श्रावक जोडी, मोडी क्रपण-माण ।
रूप-टंका[१२३] तंबोल,[१२४] पनि[१२५] कलोल, मागण दीइ बहु दाण ॥[१४२]॥
देखी मंडाण, अमर सजाण, वखाणि देविंद ।
ए भरह खेत्र, भलूं पवित्र, चारित्र-पात्र मुणिंद ॥[१४३]॥
ए महा जोगीसर, आणंदविमलसूरीसर, तेणि थाप्या गणधार ।
गुण-प्रसिद्ध, जगनूं कीधूं, ए रूडुं व्यवहार ॥[१४४]॥
बाप समानि, बेटा बहु मानि, करम तणु पसाय ।
मोटाना मोटा, अमीअ-मि[१२६] लोटा,[१२७] ए रूडुं सोहाइ ॥[१४५]॥
पदथापना महोछव, अतिहिं उछव, जोइ चरणावरण ।
धिन एहनु धर्म, जाणु मरम(र्म), पनि तणा आभरण ॥[१४६]॥
वमु(?) सखि प्रधान, विमल दान, विद्या-गुणनिधान ।*
.....॥[१४७]॥
पंडितपद दीधूं, जगनूं कीधूं, आणंदविमलसूरि मुनि ए ।
महीमंडलि विहार, सखि परवार, गणधार गुणि जाणीउ ए ॥[१४८]॥

॥ राग-देसाख ॥

दूहा- जोउ परिवार पूज्यनु, सासनिकु सुलतान ।
संघ परवार सोहामणु, समकित गुणनिध(धा)न ॥[१४९]॥

* अहिं एक पंक्ति खूटती होय तेवुं लागे छे.

सूं मेलि परवार बापडा, मेह वरसि ते आभि ।
कां न गाजेइ धोरी गछपति, जां एवडा पंडित लाभि ॥[१५०]॥
आणंदजी सूरी थापीउ, जेहनी विमल मति [सारी?]
थापा[१२८] पटोधर तेहना, **विजयदानसूरि** परवार ॥[१५१]॥
नामि नव निधि पामीइ, दरसणि दुःक्रित[१२९] जाइ ।
अनुक्रमि ते पूजिना, भावि प्रणमूं पाइ ॥[१५२]॥

॥ ढाल - पडतालु आदनराय पुहुतला जाम ।

भावि प्रणमूं धोरी गणधार, विजयदानसूरि-सीस स्रंगार ।
श्रीराजविजइ सूरीसर-राइ, भगति धरीनइ प्रणमूं पाइ ॥[१५३]॥
महा तपीस्वर माहा-मुनीराज, दरसणि फलीइ रूअडा काज ।
समतासागर गुणनु सा(आ)गर, तपनु रे सागर विनितु(त)सागर
{पुन्निनु सागर}+ ॥[१५४]॥
श्रीविद्यासागर अवझाय, उत्तम नाम तमारूं ।
सेवा पामी सही ..... पुन्नि अम्हारूं** ॥[१५५]॥
राग द्वेष निवारण धीर, भलि आविओ तूं मुनिवर-वीर ।
मालवदेसि पधार्या साध, छठ्ठ अट्ठम तप निराबाध ॥[१५६]॥
पूजि वांदीनि विगि[१३०] लीजि, साध साधवी समता संप कीजि ।
सोनि[१३१] सामि न लागि रे भाई, श्रीपूजि पासि एवा सखाई ॥[१५७]॥
मूरख लोक न जाणि मर्म, साध अवगण बोली बांधि रे करम ।
छोरू मार्वित्रनी[१३२] किसी राढि,[१३३] फलां सि(स)हिकार पाखलि[१३४] हुइ
वाडि ॥[१५८]॥
किर[१३५] कंथेरनूं[१३६] कसूं[१३७] रखवालूं, जाला पाखा(ख)लि वीटिउं छइ जालूं ।
अनेक हींडइ मोकला हीणाचारी, कुण दि तेहनइ सीखामण सारी ॥[१५९]॥
जिनजीइ भाखिउ गछ परवार, गुरुजीइ कही आन्या सिणगार ।
सिद्धि(द्ध)सेन देवाकर सरखु मुनि वीर, बार वरस रहिउ गछनी
तीर ॥[१६०]॥

+ आ पंक्ति त्रूटक होय तेवुं लागे छे. ** आ पंक्ति वधारानी लखाइ होय तेवुं लागे छे.

गुरुनी आण ते सिरि चडावि, चारित्र आपणूं रूअडूं भवाडि[१३८] ।
तिम गुर दीइ सरि सीख भलाई, तेहीइ राग द्वेष.....* ॥[१६१]॥

पंड(डि)त श्रीपति न होइ ..... ।[x]
श्रीपति पंडित तेह प्रधांन, जेणि ऊतारिया क(कु)मतीना मान ॥[१६२]॥

विनयभावविनि[१३९] सावधान, आणंदविमलसूरि-सीस प्रधान ।
अमरहरष अमरवे(वि)जि उदिधर्म, आगम-अरथना जाणि मरम ॥[१६३]॥

विसालसूंदर दो भाई पंडित, **सोभागविसाल** संयमवंत ।
क(कु)सलहरष उदइवर्धन धोरी, वाणी विरागी **संघहर्ष** केरी ॥[१६४]॥

उदिजि लटकण लीलावंत, जेणि जीवा(ता) **लुंकाना** मत ।
मोहण-मूरति दीठइं उलास, अमृत वाणी तणु निवास ॥[१६५]॥

नर नारीना रंजि चित्त, धोरी रे **श्रीकण** पंडित ।
लखिमीरूचि रूपजी सकलचंद, जीवराज टोह(ड?)राज दीठि आणंद ॥[१६६]॥

महा तपीआ **सूरचंद वेलराज, विमलदान**नी रूडी लाज ।
राजपाल जगराज पंडित एह, **सहिजसागर लाखा गणपति** तेह ॥[१६७]॥

उवझाय सहित तीसि पंडित, जिवंतु रे परवार गुणवंत ।
एहवी जोड गीतारथ **केरी,** तेणि ज सोभा गछपति भलेरी ॥[१६८]॥

एहवु गछ सोहि अभिराम, पवित्र मुख हुइ लेतां नाम ।
नान(ण) दरसण चारित्रनुं आगर, एक एक पाहि साध रतनागर ॥[१६९]॥

वस्तु- पर(पुरु)षरयण पर(पुरु)षरयण साध-सिंगार ।
आणंदविमलसूरि(रि) तणा सषि सवे उत्तम कहीइ ।
चारित्र-पात्र सोहामणा पाए नमी बहु पुन्य लहीइ ।
श्रीराजविजइसूरि उवझायसुं बत्रीस पंडित परवार ।
पांचसइ साध साधवी श्रीपूजि आगन्या अधिकार ॥१[१७०]॥

---

* आ पंक्ति त्रूटक होय तेवुं लागे छे.
X आ पंक्ति त्रूटक होय तेवुं लागे छे.

॥ ढाल ॥ राग-धन्यासी ॥ नाचइं इंद्र आनंदसूं- [ए देशी] ॥

सोरठ देस पधारीआ, पूजि जाणी लाभ अपार ।
मु(म)होछव प्रतिष्ठा तणा मनि, हरख्युं संघ अपार ॥१[१७१]॥
ढोल ध्रसूकइ सोहामणा, मादल **मधू(धु)**रा स(सु)रंग ।
भलइ आविउ रषिराजीउ, धर्म चडाविउ रंग ॥[१७२]॥ ढोल... (आंकणी)
जिनप्रतिमा प्रतिष्ठा भणी, एकसु बावन[चैत्य] रे ।
श्रीजिन-वास पूजि करिउ, ... ॥[१७३]॥ ढोल...
..... ।
.....,* **मूलनायक चंद्रप्रभ** जिन [रे] ॥२[१७४]॥ ढोल...
देखी मंडाण वेदिका तणुं, अनुमोदि अमरिंद रे ।
गंधोदकि श्रींगार[१५०] भर्या, मूं(?) नवण करइ जिणिंद[रे] ॥३[१७५]॥ ढोल...
इस्या महोछव प्रतिष्ठा तणा, वेलाउल(लि?) गुण-निधान [रे]
ज(जु)गप्रधान पधारीआ, श्रीसंघनइ सोभा(भ)मान [रे] ॥४[१७६]॥ ढोल...
रूईडुं **पाटण देवकउ, वेलाउलि** निरमल मति [रे] ।
खरा रंग जिनधर्मसूं, खरू देसइ समकित [रे] ॥५[१७७]॥ ढोल...
वेलाउलथी पाटणि पधारीआ, करी प्रतिष्ठा मंडाण रे ।
ए अधिकार कविजन कहि, ए रास तणुं वखाण रे ॥६[१७८]॥ ढोल...
नयर सयल सिरोमणि, नरसमुद्र खरुं अभिधान रे ।
धोरिधर[१५२] विवहारीआ, माहरइ पूजि दीधूं मान रे ॥७[१७९]॥ ढोल...
रूडां जिनभवन ऊ(उ)पासिरा, ते भणी **पाटण** गुणवंत रे ।
नाम धरीनइ वर्णवूं, सांभलु नर नारि एक चिति रे ॥८[१८०]॥ ढोल...

॥ ढाल ॥ राग-रामगिरी ॥ छोडि सीमंधर स्वामीआ ॥

प्रथम तीरथ **खरा-कोटडी, अष्टापदिजी चंद्रप्रभ** जिणंद कि ।
खरतर सांति जिणेसरू, **मोढवाडइ** आठमुं जिणंद कि ॥९[१८१]॥
पास चिंतामणि वंदीइ, जिन जुहारीइ र(रे) **खी(पी)पलइ** उल्हासि कि ।
नाग-मंडि(मढि) नित वंदीइ, **ऊंची सेरी** रे सा{व}उकु **पास** कि ॥
१० [१८२]॥

---

* आ बन्ने गाथाओ त्रूटक होय तेवुं लागे छे.

धन धन पाटण नयरुजी, मारा जिनजी र(रे) प्रतिमा प्रासाद कि ।
चैत्र-प्रवाडि चित्त उल्हसइ, गुण गाईइ रे धरी नरमल नादि कि ॥११[१८३]॥
पास पंचासरू पूजीइ, **हरष-भवनि** रे **श्रीशांति जिणंद** कि ।
च्यारि प्रासाद तिहां कणि, नवे मंदिरि रे आवु[धरी] आणंदि(द) कि ॥
१२[१८४]॥
वांदीइ त्रिलोकि दिनकरा, **खारिवाकि(वि)रे श्रीवीर नइ सांति** कि ।
.....* ॥१३[१८५]॥
बार प्रासाद मनोहरू, **सालवीवाडइ** रे आवु आनंद कि ।
गोलवाडि बि प्रासाद, **पूनावडइ** पूजीइ जिण(णं)[द] कि ॥[१८६]॥
सतराकवाडइ स्वामिजी, धण(र्म)धु(धो)री रे भेटीअ जिन कि ।
दाणअगवाडइ आवीआ, वंदीआ रे मोरा **रिषभनाधि(थ)न** कि ॥१४[१८७]॥
कलरवाडइ कूरसीवाडइ; [ए] कईआवाडइ रे वीझावाडइ जिन कि ।
त्र(त्रि)सेरीइ त्रणि प्रासाद, श्रीपासजी रे **बू(ब्र)ह्मचारी नेमि** [कि] ॥[१८८]॥
कटकीआवाडइ आदि वंदीइ **पास कंबोईउ** रे श्रीसांति जिनराय कि ।
लटकणंपाटइ जिन जोहार, **खेतलवसहीय** रे **पास** प्रणमूं पाय कि ॥[१८९]॥
च्यारि प्रासाद सू(सु)भजी, **संघवी-पाडइ करणपाडइ** ए **श्रीसीतल** रे श्रीसांति
जिन कि ।
पास भाभू वांदीइ, **धुली परबिं**[१४२] रे **मुनिसुव्रत** धन कि ॥१६[१९०]॥
सईवाडि वीर वंदीइ, **ढंढेरवाडइ** रे **वीर** सामल व्रण(वर्ण)कि ।
कोकावाडइ बि प्रासाद, **कोल्ह(का) पास**जी रे त्रिभोवन आभरण(र्ण) कि
॥१७[१९१]॥

॥ ढाल ॥ जंबूद्वीप भरहखंड परवत वैताढि छइ नामूं - ए ढाल ॥
एतलइ **पंचतालीस प्रासाद** ए, वाजइ मनोहर घंटानाद ए ॥१८[१९२]॥
फोफलीयावाडइ आवीइ, श्रीआदिजिन भावना भावीइ ॥२०[१९३]॥
च्यारि प्रासाद स--(?), त्रांगडीआवाडइ पदमप्रभ ए ॥२१[१९४]॥
मणिहरी तंबोलीवाडइ ए, कर पूजा **रुइदुभवाडइ**(?) ए ॥२२[१९५]॥
खरति(त)रि सांति जिणेसरू, **सेठि(ठ)पाडइ** आदि जिन रूं(सुं)दरू ॥२३[१९६]॥

---

* अहीं एक पंक्ति त्रूटक होय तेवुं लागे छे.

भरथपाडइ पूजउं **आदिनाथ** ए, **कंसारवाडइ** करुं सनाथ ए ॥२४[१९७]॥
सगर-कूइ साहावाडइ आवीइ, **श्रीपास** जिन भावना भावीइ ॥२५[१९८]॥
बि प्रासादि(द) वंदीइ धरी खांति ए, **भिसातवाडइ** जिनवर **सांति** ए ॥२६[१९९]॥
नारिंगपुर मोढ मोढ ए, **जोगीवाडइ नेमि** जिन जोड ए ॥२७[२००]॥
वीजलकूइ मल्लि जिनराइ ए, **बिहु भवने** पूजूं पाइ ए ॥२८[२०१]॥
माणिकचुकि विसावाडइ ए, करी सनाथ भलूं [**बं**]**भ**[**ण**]**वाडइ** ए॥२९[२०२]॥
वीरमवाडइ सांति जिणेसरू, **बलीआपाडइ** वंदुं आनंद करू ॥३०[२०३]॥
कसूंबीआवाडइ वाचरीइ थइ, एतलइ **सवे सतिरि** कही ॥३१[२०४]॥
साण(णी)सर मफलीपुरि ए, जिन वंदउं **हबतिपुर** ए ॥३२[२०५]॥
हंसापुर नंदापुर सुंदरू, **वाडी दोलतपुरि** आनंद करू ॥३३[२०६]॥
आदि जिण **पास** जिणंद ए, **मगलीपुरि** पूजु आणंद ए ॥३४[२०७]॥
मूलनायक **मुनिसुव्रत** जिन ए, **चुवीस देरीए** लीणुं मन ए ॥३५[२०८]॥
आनावाडइ सह(हि)त आठ थै(थई), भलइ तारी जिन सेवा लही ॥३६[२०९]॥
वडलीइ सांति जिणे[स]रू, **बिहु भवने** पूजु सुंदरू ॥३७[२१०]॥
कुणगिरि चंद्रप्रभ सामि ए, वंदीइ मननी खांति ए ॥३८[२११]॥
कत[**उ**]**पुरि** त्रिणि भवन ए, **वावडी**[इ] पूजीइ जिन ए ॥३९[२१२]॥
एतलइ सवे **सतासी** जाणीइ, ते भणी **पाटण** वखाणीइ ॥४०[२१३]॥
देरासर घणां के सही, प्रासाद तणी संख्या कही ॥४१[२१४]॥
करी चैत्र-प्रवाडि सुंदरू, पाउधार्या गिरूआ गणधरू ॥४२[२१५]॥
साध साधवी एक चित्त थया, पूजि दरसणि सुख संपत्ति लह्यां ॥४३[२१६]॥
एहवूं देखी ऊपनु भाव ए, पूजि भगति तणु प्रभाव ए ॥४४[२१७]॥
रास-थापना पाटणि नयरि थई, ते **भणी** ए भगति कही ॥४५[२१८]॥
जिहां जिहां आण मानि ए गुरु तणी, ते देस नयर गाम ते भणी ॥४६[२१९]॥
एतले देसे श्रावक जाणीइ, पूजि आगन्या तिहां वखाणीइ ॥४७[२२०]॥

॥ ढाल ॥ राग - असाउरी ॥ साहेलडीनु ॥

मुहुत-मंडाण अति घणां साहेलडी रे, **पाउधारइ** ज(जु)गहप्रधान ।
विजयदानसूरीसरू साहेलडी रे, **चारी**(रि)त्रगुणह-निधान ॥४७[२२१]॥

पाटण अमदावाद चांपानेर साहेलडी रे, **खंभ** नयर सुजाण ।
माहाभगत श्रीसाधना साहेलडी रे, स(सि)रि धरइ गुरनी आण ॥४८[२२२]॥
डीसूं वीसलनयर साहेलडी रे, **साबली ईडर कपडवाण**[१४३] ।
हरसुर वीजापुर प्राहांतिज[१४४] साहेलडी रे, मानइ एह गुरु आण ॥४९[२२३]॥
काकरेचीय जालुर साहेलडी रे, **अखइगढ सीरोही** अहिठाण ।
नडुलाई सोजित पाली साहेलडी रे, **कुंभलमेर** श्रावक सुजाण ॥५०[२२४]॥
जोधपुर नइ **तिवरी महिकूं** साहेलडी रे, **नागुर समीआणुं** सार ।
लाहुर अलवर आगरूं साहेलडी रे, **रणथंभ(भो)र बीकानेर** ॥५१[२२५]॥
जेसलमेर सातमेर साहेलडी रे, **सूरीपुर मथूरा** स(सु)भकारा ।
जगहरवाडीइ(?) साहेलडी रे, श्रीपूजि अविचल राज ॥५२[२२६]॥
ढुंक ढोडी ढीली महेसा[णा] साहेलडी रे, **वसंतपुर** रूडू विचार ।
मनोहर देस **मेवात** साहेलडी रे, मानइ श्रीगुणधार ॥५३[२२७]॥
आहड जाउर चाभड साहेलडी रे, **छत्रकोट डूंगरपुर** ।
जवाव आंतरी सागवाडु साहेलडी रे, **बांसवालुं मालव** धुरि ॥५४[२२८]॥
चंदेरीसी सारंगपुर साहेलडी रे, **मगाउर बाहादरपुर** ।
वइरसीऊं नइ **दगवाड** साहेलडी रे, **खारखा जासलपुर** ॥५५[२२९]॥
सगवाड सीरजपुर साहेलडी रे,... (?) **आष्टा गोलाण** ।
मोहण सीणोर जीरापुर साहेलडी रे, मानइ श्रीपूजिनी आण ॥५६[२३०]॥
करुजंन थरभसुदा साहेलडी रे, **नलखेड पीपलनयर** ।
माछिलपुरनइ आगरू साहेलडी रे, **दधालीकुं** उत्तम सहर ॥५७[२३१]॥
मघावाड मगसी कानड साहेलडी रे, **रणथंभ(भो)र**गढ पवित्र ।
कालंदु जासलप(पु)र साहेलडी रे, **ऊजेणी** अनमोदि चारी(रि)त्र ॥५८[२३२]॥
बाहादरपुर सादलपुर साहेलडी रे, **देवास देवालपुर** जाण ।
कूंडी गोरी गागछा साहेलडी रे, मानइ श्रीपूजिनी आण ॥५९[२३३]॥
मथवा मगसी वलहडी साहेलडी रे, **पीठ खोपरुं** गाम ।
दसुर मांडव धारनयर साहेलडी रे, जपइ **विजइ दानसूरी** नाम ॥६०[२३४]॥
लूणहरुं नइ **राडीपुर** साहेलडी रे, कहिउं जिनकल्याण जिहां ।
खित्रीकुंड राजग्रहि(ही) साहेलडी रे, **चंपा पावापुर**.... ॥६१[२३५]॥

भदि(द्दि)लपुर हथिना(णा)पुर साहेलडी रे, **विनीता वाणारसी** प्राग ।
चंद्रावती चंद्रप्रभ साहेलडी रे, **सीहपुर धर्मनुं** आग ॥६२[२३६]॥
कंपिलपुर मथूरां कहूं साहेलडी रे, **रतनपुर काकंबी(दी)** ।
दो जनम कल्याणक वांदीइ साहेलडी रे, श्रीपूजि केरुं तिहां नाम ॥६३[२३७]॥
आसेर भां(भा)भर बरानपुर साहेलडी रे, **नीझरि देवगिरि कुंकणदेस** ।
सूरत रानेर घनदीवी साहेलडी रे, **वलसाड** आगन्या प्रवेस ॥६४[२३८]॥
चेउल डभोल मलबार साहेलडी रे, **हरम** जब षु(सु)विसाल ।
माहिम दीवा भडकलू साहेलडी रे, **घोघा गुंदी दीव** रसाल ॥६५[२३९]॥
ऊंना पाटण देवकुं साहेलडी रे, **वेलाउल मांगलुर** सार ।
कुंतीआणुं जीरणगढ नागनु साहेलडी रे, **पालीताणुं** गुण-भंडार ॥६६[२४०]॥
राणपुर धुलका साहेलडी रे, **वीरमगाम देकावाडउं** जाण ।
राधनपुर महि[म]दावाद साहेलडी रे, **तरवाडइ** वचन प्रमाण ॥६७[२४१]॥
जलवट थलवट जाणीइ साहेलडी रे, जिहां श्रावक करइ प्रवेस ।
आगन्या विजयदानसूरी(रि) तणी साहेलडी रे, विनइ करी मागइ आदेस
॥६९[२४२]॥
श्रीआणंदविमलसूरी(रि) तणा साहेलडी रे, पटधारी रतन ।
सफल हसूं माहरा पूजि तुं साहेलडी रे, अमृत तेहवा वचन ॥७०[२४३]॥

॥ ढाल ॥ राग-धन्यासी ॥ रयणगुण गाजइ रे - ए ढाल ॥

पटधारी रषिराज मनोहर, गुणवंत गुणनिधान ।
परम-पर(पुरु)ष तुं परम-दयाकर, शासनकु सुरतान ॥७१[२४४]॥
रंजइ [सुर] नरवृंद रे, मुख जसुं पूनिम चंद ।
पाए नमइ नर नारीना वृंद, चिरंजीवु **विजइदानसूरिंद** ॥७२[२४५]॥
चरण-कमल जे वंदइ तमारा, ते मानव धन धन ।
ज(जु)गहप्रधान ए जंगमतीरथ, सोभागी पुर(रु)ष रतन ॥७३[२४६]॥
चिरंजीवु श्रीआणंदविमलसूरि, पदथापना दीध ।
संघ ताण(तणा) मनोरथ फलीआ, पूजि पसाइ कीध ॥७४[२४७]॥
पंचं(चें)द्रीना संवर साचा, नव वाडि सहित ब्रह्मचारी ।
क्रोध मान माया लोभ जीता, पंच महाव्रत-धारी ॥७५[२४८]॥

पंचाचार पालइ पूजि निरता, पांच स(सु)मति गुपति परमाता ।
साध तणा ए गुण छत्रीस, सहू जाणइ विख्याता ॥७६[२४९]॥
प्रतिरूप आदि देई चऊद गुण खंति माईसुं....
दस जती(ति)धर्म बार भावना भावइ, गछपति सूरिगुण विख्यात ॥७७*[२५०]॥
अनंत भव आगइ जीवनइ, कुगुरु कुदेवि धूतार्या ।
[स]नाह थया पूजि ताहरइ दरसणि, मिथ्यामति ऊतार्या ॥७८[२५१]॥
मनोहर मूरति नयणे जोतां, हे(हि)इडइ पामइ आनंद ।
न्यान दरसण चारित्रनु, सागर सूरीसर सुजाण ॥७९[२५२]॥
चरण कमल जिहां ठावइ मुनिवर, अधिक उच्छव मंडाण ।
धवल मंगल सोहासिणि गावइ, वाजइ ढोल नीसाण ॥८०[२५३]॥

॥ ढाल ॥ राग–देसाख ॥ आदनराइनी ॥

वाजइ मनोहर ढोल नीसाण, भगर्ति गाइ नर नारि सजाण ॥८१[२५४]॥
पुन्यरास श्रीपूजि केरु, सांभलतां हुइ लाभ घणेरु ॥८२[२५५]॥
पुन्यरास ए पुन्य–प्रभावइ, भगति नर नारी कंठि सोहावइ ॥८३[२५६]॥
पहिलूं सरसति करी प्रणाम, चित्ति धरी **रिषभ–वीर** नाम ॥८४[२५७]॥
वली समोसरण तणु विचार, एकादश गणधर नाम अधिकार ॥८५[२५८]॥
चऊद पूरव कह्या पवित्र, नाम धरां(रूं) पंचितालीस सूत्र ॥८६[२५९]॥
अनुक्रमि कीधी गुरुनी भगति, रूडां पद रूडां अरथनी युगति ॥८७[२६०]॥
गुरुजी समान जगमां कुण कहीइ, गुरुप्रसादि सुख संपति लहीइ ॥८८[२६१]॥
जंगम अनंत आगम जीतु भव प्राणी, न सुणी साचा सद्गुरु वाणी ॥८९[२६२]॥
सवि प(पु)दगल कोटि करा एणि कारणि, न मल्या एवा गुरु तारण तरण ॥९०[२६३]॥
सकल लोक फरस्यो रे भाई, सद्गुरु संगति कबही न पाई ॥९१[२६४]॥
मात पिता गुरु बांधव कहीइ, समकित–दान जेहनु लहीइ ॥९२[२६५]॥
कुण कुण उपमा गुरुजीनइ दीजइ, मति–सारू लवलेस कहीजइ ॥९३[२६६]॥
परबतमांहि वडु मेरुगिरि जाणु, सायर स[यं]भूरयण वखाणुं ॥९४[२६७]॥

---

* आ गाथा त्रूटक होय तेवुं लागे छे.

सीता सीतोदा नदीमाहि वडी कहीइ, पुंडरीक-केसरी द्रहमाहि सहीइ ॥९५[२६८]॥
वनमाहि भद्रसाल नंदनवन, सूत्रमाहि श्रीआगम धिन ॥९६[२६९]॥
सुरु(र)गु(ग)णमाहि वडु सु(सू)रिंद, नरवरमाहि चक्रवति(र्ति) नरिंद ॥९७[२७०]॥
फल सवे माहि श्रीफल सार, भूषणमाहि मुगताफल हार ॥९८[२७१]॥
उदकमाहि खीरोदधि[१४६] वारि, स्त्रीमाहि वडी रतन-गरभा नारि ॥९९[२७२]॥
पत्रमाहि वडी(डा) नागवेलि पान, पुष्फमाहि चंपक प्रधान ॥१००[२७३]॥
तिम समवडि श्रीगुरुराइ, **कहि वासण** नमुं निरंतर पाइ[१४७] ॥१०१[२७४]॥
गुरुजीनी सीख ते साकर खोट, गुरुजीनी सीख अमीना लोढ ॥१०२[२७५]॥
गुरुजीनी आ[ग]न्या मस्तकि धरीइ, गुरुजीनी आ[ग]न्या भगति अणसरीइ ॥१०३[२७६]॥
गुणनधि आ[ग]न्या रास प्रमाण, श्रवणे सुणीइ नर ते सुजाण ॥१०४[२७७]॥
राग द्वेष मनमां धरी, गुरुजीना गुण सुणी अणसरीइ ॥१०५[२७८]॥
सोलसइ त्र(ति)डोत्तर (**१६०३**) आसाढ मासि, शुकल पक्षि पंचमी उल्हासि ॥१०६[२७९]॥
रास रचिउं रंगि गुणनिधान, श्रीविजइदानसूरि ज(जु)गहप्रधान ॥१०७[२८०]॥
राजविजयसूरि-सीस सिंगार, चिर प्रतपु पुन्य परिवार ॥१०८[२८१]॥
भणइ गुणइ भावि नर नारिं, मंगल कमला ते घर बारि ॥१०९[२८२]॥

॥ इति श्री४विजयदानसूरि रास समाप्ता(सः) ॥छा। श्रीः ॥ छ ॥
श्रीशुभं भवतुः ॥ छ ॥ श्रीः ॥ छ ॥ श्रीकल्याणमस्तुः ॥ छ ॥ श्रीः ॥ छ ॥

*

शब्दकोश

१. सपसाय - सुपसाय-कृपा
२. पूजि - पूज्य
३. आदित - सूर्य
४. चक्ष - आंख
५. पगार - किल्लो
६. चेईत - चैत्य
७. तार - ऊंचु
८. मर्ति - मृत्यु लोक
९. क्रपाल - कृपाळु
१०. पाखलि - पाछळ
११. कोसीसां - कांगरा
१२. साहामा - सामे
१३. फूलपगर - फूलनो ढगलो
१४. महिमहि - मघमघे
१५. पावडीआरा - पगथीया
१६. असुं - एम
१७. विमासु - विचारवुं
१८. कसुं - शुं
१९. कलप - कल्प (देवलोक)
२०. सजाण - सुजाण
२१. त्रपदी - त्रिपदी
२२. पदानसारिणी - पदानुसारी (एक लब्धिनुं नाम)
२३. धोलाइ - प्रवाही, शाही ?
२४. अहीइथी - अहींथी
२५. तहीइ - त्यां
२६. हवणां - अत्यारे
२७. पंचितालीस - पिस्तालीस
२८. सोक्रीत - सुकृत
२९. विक्षात - प्रसिद्ध
३०. नसीथ - निशीथ (सूत्रनाम)
३१. अनयोगद्वार - अनुयोगद्वार (सूत्रनाम)
३२. निरति - स्पष्टता
३३. उछिव -
३४. रधि - रिद्धि
३५. सोव्रन - सुवर्ण
३६. परवार - परिवार
३७. साध - साधु
३८. अवृति - अविरति
३९. मै(य)ण - मदन
४०. मषि - मिषे-बहाने
४१. रषिराज - ऋषिराज
४२. फला - फल्या
४३. सि - पोताना
४४. पोसइ - पोषाय(?)-शोभे(?)
४५. पोत - वहाण
४६. जिवंता - जयवंत
४७. थडाबंध -
४८. वाधु - वृद्धि पाम्या
४९. आघेरु - आग्रहयुक्त(?)
५०. सभिखता - सुभिक्ष, सुकाळ
५१. वन्न - वन
५२. भोजिक - भोजक
५३. चऊआ(सा)ल - विशाल (चोशाल)
५४. चोल - मजीठ
५५. छाइल - वस्त्रनी एक जात
५६. भि(भइ)रव - ''
५७. सालू - ''
५८. मीणारा - मिनारावाळा(?)
५९. सिगरणा - एक राज्याधिकारी-श्रीकरण
६०. विगरणा - एक राज्याधिकारी
६१. मांडवीआ - जकातनाकेदार
६२. मुहुत -
६३. सेलुत - एक राज्याधिकारी (सेल्लभृत?)

६४. कहां - कह्या
६५. लहां - लह्या
६६. संग्रहा - संग्रंह्या
६७. नलवटि - (कपाळ?)
६८. कोट - वाटली - डोकनी गोळाइ
६९. कंभ - घडो
७०. हसती - हस्ति
७१. मय - मृग
७२. प्रलंब - लांबा
७३. चंचा - चांच
७४. दादुर - देडको
७५. कोडंबक -
७६. व्रख
७७. पूय -
७८. इहिनाण - अभिज्ञान, निशान, चिह्न
७९. कुरव -
८०. मगर - मत्स्य - एक शुभचिह्न
८१. तरास - त्राजवु
८२. त(न)ग - पर्वत
८३. नंदाव्रत - नंदावर्त
८४. ऊवारणा - ओवारणा
८५. लहूअडु - नानु
८६. संवरि - संवर
८७. खीरवृक्ष - वडनुं झाड
८८. जईसु - जेवुं
८९. तम - तुम
९०. समृति - स्मृति (वैदिकग्रंथ)
९१. सना(न्ना)ह - बख्तर
९२. मिथ्यात्व - गजघट्ट - मिथ्यात्वरूपी हाथीओना वृंद
९३. सखि - शिष्य
९४. वनि - विनय
९५. वरुऊ(उ) - विरूप, वांकुं
९६. तांहां - त्यां
९७. त्रसणा - तृष्णा
९८. तरणी -
९९. संजलनू - संज्वलन (कषायनो एक प्रकार)
१००. प्रत्याख्यान - कषायनो एक प्रकार
१०१. मारइ - मारा
१०२. बीहता - डरी गयेला
१०३. पइठु - प्रवेश्यो
१०४. तिरी - तिर्यंच
१०५. थोभ - रुकावट
१०६. आलि - श्रेणि(?)
१०७. सख - सुख
१०८. अवृ(विर)ति - नियम रहित-पणुं
१०९. वरति - प्रवर्तवुं
११०. ध्रसूकि - वागे
१११. मादल - मृदंग (एक वाद्य)
११२. शृंगी - शींगडामांथी बनेलुं एक मुखवाद्य
११३. भूंगल - वाद्यविशेष
११४. नफेरी - नानो ढोल, शरणाई, प्रकारनुं वाद्य
११५. सरति - (श्रुति?)
११६. तूरे - एक वाद्य
११७. तवल - एक प्रकारनुं मुखवाद्य
११८. दमामां - नोबत
११९. सोहम - सुंदर (?)
१२०. साहावा - शोभायमान थया (?)
१२१. माम - मोटाई
१२२. अम - एम
१२३. टंका - एक सिक्कानो प्रकार
१२४. तंबोल - पान
१२५. पनि - (पुण्य?)

१२६. अमीअ-मि – अमृत मय
१२७. लोटा –
१२८. थापा – थाप्या
१२९. दुःक्रित – दुष्कृत
१३०. विगि – विगय (घी वगेरे)
१३१. सोनि –
१३२. मावित्र – मात-पिता
१३३. राढि – बूम, राड
१३४. पाखलि – पाछळ
१३५. किर – केर
१३६. कंथेर – एक वनस्पति नाम
१३७. कसुं – केवुं
१३८. भवाडि – देखाडे (?)
१३९. विनि – विनयथी
१४०. भ्रींगार – कळश
१४१. धोरिधर – अग्रणी (धुरा धारण करनार)
१४२. धुली परबि – धोळी परबे
१४३. कपडवाण – कपडवंज (?)
१४४. प्राहांतिज – प्रांतिज
१४५. हसूं – (मूळमां आ नंबर जडतो नथी)
१४६. खीरोदधि – क्षीर समुद्र
१४७. पाइ – पगे
१४८. खोट – (अखरोट?)
१४९. लोढ – मोजां

रासगत पाटणस्थ जिनालय सूचि

क्रम	स्थान नाम	चैत्य	भग.नु नाम
१.	खराखोटडी	१	—
२.	अष्टापद	१	चंद्रप्रभ
३.	खरतर	१	शांतिनाथ
४.	मोढवाड	१	चंद्रप्रभ
५.	[चिंतामणि पाडो]	१	चिंतामणि पार्श्व
६.	पीपल	१	—
७.	नागमढि	१	—
८.	ऊंची सेरी	१	सावकु पार्श्वनाथ
९.	[पंचासर]	१	पंचासर पार्श्वनाथ
१०.	हरखभवन	१	शांतिनाथ
		४	अन्य
११.	खारिवाव	२	वीरजिन शांतिजिन
१२.	सालवीवाड	१	—
१३.	गोलवाड	२	—
१४.	पूनावाड	१	—
१५.	सतरीकवाड	१	—
१६.	दाणअगवाड	२	रिषभजिन
१७.	कलरवाड	१	—
१८.	कूरसीवाड	१	—
१९.	कईआवाड	१	—
२०.	वीझावाड	१	—
२१.	त्रिसेरी	३	पार्श्वनाथ नेमिनाथ —
२२.	कटकीआवाड	३	आदिनाथ कंबोई पार्श्वनाथ शांतिनाथ

क्रम	स्थान नाम	चैत्य	भग.नु नाम
२३.	लटकणपाडो	१	—
२४.	खेतलवसही	१	पार्श्वनाथ
२५.	संघवीपाडो	४	—
			—
			—
			—
२६.	करणपाडो	२	शीतलनाथ
			शांतिनाथ
२७.	[भाभापाडो]	१	भाभा
			पार्श्वनाथ
२८.	धूली परबना महत्त्वने लीधे (गोलवाड)	१	मुनिसुव्रत स्वामी
२९.	सईवाड	१	महावीरस्वामी
३०.	ढंढेरवाड	१	"
३१.	कोकावाड	२	कोल्ह(का)- पार्श्वनाथ
३२.	फोफलीयावाड	१	आदिनाथ
३३.	?	४	—
३४.	त्रांगडीआवाड	१	पद्मप्रभस्वामी
३५.	मणिहटी	१	—
३६.	तंबोलीवाड	१	—
३७.	- वाड	१	—
३८.	खरतर	१	शांतिनाथ
३९.	सेठ[नो] पाडो	१	आदिनाथ
४०.	भरथपाडो	१	"
४१.	कंसारावाड	१	-
४२.	सगरकूड	१	
४३.	साहावाड	२	पार्श्वनाथ

क्रम	स्थान नाम	चैत्य	भग.नु नाम
४४.	भिसातवाड	१	शांतिनाथ
४५.	नारिंगपुर	१	-
४६.	मोढ मोढ	१	-
४७.	जोगीवाड	१	नेमिजिन
४८.	वीजलकूइ	२	मल्लिनाथ
४९.	माणिकचोक	१	
५०.	विसावाड	१	
५१.	[बं]भ[ण]वाड (?)	१	-
५२.	वीरमवाड	१	शांतिनाथ
५३.	कसूंबीआवाड	१	-
५४.	वाचरी ?		
५५.	साणीसर	१	-
५६.	मफलीपुर	१	-
५७.	हबतिपुर	१	-
५८.	हंसापुर	१	-
५९.	नंदापुर	१	-
६०.	वाडी [पुर?]	१	-
६१.	दोलतिपुर	(?)२	आदिनाथ
			पार्श्वनाथ
६२.	मगलीपुर	१	मुनिसुव्रत- स्वामी
६३.	आनावाड	१	-
६४.	वडली	२	शांतिनाथ
६५.	कुणगिरि	१	चंद्रप्रभस्वामी
६६.	कत[उ]पुरि	३	-
			-
			-
६७.	वावडी	१	-

पूज्यश्रीना श्रावकोना गामना नामनी सूचि

(अप्रसिद्ध गामना नामोनी सामे प्रश्नार्थ छे.)

१. पाटण
२. अमदावाद
३. चांपानेर
४. खंभ - खंभात
५. डीसा
६. वीसलनगर
७. साबली
८. ईडर
९. कपडवाण-कपडवंज
१०. हरसुर - हरसोल
११. वीजापुर
१२. प्राहांतिज - प्रांतिज
१३. कांकरेचीय - ?
१४. जालोर
१५. अखइगढ - ?
१६. सीरोही
१७. नडुलाइ - नारलाइ
१८. सोजित
१९. पाली
२०. कुंभलमेर
२१. जोधपुर
२२. तिवरी
२३. महिकूं - ?
२४. नागोर
२५. समीआणु - ?
२६. लाहोर
२७. सातमेर - ?
२८. सौरीपुर
२९. मथुरा
३०. जगहरवाडी - ?
३१. ढूंक - ?
३२. ढोडी - ?
३३. ढीली - दिल्ही
३४. महेसाणा
३५. वसंतपुर
३६. मेवात - मेवाड
३७. आहड - आयड
३८. जाउर - जावरा (?)
३९. चाभड - ?
४०. छत्रकोट - ?
४१. डूंगरपुर
४२. जवाव - ?
४३. आंतरी - ?
४४. सागवाडु - सागवाडा
४५. बांसवाडु - बांसवाडा
४६. मालव - मालवा
४७. चंदेरीसी - ?
४८. सारंगपुर
४९. मगाउर - ?
५०. बाहादुरपुर
५१. वइरसीऊं - ?
५२. दगवाड - ?
५३. खारखा - ?
५४. जासलपुर -
५५. सगवाड - ?
५६. सीरजपुर - ?
५७. आष्टा
५८. गोलाण
५९. मोहण - ?
६०. सीणोर

६१. जीरापुर - जीरावला ?
६२. करुजंन - (करजण?)
६३. थरभसुदा - ?
६४. नलखेट -
६५. पीपलनयर
६६. माछिलपुर - ?
६७. आगरा
६८. दधालीकुं - ?
६९. मघावाड - (मगरवाडा?)
७०. मगसी - मक्षी
७१. कानड - ?
७२. रणथंभोर
७३. कालंदु - कालिंद्री ?
७४. जासलपुर - ?
७५. ऊज्जैन
७६. सादलपुर
७७. बहादुरपुर
७८. देवास
७९. देपालपुर
८०. कूंडी -
८१. गोरी -
८२. गागछा - ?
८३. मघवा - ?
८४. मगसी - ?
८५. वलहडी - ?
८६. पीठ - ?
८७. खोपरुं - ?
८८. दसुर - ?
८९. मांडव
९०. धार
९१. लूणहरुं - ?
९२. राडीपुर - ?
९३. खित्रीकुंड - क्षत्रियकुंड
९४. राजग्रही
९५. चंपापुरी
९६. पावापुरी
९७. भद्दिलपुरी
९८. हथिणापुर-हस्तिनापुर
९९. विनीता
१००. वाणारसी
१०१. चंद्रावती
१०२. सीहपुर
१०३. कंपिलपुर
१०४. मथुरा-?
१०५. रतनपुर -
१०६. काकंदी
१०७. आसेर - ?
१०८. भाभर
१०९. बरानपुर - बुरहानपुर
११०. नीझरि - नीझर
१११. देवगिरि
११२. कुंकण - कोंकण
११३. सूरत
११४. रानेर
११५. घनदीवी - गणदेवी
११६. वलसाड
११७. चेउल - ?
११८. डभोल - ?
११९. मलबार
१२०. हरम - ?
१२१. माहिम -
१२२. दीवा
१२३. भडकलू - ?
१२४. घोघा
१२५. गुंदी
१२६. दीव

१२७. ऊना
१२८. देवकु पाटण – देलवाडा
१२९. वेलाउल – वेरावळ
१३०. मांगलपुर – मांगरोळ
१३१. कुंतीआणु – कुतियाणा
१३२. जीरणगढ – जूनागढ
१३३. नागनु – ?
१३४. पालीताणा
१३५. राणपुर
१३६. धुलका – धोळका
१३७. वीरमगाम
१३८. दैकावाडु – देकावाडा
१३९. राधनपुर
१४०. महिमदावाद
१४१. तरवाड – तेरवाडा

गूढा-प्रहेलिका-समस्या-हरियाळी

— सं. उपा. भुवनचन्द्र

त्रण पानांनी एक प्रतमां संगृहीत गूढा अने प्रहेलिकाओनुं एक संकलन अहीं प्रस्तुत छे. उकेलो प्रतमां आपेला छे. ज्यां नथी आपेला, त्यां कां तो खाली जगा राखी छे, कां तो शोधीने उकेल आप्यो छे. प्रत सुन्दराक्षरी छे, लाल अने काळी शाहीथी लखाई छे. लेखनसमय १७मो सैको जणाय छे.

गूढा

बनगिरि बसतु सीह, सीह नहि पण अति अणियालू,
अति अणियालू तीर, तीर नहि पणि तन कंटालू;
तन कंटालू स्याह, स्याहं नहि पणि जलि ऊपनु,
जल ऊपनुं मच्छ, मच्छ नहि, हरी पंडुर वनु;
हरी पंडुरवनु चंद, चंद नहि पणि गंध धरंतु,
गंध धरंतु वक्ष (वृक्ष), वीक्ष (वृक्ष) नही पणि नगर भमंतु,
नगरी भमंतु दीप, दीप नही पणि करफरसि मीह,
चतुर **निका** नर कहि कवण जो जगदीश्वर पिअ लवि दीठु. [ ] १
नयरी भमंतो दीठ मि, केसरि चडिउ हथि;
जल बूडि पथरि तरइ, तव लगि परमथि. [ ] २
कमल थकी वा ऊपनी, अंगविहूणी नार;
नर **निका** नत भोगवइं, जल-चल माय विचार. [ ] ३
नामि नारि पुरुषाकार, हार-तिलक-कुंडल शृंगार;
बहुलु भोग नही तस पाप, जोगी-यती जपइ नीका जाप. [ ] ४
पुरुष थकी एक पुरुष ऊपनु, संख नही पणि उजल वनु;
चोल नहि पणि आपि रंग, अगनि नही पणि बालइ अंग.
राउ नही [पण] राणीस्युं भोग, मार्युं-कूटउं न करइ सोग;
नर **नीका** कहि रिदय विचारि, मछ नही पणि जल आधार. [ ] ५
एक पुरुष पाणउनु, तेहनि भोजन पाणी;
राय इगणि रमतो दीठउ, हाथिइं राखइ ते वर राणी. [ ] ६

अचर चरि, चर परिहरि, चरिनि चरवा जाइ,
बारि मास विलोइइं, नवि दूझइ न वियाइ. [ ] ७
आगिथी ज [जा]इ, पा भीजइ;
कहु हरिआली कइ, ते सुवा दीजइ. [ ] ८
एक पुरुष पग विणउ जाइ, नारी केरु धायो;
ए हरीआली ते कहइ, जे हुइ कुलनउ जायो. [ ] ९
शंखसवर्ण मोतीवर्ण, मुझ प्रिय दियं संघर्ण,
हाट न पाटण गाम न सीम, परण्यो मागइ आपुं किम. [ ] १०
गगन सरोवर संखीइ खणु, वण वरसाति पाणीइ भरु;
त्रणपाल तिहां निरमल नीर, इनो अर्थ कहइ ति बावन वीर. [ ] ११
जिनइं हुं फाडी, ते मइं फाडो;
मनमान्यो तां हसे ज रमाडो;
कर साहिनइ लीधो छे वडो,
सखी ! कोई वालम ? ना बाइ, केवडो. [केवडो] १२
जिणइं हुं सोही, ते मइ सोहा;
मुझ सोहा -- भुवन मोहा;
मुझ ओर लागो न करि भार,
सखी ! कोइ बालंभ ? ना बाइ हार. [हार] १३
इक नारी मुख काजल वरणी,
हिअडि प्रगट बोलि छानी;
पर कारण ते आप छेदावे,
मूरख सरसी गोठ न भावे. [कलम] १४
पावन स तिके नलन,
नलन नहि पणि पंच ज हथी;
पंच ज हथी देव्य,
देव्य नही पणि गंग झरंती,
गंग झरंती नीर, नीर नहि पण अति अनिआली.
अति अनीआली छरी, छरी नहि पणि कनपीआली,

कनपीआली कहीए गोलनी,
गोलनि नही पणि पंडितनइ घरि वसी. [ ] १५
दही नहीं पणि दहियावन्नु
मछ नहि पण जल उपंनउ;
पुत्र नहीं पणि -- उ दीजइं,
बलद नहीं पणि नाथी लीजइ. [ ] १६
पडतां पुरुष उ -- नारी,
भर जोबनमां परी पीआरी;
पाकणवेला पुरुष उ नाम,
कहु अर्थ के छांडउ गाम. [ ] १७
पडी पणि भागी नहि, हुआ कडका चार;
कर्ण हिआली पट्टवी, राजा भोज विचार. [रात्रि] १८
जीवता नइ गल, मूउ वलगो;
जीवतो पीटइ, मूओ पोकारइ. [ ] १९
आठे नारे एक नर, चहुं नरे नर होइ;
सो नर होइ पधरो, तु अवर नव कोइ. [दा०] २०
घर बिठा तु जउ उ मंत्ति धाई,
चउटा मांहि ध(धा)यो साहि;
अधवचि आवी आई आई करि,
पुरि बिठि सहू जोवा मलि. [चु०] २१
पढम अक्षर विण सोनुं लीजइ,
मध्यक्षर विण मंडलि वाजइ;
अंतक्षर विण सज्जन सोहावइ,
दंतविहूणी कामि न आवइ. [कांकसी] २२
जेणि वनि पवन [न]संचरइ, पंखि न बइसइ कोई;
ते वननां फल आणजो, जु साचु हुइ नेह. [मोती] २३
अपूर्वोऽयं मया दृष्टः कान्ते कमललोचने !
सो मध्ये यदि जानासि भवामि तव किंकरः ॥ [अशोक] २४

आदि अख्खर विण बालिक कीजइ,
मध्याक्षर विण माणस दीजइ;
अंत्याक्षर विण पुहवी विदारइ
सीयालइ ते सुख देखाडइ. [सीरख] २५
आदिख्खर विण जग जीवाडइ,
मध्यक्षर विण जग संहारइ;
अंत्यक्षर विण सबकइ मीठउं,
देखि सीख ! मइं नयणे दीठउ. [काजल] २६
किंकव्वं देइ रसं? को दुख्खं देइ चक्कवायस्स ?
असईण किं पियारं ? वेसाण य वल्लहं किंच ? [अर्थमंत] २७
एक नारी अति शामली, पाणी मांहि वसंती.
ते तम दरसन देखवा, अलजो अति दि करंती. [आंख] २८
गजकेसरनी गाबड वालइ,
वाहिण सीहण अनइ साथ खेलावइ;
कामिण कटक करि वरसालि, देसोटां(?) तु दील न टलइ;
मंडली कानइ मंदर दीठी, अमी आरोगइं ऊंची बिठी;
इन्द्र देवन[इ] चमर ढलावइ, हामियो भणइ ते नार देखाडो. [मा.] २९
एक नारी नव कडका कीधी, बइ पुरुषनी ऊढण दीधी;
बिइ पुरुषनुं एक ज नाम, कहु अर्थ के छांडो गाम. [कांचली] ३०

हरियाली

पाणीथी नर ऊपनो, पंचम ज्ञान समाय रे;
रूप विविध धरइ ते सही, बूझो पंडित राय रे; १
करचरणादिक तस नही, नही तस विवेक विचार रे;
नरवर सभामांहि खेलतां, प्रीछो पंडितराय रे; २
भेदभेदादिक बहु कहइ, अतीत अनागत वात रे;
सकल सुरासुर सेवता, बूझो० ३
दुख जगि हरइ ते घणां, भविजन उपसंम ठाम रे,
चउसठि कलामांहि जाणजो, प्रीछो० ४

मर्म(?)–लि जन वसि करइ, हृदयकमल वरि वास रे,
अर्थ विमासीनिइं बोलिइं, बूझो पंडित० ५
सुगुरु संयोगइं ते पामिइं, सकल संसार स्वरूप रे,
मरण-जरादिक दुख हरइं, प्रीछो पं० ६
बेह नर आठ संसारि छइ, तेणइ हिंडइ परिवार रे,
ते नरसुं करो प्रीतडी, शिवसुख पामो अपार रे; ७
शिष्य नीका मुनिवर तणु, इम कहिइ मुनि जीवराज रे;
चतुर सुजाण सो जाणज्यो, बूझो पंडित राय रे; [अक्षर] ८

C/o. जैन देरासर
नानी खाकर (कच्छ)

विनंतिपत्र (सचित्र)

लिपिकार : आचार्य श्रीविजयजगच्चन्द्रसूरि
(डहेलावाला)

मु. गुलाब वि.जीनां शिष्य कविदीपवि.म.नी आ रचना छे. मेडताना संघे आ.श्री जिनेन्द्रसूरिजी म.ने विनंतिपत्र लख्यो छे. जेओ सं. १८६७मां विरमगाममां विराजित हता. पत्रना प्रारम्भमां १४ सुपन वगेरेनां अतिरम्य-आंखने आकर्षी ले एवां अद्‌भुत चित्रो छे. दरेक ढालमां अलग-अलग विषयोनुं वर्णन छे, तदन्तर्गत १ थी १०८ सुधीनी संख्या, सूरि भ.नां अद्‌भुत विशेषणो इत्यादि मनोहर शैलीथी विनंति कराई छे. लंबाई आशरे ४० फुट छे अने पहोळाइ अंदाजे १० इंच छे... आ विज्ञप्तिपत्र कोलकताना ९६, केनिंग स्ट्रीटना संघना भण्डारमां छे. तेनो उपयोग करवा आपवा माटे ते संघना कार्यवाहकोनो आभार.

विनंतिपत्र

॥ ६०॥ श्री सद्‌गुरुभ्यो नमः

श्रीमज्जिनराज वाग्वादिनी सद्‌गुरुचरणकमलं शरणीकृत्य ॥

[अथ श्री आदिजिन स्तुतिः]

स्वस्ति श्रीरमरासुरावनिचराधीशोत्तमाङ्गैर्नतं ।
लोकालोकविलोकनैकरसिकं, धात्रादिदेवैः स्तुतं ।
दृष्ट्वा यं चरणाश्रये स्थितिमती, चक्रेश्वरी रूपभाक् ।
जाता भक्तजनेष्टदा जयतु स श्रीनाभिजातो जिनः ॥१॥

अथ श्रीशान्तिजिनस्तुतिः ॥

शशाम यस्मिन्नचिरोदरे च
चिरन्तनो रुक् प्रचुरं(र) प्रचार(रः) ॥
आयात एवेतदुदारचोद्यं ।
जातं स शान्तिः शिवतातिरस्तु ॥२॥

अथ श्री नेमितीर्थकृद्वर्णनं ॥

राजीवदृग् योषिदुदारराजी ।
ललाम हित्त्वात्तयमो रराज ॥

राजीमती योखिलयोगिराजो
भूयात्स नेमिर्भविकाष्टसिद्धयै ॥३॥

अथश्रीपार्श्व परमेश्वरस्तवः ॥

पद्मा शक्तिमती तथैव धरणो यस्यांघ्रिसेवापरौ ।
पार्श्वं नैव जहाति भक्तिनिरतः पार्श्वाभिधो यक्षराट् ॥
जप्तं नाम यदीयमुज्वलधिया कष्टाष्टकध्वंसकं
विश्वाभीप्सितदं भवेज्जयतु स श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरः ॥४॥

अथ वर्द्धमान जिनराज वर्णनं ॥

येनातारि समांसुधारिनिकरः सद्देशनादानतः
कालेनल्पकुवादिजल्पविषये, मिथ्यांधकारावृते ॥
उद्यद्वासरराजमण्डलनिजं, जागर्त्ति यच्छासनं ।
सोयं श्रीचरमो जिनाधिपवरो, जीव्यादनन्तर्द्धिदः ॥५॥
एवं पञ्चजिनाधीशान्, सुराधीशार्चित क्रमान् ।
अभिष्टूय प्रकृष्टेन, भावेन कृतमङ्गलान् ॥६॥

अथ गुज्ज[र्ज]रदेश वर्णनं ॥

दूहा ॥ सारद मात मया करी, पणमी सदगुरु पाय ।
लेखपद्धति हिव वर्णवुं, गावु गच्छपतिराय ॥१॥
जंबूद्वीप दक्षिण दिसै, भरतक्षेत्र मोझार
गुर्जर देश सुहामणो, **वीरमनगर** उदार ॥२॥
धर गुर्जर सुंदर धरण, हरणदुःख-सुखठांम ।
हरखित सुर वासो वसें, जेहवो गुण तस नाम ॥३॥
सहु देशां माहै सिरे, सुरपति रच्यो निजहत्थ ।
वासवियो हर्षे करी, सुघड करण निज सत्य ॥४॥
गुण प्रारंभु गुज्जरतणा, लक्ष्मी कीनो वास ।
जुगति वसाव्यो जेह धरः, अधिकी पूरण आस ॥५॥
वीरमनगर सुहामणो, वन वाडी जगसार ।
कवि ओपम कासु कहै, पसरी जग विस्तार ॥६॥

तेहिज गुज्जर देशमें, वीरमनगर सुनाम ।
गुणमणिरयणकरंड ज्युं, भर्यौ रहे सुखठाम ॥७॥
चिहुं दिसि हरियाली खुली, नीरतसवरनीर । [नीरत वरसत नीर]
सलिलपरसरै नवलतरु, ओटै कीया गुहीर ॥८॥
शीतल छाया तरु भला, जिम माया फल वेल ।
छंदा कर राखे सदा इणविद्ध मननो मेल ॥९॥
सूरज चंप्र[द्र]ज देखनै, हरखित हुवै निसदिस ।
धण धण इण नगरै नरा, वसै सुपवन छत्तीस ॥१०॥

देशी भटियाणीरी [ए देशी]

नगर वीरमपुर सोहैं हो, मन मोहै सुरनरवृंदना,
गढ मढ तोरण मंड ।
उंची गत विधिभीति हो बहु दिप्तिकीर्तिकंगुरा,
श्वेतवरण चंद्र खंड ॥१॥ नगर...
क़ंगुर पंक्ति विराजै हो अति छाजै सूरज किरणना ।
मानु निकस्या आज ।
सहसकिरणना मनमै हो ते जांणे बीजो चंद्र छै ।
पिण रवि तीजो माझ ।.... नगर... ॥२॥
हिव पुर परसिर खाई हो वडछाई धाई बहु जलै, ।
पातालंबर पैठ ।
दरवाजै भलि भुरजां हो जिस दुरजननै मन भयरवा ।
थूल पृथुल गुरु गृठ । ... नगर ... ॥३॥
आगै पुरनी मंडप हो कवि मुखथी जिमतिम वर्णवे ।
नगर घरोघर मांन ।
उंचा मंडप अडिया हो नमि गडिया सूरज किरणनै ।
मांनु रवि जोवण ठांन । ... नगर ... ॥४॥
मंदिर सवि छाजै हो मानु राजै स्फटिक रयणतणा
जाली गोखां जोड ।

नवल महिल घन मेडी हो मिल बेडी बंगला उज्वला ।
करणी विराजै कोड ॥ ... नगर ... ॥५॥
चहुटा मंडप राजै हो विराजै मारग चोपडा ।
श्रेणि हटाउल ओट ॥
फिरता छत्रीसे पउणा हो नहि ऊणा घन घण सुंदरा ।
व्यापारी बहु मोट ॥ ... नगर ... ॥६॥
चपल तुरंगम सोहै हो मन मोहै गयवर गाजता ।
रथ सुपालखीयानी जोर
राज मारम(ग)मै तरुणी हो गतवरणी गयवरनी सदा ।
चालती माचसमां चोर ॥ ... नगर ... ॥७॥
मिलती हिलती नारी हो सुरनारी परै सोभती ।
फिरती चोहटां माह ।
लेजो बहु छै भाजी हो मन राजी देखीनै हुवै ॥
वैगण साग विकांह । ... नगर ... ॥८॥
खारिक पिस्ता खीजूरा हो, मन जूरा किस्ता हुवे सदा ।
पुंगीफल बहु मोल ।
अंबा रायण केला हो, बहु मेला मेवा सामठा ।
लेवे लोक अमोल । ... नगर ... ॥९॥
जरीयां रेसमी गंठा हो भरि बेठा थिर मासा वटु ।
पट्टु नीला लाल ।
पंच रंग पट फांमडीयां हो भलजडियां वींटी नग भला ।
भारी मोला माल । ... नगर ... ॥१०॥
साडी छीटां सुहावै हो, मन भावे ओढण कांबली ।
देवकुसम वलि दाख ।
जातीफल तज चीणी हो वलि फीणी षुरमा जलेबीयां
लाडु घेबर साख । ... नगर ... ॥११॥
देहरा च्यार विरांजै हो गाजै नादे अंबरा ।
उंचा अति असमान ।

कोरणी अति मनहरणी हो वरणी नहि जाये सही
गांवत गंधप गान । ... नगर ... ॥१२॥
शांतिनाथ महाराजा हो, मन भाया सुरनरइन्द्रने ।
श्री प्रभु **पार्श्व जिणंद** ।
परतिख परता पुरे हो दुख चूरे भवि जन वृंदना ।
आपे सुख अमंद । ... नगर ... ॥१३॥
सरणागत साधारे हो मुनि धारै अनुभव ध्यानमै
आलंबन जगतात ।
वीरम परसर राजै हो दिवाजै राजै महीपति
श्रीसेत्रुंजानी जात । ... नगर ... ॥१४॥
श्रावक बहुते युक्ति हो, गुरु भक्ति नित प्रति साचवे ।
पूजा विविध प्रकार ।
सत्तर भेद ने स्नात्रै हो शुचि गोत्रै आठ प्रकारसुं
गावै मंगल च्यार । ... नगर ... ॥१५॥
माता इश्वर गणपति हो, फणपति भैरुं देहरा, सहसलिंग तलाव ।
जोगण चोसठ मंडी हो, ग्रहचंडी बावन वीरना, पूजै शिवमती भाव ॥१६॥
गच्छ चोरासीना साला हो ध्रममाला गुणह गंभीरनी ।
साधु घणा हिय ज्ञान ।
सामायिक बहु पोसा हो, नहि थापणमोसा को करो ।
जैन धर्म शुभ ध्यान । ... नगर ... ॥१७॥
एहवो पुरवर वसतो हो, मुख हसतो इन्द्र नगर परै
नहि एहवो वली कोय ।
इक दिन हर्ष वधाई हो, तिहा आई श्रीजी साहबा ।
गच्छधारी तुम सोय । ... नगर ... ॥१९[८]॥
विनती करि बहु वारि हो, हित धारी नहि तुमे साहबा ।
टोकरशेठ कहै जाण ।
हिवै तुमे पूज[ज्य]पधारो हो, अवधारो मंगल च्यारने ।
संघ आग्रह बहुमान । ... नगर ... ॥१९॥

घणा महोच्छव वाजै हो, दिवाजै गाजै आवीया
वीरमगामनै धाम ।
घर घर मंगल गाया हो वधाया श्रीजी साहिबा ।
दीपक मुनि कहें ठाम । ... नगर ... ॥२०॥

॥ दूहा ॥

इण पर वीरमसहरमै, **फतेंसिंघ बाबोराव** ।
धरम नीति प्रतिपालणो, वखत वडै सुभभाव ॥१॥
सदा रहो शिवभक्ति उर, क्षत्री धर्मसु भाव ।
रीत नीत जालम मही, गहिरो **फतेंसिंघराव** ॥२॥

॥ छप्पय ॥

महासूर सधीर वीर चिहुं दिसां वदीतो ।
तेजपाल तरवार च्यारदिस सहजां जीतो ।
न्याय नीतमै निपुण दीपै दातार दिन प्रत ।
धरम धुरा धारणो हेक शिवभक्ति हुता हिक फतेसिंघ गहिरो गुणां ।
वड वखट वाटै वरो सूरज्यो रहो सालम मही ।
कोड जुगां राजस करो ॥१॥
सोबादार सदागुनी, वखतवंत नरनाथ ।
श्रीजीसाहिब वीनती, पउधारो नरनाथ ॥१॥
करि वंदण श्रावक कहे, पउधारो पुरमांह
जनम सफल होसी खरो, धरम कलप विकसांह ॥२॥
इम सुण श्रीजी उठीया, मंगल कलस वंदाय
जय जय शब्द उचारीया, भट्ट चरण शुभवाय ॥३॥

॥ काव्य ॥

आर्ये भारत खण्ड मण्डन निभे श्रीमज्जनोद्यत्प्रभे ।
शर्व्वाणीस्थितिसोदये धनिजनैस्सर्वत्र वित्ताह्वये ॥
देसे गुर्जरसंज्ञिके नरपति प्रोढप्रतापोदये ।
दुष्टानीतिदुरीति भीतरहिते...[श्री] विक्रमे पत्तने ॥१॥

॥ अथ श्री जिनेन्द्रसूरीश्वराणां वर्णनं ॥ ॥ काव्यम् ॥

माधुर्येण वचः श्रिया नयनयोर्भालस्य भाग्योदये
कान्त्या कांततनोर्मनोऽमलतया सिद्ध्या कराम्भोजयोः ॥
कर्तुं जैनमतानुगं समजगद् येषां क्षितौ विहृति
स्ते पूज्या जिनशासनारुणसमाः साक्षाद्गणेशोपमा ॥१॥

अथ छंद माणकदंड ॥

श्री पूज्य राज, गुणके जिहाज, जिम इंदुराज, बुध विमल साज ।
विद्या भंडार, अनुपम आचार, संयम सुधार, जुगतलिविचार ।
शीले सरूप, त्रिण भवन भूप, गुणके गुहीर, त्रिणरत्न सीर ।
मेरु सुधीरः, परत्रियावीर, आनंद कंद जिम सुधा चंद ।
विलसो विवेक, चारित्रटेक, धर्महं सुरिंद, तिण तखत चंद ।
दीपकवृंद, सुखस्नेहकंद, अष्टकर्मके भांजणहार, महिमावंत महंत ॥

॥ दूहा ॥

गुणं केहवा तुमचा कहु, एक जीभ जो होय ।
आचारिज गुण आगलि, एकसो आठहि सोय ॥१॥

ढाल २जी, पास जिनेसर साहिबा रे ए देशी ॥

पूज्याराध्यतमो तमा रे, वंदनीक पूजनीक
सकल गुणे करी शोभता रे गच्छपतीयां सिरटीक ॥१॥
जाणो जिनेन्द्रसूरीश्वरु रे ॥
भारती कंठ विराजता रे, कलि गोतम अवतार ।
अबोध जीव प्रतिबोधवारे, उदयो दिनकर सार ॥२॥ जाणो० ॥
इकविध असंजम तणा रे, टालण गुणमणि खाण ।
वाचक दोयविध धर्मना रे, तीन तत्त्वना जाण ॥३॥ जाणो० ॥
चार कषायने जीपता रे, पंच महाव्रतधार ।
रक्षक षटविध जीवना रे, भय सप्त दीध निवार ॥४॥ जाणो० ॥
टालक आठे मद तणा रे, नव ब्रह्मचर्यना धार ।
दशविध यतीधर्म धारणा रे, वाचक अंग इग्यार ॥५॥ जाणो० ॥

बारे उपांगने वाचता रे, तेरह काठीया जाण ।
चवद विद्यानै जाणतां रे, सिद्ध भेद पनरै वखाण ॥६॥ जाणो० ॥
सोल कला शशि निर्मलां रे, सत्तरैह संयमपाल ।
पापस्थानक अढारना रे, नेह निवारण साल ॥७॥ जाणो० ॥
उगणीस दोष काउसग तणा रे, वीशस्थानक तप जाण ।
श्रावक गुण इकवीसना रे, वाचत हो वखाण ॥८॥ जाणो० ॥
परीसह बावीस जीपता रे, विषय तज्ये तेवीस ।
आणा जिन चोवीसनी रे, पालो वीश्वावीस ॥९॥ जाणो० ॥
भावना पचवीस भावता रे, कप्पाज्झयण छावीस ।
उपदेशक अंगे कीया रे, मुनि गुण सत्तावीस ॥१०॥ जाणो० ॥
मतिज्ञान भेद अठावीसना रे, उपदेशक मुनिराय ।
गुणतीस पापश्रुत तणां रे, संग नही समुदाय ॥११॥ जाणो० ॥
मोहनीयना स्थानक अछै रे, तीस भेद सुविचार ।
सिद्धभेद इकत्रीसना रे, बत्रीस लक्षण धार ॥१२॥ जाणो० ॥
तेत्रीस आसातन तणा रे, टालक हो निसदीस ।
चोत्रिस अतिसय जाणता रे, वाणी गुण पैत्रीस ॥१३॥ जाणो० ॥
छत्रीस उत्तराध्ययनना रे, उपदेसक गुरुराय ।
गणधर कुंथु जिणंदना रे, सैत्रीस जाणो भाय ॥१४॥ जाणो० ॥
खुड्डिय विमाणना वर्गना रे, उद्देशक अडतीस ।
समय क्षेत्र मांहै अछै रे, कुलगुरु गुणचालीस ॥१५॥ जाणो० ॥
देहमान श्री शांतिनो रे, धनुष कह्यो चालीस ।
पढम महलीय वर्गना रे, उद्देशा इकतालीस ॥१६॥ जाणो० ॥
बयालीस कालोदधि रे, सूरज छै उद्योत ।
कर्मविपाकना देस छै रे, तयालीस श्रुतबोध ॥१७॥ जाणो० ॥

दूहा ॥

उद्देशा वगें कह्या, चोथै चम्मालीस ।
धर्मनाथ निज देहना, धनुषह पैतालीस ॥१८॥
बंभीलिपिना जांणीयै, अक्षर छयालीस ।
अग्निभूत ग्रहमै वस्या, वर्ष जु सैतालीस ॥१९॥

चोदमा धर्मजिणंदना, गणधर अडतालीस ।
तेरेंद्रीनो आऊखो, धनु(दिन)गुणपचास जगीस ॥२०॥
देह अनंतजिणंदनो, धनुष भलो पचास ।
उद्देशा इक्कावना, नव ब्रह्मचर्यना भास ॥२१॥
मोहनीय कर्म तणा कह्या, सूत्र भला बावन्न ।
पंच अनुत्तर ऊपना, वीर सीस तेपन्न ॥२२॥

ढाल ३जी, पाडोसणरी देशी ॥ अे तो नेमिजिणंद छद्मस्थे हो योगीश्वर ॥

दिन चोपन्नै हो(२) विचर्या महीयल मुदा ।
ए तो वीरजिणंद अंतकालें हो ॥ जो० ॥
कह्या अज्झयणा हो, (२) पंचावन शुद्ध उदा ॥२३॥
एतो विमल जिणंदना जांणो हो, ॥ जो० ॥
गणधर शुद्धे हो (२) छप्पन गुण मणिधरा ।
त्रिण गणिपीटक विमल कर जाणो हो ॥ जो० ॥
कह्या अज्झयणा हो (२) सत्तावन शुभवरा ॥२४॥
ए तो ज्ञानावरणी ने वेदनी हो ॥ जो० ॥
आयु नाम जाणो हो (२) अंतराय शुद्ध लहो ।
उत्तर प्रकृति ए पांचनी जाणो हो ॥ जो० ॥
अठावन मानो हो (२) शास्त्रै सुधै वहो ॥२५॥
इक रित चंद्र संवच्छर जाणो हो ॥ जो० ॥
गुणसठि लहिये हो (२) निसिमानमें सदा ॥
ए तो विमल जिणंदनो जाणो हो ॥ जो० ॥
साठ धनु कहिये हो (२) देहमान समै मुदा ॥२६॥
चंद्र मंडल इगसठ जाणो हो ॥ जो० ॥
भागें भजीयें हो (२) लहियो शुभध्यानथी ।
वलि शांति जिणंदना जाणो हो ॥ जो० ॥
बासठि सहस्त्रै हो (२) मुनिवर शुभमांनथी ॥२७॥
ए तो निषध नीलगिर तेसठें हो ॥ जो० ॥
करत प्रकाशा हो (२) उद्योत दिणंदजी ।

ए तो चक्रवर्ति गलामें पहिरे हो ॥ जो० ॥
चोसठिसरिया हो (२) सुध हारसुं ऐंदजी ॥२८॥
ए तों जंबूद्वीपमें जाणों हो ॥ जो० ॥
रवि पणसठै हो (२) मंडल करजोतिना ।
दक्षिण मानुषगिरमें जांणे हो ॥ जो० ॥
चंद तपंता हो (२) छासठि सुद्धसोत्तना ॥२९॥

दूहा ॥ श्री श्रेयांस जिणंदना, गणधर सतसठ जांण ।
धातकीखंड जिणंदना, अडसठ कह्या वखाण ॥१॥
सात करम उत्तरप्रकृत, गुणहोत्तर विन मोह ।
सित्तर धनु उंचापणुं, वासुपूज्य तनु सोह ॥२॥
इकोत्तर पूरव सहस, अजित वस्या गृहवास ।
कला बहोत्तर जांणीयै, विद्या लीलविलास ॥३॥
विजय बलदेवनो आऊखो, सहस तिहोत्तर वर्ष ।
अग्निभूत गणधरतणुं, आयु चहोत्तर वर्ष ॥४॥
पच्योत्तरसै केवली, पुष्पदंतना जांण ।
लक्ष छिहोत्तर पूर्वथी, भरत थयो महारांण ॥५॥

ढाल ४ ॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिणेसर भेटीयें ए देशी ॥

सत्तोतर लव एक मुहूर्तनो मान छे ।
अकंपितनुं आयु ऊठोत्तर वान छे ॥
जंबूद्वीपनी पोलनो कहीयो आंतरो ।
जोयण गुण्यासी सहस कह्यो तिहा सांतरो ॥१॥
श्री श्रेयांसनो मान कह्यो केवलमुखैः ।
असी धनुष प्रमाण लहो विधथी सुखै ॥
नवनमीया मुनि जांण कहु शास्त्रै भला ।
प्रतिमाना दिनमान लहो चित्तथी सला ॥२॥
ईक्यासी ते जाण भलीविध चित्तमै ।
देवानंदनी कूख वस्या वीरजी समै ॥

बयासी निस जाण वले शीतल जिना ।
गणधर त्रयासी शुधि क्रियागुणशुधिना ॥३॥
ऋषभदेव जिनंदना गणधर जाणीयैः ।
चोरासी शुध जांण जगत्र वखाणीयैः ॥
उद्देसा पढमांगना पीच्यासी कह्या ।
सुबुध तणा गणधार छीयासी सरदह्या ॥४॥
उत्तरप्रकृत छवकर्मनी सत्यासी सही ।
धर्मजिनंद ग्रहवास अठ्यासी जगलही ॥
शांतिजिनंदनी साधवी सहस नियासीयै ।
नेउ धनुषनी जांण शीतलजिन तनुकीयैः ॥५॥
आयु गोत्र विण कर्म छवैनी जांणीयैः ।
कहीय ईकाणुं सार हीयामै आणीयैः ॥
इंद्रभूत गणधार वरस बांणु लहो ।
चंद्रप्रभु जिणराय तिराणुं गण कहो ॥६॥
चोराणुं गणधार अजितजिनना भला ।
पिंचाणुं गणधार सुपार्श्व जिनंद सला ॥
वायुकुमारना भुवन छिनुं लख जाणीयै ।
उत्तरप्रकृति वखांण करम अठ माणीयैः ॥७॥
सत्ताणु कही भा करमनी सरदहो ।
रिषभने साथै दीक्षक निज सुत मन लहो ॥
अठाणु शुद्धचित्तशु श्रीजी जांणीया ।
जोजन सन्निनाणवै सुरगिर माणीया ॥८॥
पारसनाथनो आयु सतह वर्ष जांणज्यो ।
दसदसमीया पडिमाह तिके मन आंणज्यो ॥
एकसोएक दिनमान प्रमाण सुधारणा ।
कुल ईकोत्तर-सतनुं श्रीजी सारणा ॥९॥
बीडोत्तर वलि रुपक भेदावलि लही ।
तीडोंत्तरसत नाम ते श्रीजी सर्दहो ॥

चीडोत्तरसत राग भेद भणावता ।
पंचाधिकसत जांण कुंडलिया जणावता ॥१०॥

दूहा ॥ षट उत्तर सत तेहना, दोधक छंदसु भेद ।
इकसत साते आगला, गाथा दोधक वेद ॥१॥
मिणिया नवकरवालियै, एकसो आठ प्रमाण ।
जासु कर जपियै सदा, श्री सदगुरुनो ध्यान ॥२॥
इत्यादिक बहु गुण कह्या, जाणो श्रीजी सार ।
कविता किम गुण कर सकै, **दीपक** मन विस्तार ॥३॥ श्रीः ॥

सकलगुणमणिविरचितगात्रैः, अनवद्यविद्याविशारदैः, श्रीसिद्धान्तार्थ-स्मारकै। अस्ति-नास्तिसकलज्ञायकतत्वैः । सप्तनयवादविद्याज्ञायकैरनवद्य गद्य पद्य हृद्य समय शाब्द तर्कच्छन्दोलङ्कारगणितादिविविधतन्त्रज्ञैः । सर्वत्रलब्धि-[ब्ध] प्रतिष्टैः । विद्यामदघूर्णितवाद्योघकक्षदात्रैः । व्याकृत्यलंकृतिकोशादिभिः पाठितवैनयिकच्छत्रैः । सद्विद्यौदार्य धैर्य गांभीर्यादिगुणगणपात्रैः । प्रधारितसुराद्रिव-दातुल्यसच्चारित्रैः । करतलकलितामलकवदमलविदितसज्जैनिकतंत्रचारित्र्यशास्त्रैः । उरीकृतशिरसिजिनानुशासनशिरस्त्रै । सच्छीलशीलपुण्यसुरसरिन्नीरपवित्रैः । महामन्त्र-पञ्चप्रस्थानयुतस्मारकैः । कषायगिरिभेदनैकमहावज्रवद्वीर्ययुतैः । महामोहमल्ल जीपकैः । पंचाचारपालकैः । भव्यजनप्रतिबोधनैकमार्तण्डैः । अष्टादशसहस्र-शैलांगरथधारकैः । षट्जीवरक्षाकारकैः । सप्तभयनिवारकैः । अष्टमहामदहस्ति-भेदनैकहरितुल्यैः । दशविधयतिधर्मधारकैः । एकादशांगवाचनैकरसिकैः । द्वादशोपांगामृतवर्षणैकवनसमूहैः । श्रीवीरपट्टप्रभाकरैः । महामुनिसंसेवितचरण-जलजैः । पञ्चमहाव्रतपालकैः । श्रीमदाचार्यवर्यै । **धर्मधुरिणैः** । सकलगुण-गरिष्टैरित्यादिषड्त्रिंशत्त्रिंशतिषट्गुणोपेतैः । जंगम**युगप्र**धानैः । सकलभट्टारक-शिरोमण्यैः । पुरंदरभट्टारकैः । भाजीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री**श्री**श्रीश्री१०८ श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री **विजयजिनेन्द्रसूरीश्वरजित्कपादैः** चरणान् दल**मितः** श्रीमेदनीपुरतः समस्त संघ लिखति प्रणतिपत्रद्वारा सहस्राष्टसंख्येति वाच्या ॥ अत्र श्रीमदिष्टदेव-प्रसादाद्भव्यं। तत्रापि श्रीमतामगण्यपुण्यवतामहर्निशं भावुकं भूयादिति । यूयं गुणगरिष्ठाः । सदिष्टाः । तथा च श्रीमतां शुभवतां भवतामाध्यानमहर्निशं मयि(य)का क्रियते श्रीमद्भिरप्यहं समये स्मरणीयाः । यदुक्तं नैषधकाव्ये —

तव वर्त्मनि वर्ततां शिवं, पुनरस्तु भवतां समागमः ।
अयि साधय साधयेप्सितं, स्मरणीयाः समये वयं वयः ॥१॥

इत्यादि ज्ञेयं । तथा च कृपादृष्टिसृष्टि रक्षणीया । नो हेया श्रीमद्भिः प्रीतिरीतिरस्मदुचितं कार्यं संलेख्यं । पार्थक्यं नो विचार्यम् ।

॥ काव्य ॥

लब्धैर्गोतम प्राज्ञवान् सुरगुरु रूपै रतीनांपतिः ।
आदित्यस्य वपुः प्रभानयनयोः कृष्ण प्रियायां पुनः ॥
चन्द्रोल्लासितकंजवत् गुरुमुखं वाणीसुधासागर ।
श्रीमद् पाटपटोधरो विजयते जैनेन्द्रसूरिश्चिरम् ॥१॥

अथ वाणीवर्णनं ॥ सवैयो ॥३१॥

जाकी मधुराइं आगै सयानी लजानी सुधा जानी अपमानीत बना कवास ठांनी है ।
साकरीकौ काकरकौ रूप धरि रही छांनी योही डर राखि मनु द्राख सकुचानी है ॥
याकै पक्षपात इक्षुलोकन समक्ष लक्ष घानीमै पिलानीया तै अति ही डरानी है ।
सुनत सुहांनी सवैरी झिरहै भव्य जांनी ऐसी सुगुरु वांनी जातें वानीही हरानी है ॥१॥

अथ मरुधर देश वर्णना । भाषा छप्पय ॥

देशां सिरहर देश, वाह मरुधर वरणीजै,
वडा मरद वंकडां, जे थउ तपति जांणीजै,
असल धरम अकलंक, असल हिंदूआण आचारं,
दरसण षट देवांण, वडौ मरजाद विचारं,
तेम झि जुधांण कमधांतखत, सहिर बीआ सहि रांसि रै
जोवतां सोम सहि विधि जुगति, जे सु अलका ही रहि गीउरै ॥१॥

अथ मरुधराधीश्वर राजराजेश्वर महाराजश्रीमानसिंघदेव वर्णन ॥

मानसिंघ वडवखत, विनय नृप तखत विराजै,
नखतवंत नरनाह, रुखत जेहो इंद राजै,
गजन जिसो गजगाह, राह हिंदूध्रम रक्षण,
जैरी संक करै पतिसाह, वाह सवि वात विचक्षण,

सकबंध भूप अवसाण सिध, आण जास घर पुर अदल,
तप तेजभांण हिंदू तिलक माणदुजण आषाढमल ॥२॥

अथ मेदनीपुर वर्णनं ॥ छप्पय ॥

ते मरुधर मझतिसो, नयर मेदनीपुर नीको,
भुवण भामिनी भाल, ताण विधि रचियो टीको,
बहु गढ कोट बाजार, गयण छत्रि मंदिर गोखां,
वणे चिहु दिसि वाग, जेथ जण मांणै जोखां,
कलि कंठ केकि पिक शब्द कर, हवा लेत भोगी हलक,
दरगाह देखि चत्रभुज दरस, मानै ते तीरथ मुलक ॥३॥

सवईया ३१॥

वसें जहां च्यार वर्ण तामें तेसें जिनके सवर्ण और कोन एसा वडा सुमती कहै ॥
धर्म षटकर्म दरम्यान बडे सावधांन ग्यान ध्यांन दान मांन जांन सुव्रती कहै ॥
तर्क छंद व्याकरण [अ]ठारह पुराण वेद विद्या दश च्यारके निधान तहती कहै ॥
कहै कवि जीह एक कहांलुं वखान याके योतो उपमान मांनु जांन किरती कहै ॥

दूहा ॥ **श्री मेडता नगरथी,** लिखित मुदा सुविचार
श्रीजी साहिब मांनज्यो, वंदणा वार हजार ॥१॥
कहा ओपम तुमकुं लिखुं, जगमै तुम सम होय ।
नमता सीस पवित्रसुं, पातिक दूरे होय ॥२॥
देस अनेक जगमें अछै, श्रीजी साहिब जाण
पिण मरुधर समवड नहि, दीसै अधिकौ मान ॥३॥
मरुधर अधिको मंडोवरो, जोधपर सरजांम ।
राजस्थांन प्रतपै सदा, हिंदु तिलकही ठांम ॥४॥

कपूर हुवै अति ऊजलो रे ए देशी ॥

तिणहीज मरुधर देसमै रे, नयरी **मेदनीपुर** नीक ।
भुवन भामिनी भालज्युं रे, तिणविध रचीयो टीक रे ।
सूरिजन ! जाणो गच्छपति राय ॥१॥
बहु गढ कोट बाजार छै रे, गगनांगण पुंता गोख ।
वन वाडी दिसवागसुं रे, भोगी मांणै जोख रे ॥२॥ सूरिजन...

पवन छत्रीस जिहां वसै रे, लोक सहु धनवंत
कुबेर मिल संका करै रे, मुज नगरी सुमहंत रे ॥ सू.जा ॥३॥
आदिसरनो देहरो रे, सोहै चउटा वीच,
सूरज मन इम उपनो रे, कीरतथंभ ए वीच रे ॥ सू.जा. ॥४॥
देहरा बारै सोहता रे, स्वर्गसुं मांडै वाद
चतुर्भुज महिमा घणी रे, महजित सर्व सुजाद रे ॥ सू.जा. ॥५॥
मेडतापुर सर सोहता रे, **फलवधि पास जिणंद**
मुज मनवंछित पूरणा रे, चूरणा तमस दिणंद रे ॥ सू.जा. ॥६॥
राज तिहां सबलो अछै रे, **मानसिंघ महाराज ।**
नगर लोक सुखीया वसै रे, दिन दिन चढत दिवाज रे ॥ सू.जा. ॥७॥
तेहनो हाकम गुणनीलो रे, **पंचोली गोपालदास**
राजधुराधर धारणो रे, कीरत पसरी जास रे ॥ सू.जा. ॥८॥
बहु व्यापारी तिहा वसै रे, लखपति अधिकै मान,
चोर चरड नवि संचरै रे, गोरी गावै गांन रे ॥ सू.जा. ॥९॥
वाडी पारसनाथजी रे, **मालकोट** उदंत
देरां णीवे वचारसुं रे, बाहिर नगर सुहंत रे ॥ सू.जो. ॥१०॥
दरजी पटवा सुंदरुं रे, तंबोली सोनार
गणिका मोची तुरकडा रे, इत्यादिक सुविचार रे ॥ सू.जो. ॥११॥
एहवो उपाश्रय किहां नही रे, पूज पधारो वेग
धर्मवृक्ष फल लागसी रे, टलसी सगल उदेग रे ॥ सू.जो. ॥१२॥
गुलाबविजय कविराजनों रे, **दीपविजै** कहै तांम
वंदणा मांहरी मानज्यो रे, थे छो गुणना धांम ॥ सू.जो. ॥१३॥

ढाल २ जी, डोरी मांरी आवै रे रसीया कडतलै ए देशी ॥

सदगुरु साचो रे जगमै सुरतरु, जपीयै निसदिन जाप, सनेही
रनरो भीनो गच्छरो लाडलो, जिम इन्द्र ओछक चाप,
सनेही, गच्छपति विजयजिनेन्द्रसूरीश्वरु ॥१॥
अविचल महिमा रे जगमै अधिपति, गणधर हंदो ग्यांन, सनेही
गणधर घट जपतां सूरज उदै, भांजत तिमिर अग्यांन, स.ग. ॥२॥

जगमै क्रोधमानमाया वली, लोभ मिथ्यात्व प्रचंड, स.
राग द्वेष अंतर रिपु जीतीया, दुर्द्धर दीये सिरडंड. स.ग. ॥३॥
तेजवंता जयवंता जसमुखी, नाणवंत जसवंत. स.
लब्धिभंडारी लाभ कला भर्या, प्रणम्यति सघला संत, स.ग. ॥४॥
चंद्रमंडल परि शीतल परदरा, भास्कर समवड तेज, स.
शुद्ध मारगना पालक शुभकरा भविजनथी बहु हेज, स.ग. ॥५॥
जाति रूप कुल बल वपु उत्तमा, विनय सुनाण संपन्न, स.
दंसण चारित्र अवर क्षिमा दया, सत्यं सौच्च उपन्न, स.ग. ॥६॥
चरण करण आर्जव मार्दवा, बंभचेरई सुविचार, स.
अकिंचण निरलोभी तारणतरा, इत्यादिक गुणसार, स.ग. ॥७॥
काव्य पुरांण व्याकर्ण छंदना, टीका शास्त्र अभ्यास, स.
आगम नय उपनय गांभीर्यता, जुक्तायुक्त निवास, स.ग. ॥८॥
तर्क शास्त्र निरजुक्ति स्वपरतणा, उत्सर्ग ने अपवाद, स.
निश्चय नय व्यवहार सदामती, जाणक सगला जाद, स.ग. ॥९॥
निर्द्धाटक पाखंडी छेदता, पंच मिथ्यात्व निवार, स.
कुमति कदाग्रह त्रिष्णा छेदता, जिम वन छेद कुठार स.ग. ॥१०॥
धर्म धुरंधर मेरु तणी परै, महिमा जगविख्यात, स.
षट्विध जीव निकाचित रूपना, मात तात ने भ्रात, स.ग. ॥११॥
सत्रु मित्र समचित धरता सुखै, कृपा समुद्र पवित्र, स.
गंगा जल परि निर्मल तुम गुणा जेहना सरस चरित्र स.ग. ॥१२॥
प्रवचनसारउद्धार प्रकरणै; आचारय गुण छत्रीस, स.
विविध प्रकारै भंगा वर्णव्या, गणी न सकु मुनीस, स.ग. ॥१३॥
जिम गयणांगण तारा नवि गिण सकै; तुम गुण कहिवा न जाय, स.
फणपति सहस प्रसंसा जो करै, तिणथी पिण न कहाय, स.ग. ॥१४॥
उज्जल विधुमंडलस्युं तेजनो, स्युं ड(ड)डीरवमांन स.
परिमल उज्जल गुण आधिक्य छै, स्युं कहुं वधते वान, स.ग. ॥१५॥
गिरवा पुर(रु)ष ते सहजै गुणकरै, कार्य मकारण जाण स
तरु सींचै सरोवर शुभभरै, मेघ न मांगे दांण स.ग. ॥१६॥

हीयडोमै किम साजन वीसरै, ते सज्जन सुविचार...स.
दिन दिन, घडी घडी, पल पल सांभरै, जिम कोईल सहकार स.ग. ॥१७॥
तपगच्छ मंडण **हीर**दिवाकर, तेहना वंशमै भाण स.
पंडित गुलाल(ब)विजय कविरायनो **दीपक** गाया जाण.. स.ग. ॥१८॥

—x—

ढाल ३जी, ह्मांरा (मारा) वाला वाहण जो तारे
पगडानो तारो उगीयो ॥ ए देशी ॥

श्रीजी सकल मन चाहता, संघ तणै चीत्तमाहेंजी ।
आवोजी आस्या पूरीयै, भवि पंकज वीकसाहेंजी ॥
सदुरुराय पधारीयै ॥१॥
आतम तुमने ओलगुं, लक्षण चेतन जाणोजी ।
चेतनता तो जे लहै, पामी सदुरु वांणोजी ॥ सदुरु. २ ॥
आतम असंख प्रदेश छै, लोकाकाशै तेहोजी ।
आतम आतम ए प्रमा, न्यूनादि(धि)क नही सेहोजी ॥ सदुरु. ३ ॥
एक प्रदेशना देशमै, गुण कहीजै अनंतजी ।
पर–जय(परजाय?)–शक्ति अनंतता, परिजय (परजाय) धरम अनंतजी ॥
सदुरु. ४ ॥
एह स्वभाव ज जीवनो अस्तै नास्ती व्रं(वं)तो(व्रंचो?)जी ।
सत्वी स्वभावै ऽस्तीता, नास्ति परव प्रपंचजी ॥ सदुरु. ५ ॥
रुचिक प्रदेश विना कहुं, वरगणा अनंत मानोजी ।
कर्म रज वींटी रह्यौ, जिम रज वादल भानोजी ॥ सदुरु. ६ ॥
अनंत चतुष्टी संपदा, अनंत शक्ती जांणोजी ।
चरण अनंता ते कह्या, वीरज अनंतइ मांनोजी ॥ सदुरु. ७ ॥
अजर अमर पद राजवी, निश्चयनै मत जांणोजी ।
विवहारै संसारीयो, अम आतम ए वांनोजी ॥ सदुरु. ८ ॥
वीर पटोधर कही जता, जाणो सदुरुरायाजी ।
तुम वाणी श्रवणै सुणां, रुचसी मनमै रायाजी ॥ सदुरु. ९ ॥

रुच ते दशविध जांणीयै, कही पन्नवणा माहैजी ।
उपदेश बीजी संपदा, भविजन तुमची चाहैजी ॥ सदुरु. १० ॥
नव ते आत्मप्रबोधथी थास्यै कर्मनै रंगेजी ।
तुम मुखना उपदेशनी, चाहां तुमनै संगेजी ॥ सदुरु. ११ ॥
वीनतडी अवधारज्यो, साची प्रीत संभाली रे ।
कवरपदाना बोलडा, ते बोलडा प्रतिपाली रे ॥ सदुरु. १२ ॥
मेडता नगर पधारीयै, चोमासै ठावीजै रे ।
श्री संघनें बहु हुंस छै, ते पूरव्यां(वा) मन रीजै रे ॥ सदुरु. १३ ॥
वीक्रम मै कांई मोहीया, रोगीलो ते देसो रे ।
कपटी गुज्जरमें कह्या, ओछा तेहना वेसो रे ॥ सदुरु. १४ ॥
ढीला बोला काबरा, क्या क्या स्युं स्युं बोलै रे ।
लूलां पंगुला सूगटा, त्यां सुं चित्त अमोलै रे ॥ सदुरु. १५ ॥
पिण ते कांमणगारडा, कामण कीधा केई रे ।
त्यां सुं मनडो भेदीयो, जांणो मनमां थेई रे ॥ सदुरु. १६ ॥
मै पिण कामण सीखस्यां, करस्यां कोड उपायो रे ।
गच्छपति रायनें वांदस्यां, सेवस्यां अहनिस पायो रे ॥ सदुरु. १७ ॥
बाबा धर्मसुरिंदना, मात गुमानां जाया रे ।
हरचंद कुलमें केसरी, गच्छपंति सहु मनभाया रे ॥ सदुरु. १८ ॥
संवत **अठारै सतसठै**, कार्तिक मांस सुहाया रे ।
सुदि तेरस भृगुवारनें, गच्छपतिना गुण गाया रे ॥ सदुरु. १९ ॥
पंडित मांहे शिरोमणि, **गुलाल विजय** गुरुराया रे ।
दीपविजयनी विनती लुलि लुलि लागै पाया रे ॥ सदुरु. २० ॥
इति श्री वीनती संपूर्णमगमत् ॥ लिखितोयं ॥ श्रीः ॥ ॥१॥

॥ ढाल - लुंबै झुंबै वरसलो मेह ए देशी ॥

श्री श्री जिनेन्द्र सुरिंद, गावो भवियण भावसुं हो लाल
तारक भविजन एह, आचारय गुणडा वसुं हो लाल ॥१॥
कहितां कहितां नावै पार, वीर पटोधर मनोहरु हो लाल ।
पग पग होत कल्याण, इहभव परभव सुखकरु हो लाल ॥२॥

राय प्रदेशी महंत, रायपसेणी सूत्रमै हो लाल ।
ध्येय आचारय जाण, ध्यायो मनधर मंत्रमै हो लाल ॥३॥
लह्यो लह्यो भवनो पार, सास्वत सुख पाम्यां घणा हो लाल
तिम भवि सेवो जांण, नवनिधि पामो नहि मणा हो लाल ॥४॥
महामुनि तणा वखाण, श्रीजी पासै छे भला हो लाल ।
दांनविजै मतिवंत, पं-पदसुं जाणो सला हो लाल ॥५॥
जाचो हीरा खांण, **विद्याविजय** उपनो हो लाल ।
रामविजै मन जीत, सागरसुं ते नीपनो हो लाल ॥६॥
गीतारथ गुणवंत, नायक जय पद पांमीयो हो लाल ।
माणक माणक दीव, **केसर** जय पद धांमीयो हो लाल ॥७॥
फतैविजै मनरंग, **दोलत** ठामै गावीयो हो लाल ।
पुण्यविजै परमाण, **खुसाल सागर** भावीयो हो लाल ॥८॥
इत्यादिक मुनिराय, सेवें मन सुधसुं सदा हो लाल ।
वंदणा वारोवार, जांणेज्यो मुनिजन मुदा हो लाल ॥९॥
इहां छै मुनिवर साथ, आज्ञा तुमची आदरै हो लाल ।
सेवक नित प्रति ध्यान, ध्यावै अहनिस पादरै हो लाल ॥१०॥
पंडित मांहै प्रधान, **गुलालविजय** वंदणा करै हो लाल ।
संतोषविजै मनधीर, दीपै **सुखविजयै** धरै हो लाल ॥११॥
राजविजय मनरंग, **नगविजय** सुभवांणसुं हो लाल ।
माणकविजय मनधार, **दलपति** वांदै जांणसुं हो लाल ॥१२॥
अजितविजय सुखकार, **रिषभ राजेन्द्र** दोय भावसुं हो लाल ।
सिधविजै मनचंग, **रूपक-दानै** नवलसु हो लाल ॥१३॥
रतनश्री-साधवी मांन ज्ञानै दोलतसुं भरी हो लाल ।
श्राविका सरव सुचंग चाहै निजमन सुभकरी हो लाल ॥१४॥
लिखुं लिखुं कागल केह, सात समुद्रनी मिस करी हो लाल ।
कागल जो धरती होय, पार न आवे गुण खरी हो-लाल ॥१५॥
वंदणा वार हजार, मानेज्यो गच्छपति मुदा हो लाल ।
इहानां संघनो जुहार, तिहां कहज्यो संघने सदा हो लाल ॥१६॥

अधिको ओछो लिखीयो तेह, माफ करो महाराजजी हो लाल ।
मुनि रस सिद्ध ने चंद्र, कार्तिक सुदि कामराजजी हो लाल ॥१७॥

इत्यादि वर्णनं कार्यमगमत् ॥१॥

वि.सं. १८६७

॥ श्री परमेसरेजी रुप छेजी ॥

॥:॥ .... श्री वीरमगांव नगर शुभ सथाने सकल शुभ ओपमा विराजमान, अनेक ओपमा लायक एकवीध संयमरा पालणहार, दुविध धर्मरा जांण, तीन ततरा [तत्वरा] जांण, चार कषायरा जीपक, पंच महाव्रत धारक, नव बंभचरना पालक, दशविध जतिधर्मरा धारक, इग्यारे अंगरा जाण, बारे उपांगरा जाण, तेरे काठीया जीपक, चउदे विद्यारा निधान, पनरे सिद्धभेदरा जांण, सोले केश [क्लेश] नीरमला, सतरे भेद संयमरा पालक, अठारे पापस्थानकरा निवारक, ओगणीस दोष काउसग्गरा निवारक, वीश स्थानक तपरा जाण, इक्कीस श्रावकरा गुण प्रकाशक, बाइस परीसहरा जीपक, तेइस विषयारा निवारक, चोईस जिणेसररी आज्ञारा पालक, पचीस भावनारा जाण, छाईस कल्पना जांण, सत्ताईस साधुगुणरा जेकार आपादक, छत्तीस गुणे करी विराजमान, पुज्य सकल भट्टारक शिरोमणि, पुज्य पुरंद्र[दर] भट्टारकजी श्रीश्रीश्रीश्रीश्री १०५ श्री श्री विजय जिनेन्द्रसूरीश्वरजी सपरिवारा - - - - - लायक श्री मेडताथी सदा सेवक आज्ञाकारी - - - प्राटभगत - - - - - लखतु वंदणा त्रिकाल दिन प्रत्ये वार १०८ वार अवधारसोजी

अठारा समाचार श्री देवगुरांरी कृपा करने भला छेजी. दु(पू)जश्रीजी सुखी रा सदा सर्वदा आरोग्य चाहीजेजी पुज्यश्रीजी सुखी रे आहार पाणी गंगा जलचरागेण राधना जतंन करावशीजी. जतंन तो श्री ईसरदेवजी करसी पिण सींघने तो - - चाहीजे पुज्यजीरा चरनारवीद भेटणरी सींघ घणी उमेद राखे छे सुश्री फलोधी पारसनाथजीरी जात्रा सारु पदारसीने मेडतारा सींघ ने वंदावसी तीशेदीन धंन हरख श्रीजी मोरा छे.

॥ भासः ॥ देशी नींदनयणो रे विच धुल रही एहनी ॥

साहिबा सदुरु चरण सोहामणा ॥ वंदो भविजन भाव हो ॥ सद्गुरु राजा ॥
साहिबा प्रेम अमृतरस वरसता ॥ सिव पंथ सीझो भाव हो ॥ स० ॥

गछपति विजय जिनेंद्रसूरीस्वरु ॥१॥
साहिबा मुनिगहग्गे(ग्ग)टै सोभता ॥ चंद्र ज कूलना रुप हो ॥ स०
साहिबा बुधभंडार बुल्या रहै ॥ रीझवै पृथवीनां भूप हो ॥ स.ग. ॥२॥
साहिबा ठांम र मंगल घणा ॥ मोतीयां थाल भराय हो ॥स.॥
पूजजी वधावै घरोघरै ॥ दिल दरीयाव सराय हो ॥ स.ग. ३॥
साहिबा वंस वधारण अभिनवो ॥ वीर जिनेसर पट्ट हो ॥ स.
बाबा धर्मसूरीस प्रतपो तषत प्रगट हो ॥ स.ग. ४ ॥
कोड दीवाली चिर जीवज्यो ॥ प्रतपो कोडवरीस हो ॥स.॥
जयन धरममंडण धूरा ॥ गुणगणरत्न सूरीस हो ॥ स.ग. ५ ॥
मेडतापुरनी वीनती ॥ मानेज्यो महाराज हो ॥स.॥
मरुधरदेस पधारीयै ॥ देसां मै सिरताज हो ॥ स.ग. ६ ॥
वधाविस्युं गछरायनें ॥ मोतीयां भरी २ थाल हो ॥ स.
जलधर म-- ने सम गिणै ॥ तिम तुमे जांणो कृपाल हो ॥ स.ग. ७ ॥
गुलाल संतोषनी वीनती । जय २ पदना राग हो ॥ स. ॥
ध्यावै संदगुरु चरणनें ॥ सफल करै निज भाग हो ॥ स.ग. ८ ॥
साचा चरणने सेवतां ॥ सुष उपजै मनरंग हो ॥ स. ॥
दीप कहै मन हरषसुं ॥ देज्यो अविचल संग हो ॥ स.ग. ९ ॥

॥ इति स्वाध्याय समाप्तम् ॥१॥

॥ श्रीः ॥१॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुठिओहं अभ्यंतर
पांचेपडिकम(णा)रि षांमु राई देवसी पक्षी चउमासी संवच्छरीयं
जंकिंचियं(अप्प) त्तियं परप्पत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे
आलावे सल्ला(वे) (उ)च्चासणे समासणे अंतरभासाए
उवरीभासाए जंकिंचि मज्झ वि(णय परि) हीण सुहुमं वा
बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि मिच्छामिदुक्कडम् ॥

॥ लिखितोयम् ॥

C/o. जैन मन्दिर
निपाणी (महाराष्ट्र)

॥ श्रीः ॥

श्री महावीरप्रभुना जीवनना अधिकृत नकशास्वरूप ग्रन्थ

— शीलचन्द्रविजय

'तीर्थंकर महावीर' ग्रन्थ ए तेना सर्जक जैनाचार्य श्रीविजयेन्द्रसूरिजीनी एक कालजयी अने शकवर्ती रचना छे. भगवान् महावीरना जीवन विषे आनाथी वधु प्रमाणभूत चरित्र कोई लखी शके नहीं. इतिहास, पुरातत्त्व, अन्य दर्शनोनां साहित्यिक तथा ऐतिहासिक प्रमाणो, जैन आगमो तेमज विविध वीरचरित्रो — आ तमामने नजर समक्ष राखीने तथा डगले-पगले ते बधांना साक्षिपाठो टांकता रहीने, आचार्यश्रीए तैयार करेलुं आ महावीरचरित्र, एक श्रद्धेय, उपकारक अने घणाबधा भ्रमोनुं निवारण- निरसन करनारुं चरित्र छे, एम निःसंदेह कही शकाय.

अन्य गद्य-पद्यात्मक संस्कृत-प्राकृत के भाषानिबद्ध चरित्रोमां जोबा मळे तेवुं काव्यतत्त्व, अलंकारिक वर्णन तथा प्रगटपणे व्यक्त थई जाय तेवुं भक्तितत्त्व कदाच आ ग्रंथमां जोवा न मळे. आ ग्रंथकर्तानो तेवो दावो पण नथी के तेवो आशय पण नथी. तेमनो आशय शो हशे तेनो आछोपातळो अणसार तेमना आ निवेदनमां जोवा मळे छेः-

"अभी तक जो महावीर चरित्र लिखे गये, या तो वह साधारण पाठक को द्रष्टिमें रखकर लिखे गये थे या तो अपने-अपने सम्प्रदाय की मान्यता को ध्यानमें रखकर लिखे गये थे । इसका फल यह रहा था कि, विद्वत्-समाज बराबर यह उलाहना दिया करता था कि, आज एक भी ऐसा महावीर-चरित्र नहीं है, जो अनुशीलनकर्ता अथवा गम्भीर पाठक को सन्तोष दे सके । इस चुनौती की ओर मेरा ध्यान २५-३० वर्ष पहले गया था । मेरे मन में तभी से महावीर-चरित्र लिखने की इच्छा थी और मैंने अपना खोज-कार्य तभी प्रारम्भ कर दिया था ।" (ग्रन्थनी लेखकनी प्रस्तावना)

स्पष्ट छे के आचार्यश्रीनो आशय संशोधनात्मक, ऐतिहासिक अने दस्तावेजी, अने छतां आगम-अबाधित एवा विद्वद्भोग्य चरित्रालेखननो रह्यो

छे. लोकभोग्य के लोकप्रिय कथात्मक के वर्णनात्मक के काव्यात्मक ग्रन्थ लखवानो तेमनो इरादो नथी.

आचार्यश्री स्वभावतः इतिहास-संशोधक हता. भारत सरकारना पहेला शिक्षामन्त्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद आचार्यश्रीना मित्र हता. ते पोते मोटा विद्वज्जन हता. तेमणे भारत सरकारना आर्किओलोजी डिपार्टमेन्ट तेमज बिहारनी तत्कालीन सरकारने सूचना आपेली के आचार्यश्री बिहारमां भगवान् महावीर विषे पुरातात्त्विक शोध-कार्य करे त्यारे तेमने तमाम सहाय तथा साधन-सामग्री पूरी पाडवी. ते अनुसार आचार्यश्रीए भगवान्नी जन्मभूमिनुं क्षेत्र, वैशाली, वगेरे विषे शोध-कार्य कर्युं, तेमज भगवान्ना विहारमार्ग तेमज विहारनां क्षेत्रो विषे शोध-कार्य कर्युं, त्यारे सरकारना ते ते विभागोना निष्णातो वगेरेए पूरी सहायता करेली. तेना परिपाकरूपे तेमणे क्षत्रियकुण्ड, वैशाली, मथुरानो सिंहध्वज, महाक्षत्रप राजा रुद्रदामा, अशोकना शिलालेखो पर दृष्टिपात वगेरे अनेक संशोधनात्मक ग्रन्थो आप्या. तेमां 'वीरविहारमीमांसा' एक नानो पण दस्तावेजी मूल्य धरावतो ग्रन्थ छे.

भगवान्ना जीवन-चरित्र विषे तेमनी शोध तथा स्वाध्याय दायकाओ सुधी चाल्या होवा जोईए. एक तरफ पुरातात्त्विक शोध-कार्य, उत्खनन अने ते द्वारा प्राप्त साक्ष्योनुं अध्ययन, म्युझियमोमां उपलब्ध पुरातात्त्विक साक्ष्योनुं अध्ययन-अन्वेषण, तज्ज्ञ विद्वानो साथे विमर्श, स्व-पर आगमो, शास्त्रोनुं अवगाहन अने मूल्यांकन, आधुनिक विद्वानोना अभिप्रायो तेमज तेनी तथ्यातथ्यतानुं आकलन, अने आ बधां परथी पोते तारवेलां तारणो- आ समग्र प्रक्रिया दीर्घकालीन अध्ययन तथा धीरज मागी लेनारी प्रक्रिया छे. तेमणे केटकेटली नोंधो करी हशे, अने आ ग्रन्थना आलेखननां ६-७ वर्षो दरमियान ते नोंधोनो केटलो तो समीचीन विनियोग कर्यो हशे, त्यारे आवो विशालकाय अने प्रमाणभूत दस्तावेजी ग्रन्थ तैयार थयो हशे. आवा परिश्रमने तथा पुरुषार्थने 'तप' तथा 'प्रभुभक्ति' एवा शब्दोथी नवाजीए तो ज समुचित मूल्य आंक्युं गणाय.

हा, आ आखो ग्रन्थ, आचार्यश्रीना हैयामां भगवान् माटे तथा तेमना संघ तथा शासन माटे जे दृढ श्रद्धा-भक्ति हती, तेनुं प्रकट स्वरूप छे. पाने पाने

तथा वाक्ये वाक्ये प्रभु-शासन तथा तेना सिद्धान्तोनुं मण्डन थयेलुं जोवा मळे छे; अन्यान्य लोकोए के धर्मग्रन्थोए करेली अनुचित अने विकृत वातोनुं खण्डन थतुं वांचवा मळे छे. नक्कर प्रमाणो, अकाट्य युक्तिओ तथा साधार हकीकतोना बयान/प्रतिपादन द्वारा, आचार्यश्रीए प्रभुना चरित्रने तथा सिद्धान्तोने विकृत रीते दर्शावनारा तमाम लोकोनुं निरसन कर्युं छे, अने तेम करवामां तेमणे कोईनीय शेह नथी राखी. आनी पूरी समजण तो आ ग्रन्थनुं सूक्ष्म दृष्टिए अवगाहन करीए तो ज मळे. 'बीजा खोटा छे' अने 'भगवान् तथा तेमने माननारा साचा छे' एवी उद्धत अने उतावली रजूआत कोई पण करी शके; अने एवी साम्प्रदायिक रजूआतो करतां अगणित पुस्तको मळी पण जाय तेम छे. आक्रोश, आक्षेप, तथ्यविहीन अने प्रमाण-निरपेक्ष वातो लखीने भगवान्नी भक्ति करनार लोको घणा मळे. आवा लोको माटे दन्तकथाओ पण सत्य ज होय, अने तेनाथी जुदी वात कहेनारो नास्तिक, मिथ्यात्वी, सुधारक अने अश्रद्धालु ज होय. परन्तु, इतिहास, दन्तकथाओ तेमज अन्य अगणित साक्ष्योनुं आकलन-अध्ययन करीने, तेमांथी तारवी शकातां प्रमाणभूत तथ्योने पृथक् तारवी आपवां, परम्परागत-प्रचलित भ्रमणाओने टाळवी, अने ए बधां द्वारा उपसी आवता प्रभुनी वास्तविक जीवननुं आलेखन करवुं, ए तो आवा कोईक इतिहासविद् अने प्रभुपरायण सत्पुरुषनुं काम छे. धूळधोयानो धंधो चोकसीने केम फावे ?

ꕥ

आ चरित्र-ग्रन्थ बे विभागमां वहेंचायेलो छे. प्रथम विभागमां प्रारंभनां नवेक प्रकरणोमां भगवान्नी दीक्षा सुधीनी वात थई छे. त्यार पछी कर्ताए भगवान्ना वर्षावास (चोमासा)ना क्रमे वात आलेखी छे. कयुं चोमासुं कया स्थानमां/क्षेत्रमां कर्युं अने त्यां कई घटना घटी, तेनुं वर्णन शास्त्र-ग्रन्थोने आधीन थयुं छे. साथे ज जे ते क्षेत्रनुं सांप्रत भोगौलिक वर्णन-आलेखन पण कर्ता आपतां रह्या छे. आथी शास्त्रोक्त निरूपणने पुरातत्त्वशास्त्रनुं समर्थन मळतां ते विशेष श्रद्धेय अने प्रतीतिकर बने छे. प्रथम विभागमां १३ चोमासां सुधीनुं आलेखन थया बाद, गणधरवादनुं विस्तृत निरूपण थयुं छे. 'गणधरवाद' ए विशेषावश्यक महाभाष्यनो विषय छे. तेनी ते तमाम गाथाओनो, आचार्यश्रीए,

रसळती कलमे अनुवाद कर्यो छे. तेमणे गाथानो शब्दार्थ ज कर्यो होई अनुवाद क्लिष्ट लागे तो ते शक्य छे. छेवटमां त्रणेक उपयोगी परिशिष्ट मूक्यां छे. छेल्ले मोरिय सन्निवेश विषे अभ्यासपूर्ण टिप्पणी पण पठनार्ह छे.

द्वितीय विभागमां १३माथी ४२मा वर्षावासोनुं विस्तारथी निरूपण छे. जे ते चोमासामां के वर्षमां घटेली विविध घटनाओनुं सुरेख आलेखन मळे छे. ते पछी, भगवान्ना परिवार, साधु साध्वी, आयुष्य, निर्वाण तिथि, १८ गणराजाओ, निर्वाण संवत् वगेरेनी वातो आवे छे. बौद्धो द्वारा स्वीकृत भ्रमणा विषे खुलासो पण कर्यो छे.

पछीनां प्रकरणोमां भगवान्ना जे श्रमण-श्रमणीओनां तथा श्रावक-श्राविकाओनां नामो के वीगतो आगमो वगेरेमां प्राप्त छे, तेमनां नामो साथे ते वीगतनी संक्षिप्त नोंध करी छे. आ एक खूब उपयोगी बाबत जणाय. आमां आनुषंगिक रीते ज, श्रावकधर्म विषे पण विस्तारथी निरूपण थयुं छे. दश मुख्य श्रावकोनी विस्तारथी वात थई छे.

ते पछी भगवान्ना भक्त राजाओ विषे एक मोटुं प्रकरण छे. तेमां भगवान्ना उपासक किंवा शिष्य होय तेवा तमाम राजाओनां नाम अने वृत्तांतो अपायां छे. प्रसंगोपात्त, ऐतिहासिक छणावटो पण थई छे. आ प्रकरण बहु महत्त्वनुं छे. अन्ते भगवान्नां ११ अंग-आगमोमांथी चूंटेली सूक्तिमाला अनुवाद साथे आपेल छे, जे विद्वज्जगत्ने भगवान्ना मार्ग तथा सिद्धान्तो समजवामां खूब उपयोगी थाय तेम छे.

आ छे आ चरित्र-ग्रन्थनो अछडतो परिचय.

❀

आचार्यश्रीए आ ग्रन्थमां मुख्यत्वे त्रण वातो पर विशेष भार आप्यो जणाय छे. १. तथ्यो उजागर करवा; २. भ्रम-निरसन; ३. अनुचित आक्षेपो वगेरेनुं खण्डन. आपणे ते वातोने विस्तारथी तपासीए.

१. मूळे तो आ आखुं चरित्र ज तथ्यात्मक प्रतिपादनस्वरूप छे. परन्तु तेमां पण केटलांक जाणीतां छतां ओछां प्रचलित होवाथी के पछी अन्यथा प्रचलित होवाथी अजाण्यां लागे तेवां तथ्यो तेमणे उजागर कर्यां छे. तो घणी

विशिष्ट बाबतो आगमादिमां उपलब्ध होय पण आपणा जेवा माटे अज्ञातप्राय होय तेवी वातो पण तेमणे नोंधी छे. तेनां उदाहरण पण जोईए –

भगवान् अने तेमना पिताना देश विषे, भगवान्ना जन्मस्थान (क्षेत्र) विषे, भगवान्ना कुल विषे, आ ग्रन्थना "वैशाली" नामक प्रकरणमां (भाग १/३५-५६) आचार्यश्रीए खूब विस्तारथी चर्चा करी छे. बौद्ध धर्मना ग्रन्थोमांथी तथा जैन ग्रन्थोमांथी अनेक प्रमाणो उध्धृत करीने, तथा प्रसिद्ध चीनी मुसाफर ह्यु एन त्सांगना लखेल प्रवासवर्णनमांथी उद्धरणो तथा वीगतो दर्शावीने, विदेह देश, वैशाली जनपद, कुण्डपुर अने तेना बे विभाग-क्षत्रियकुण्ड तेमज ब्राह्मणकुण्ड, ज्ञातकुल, सिद्धार्थ राजा मात्र सामान्य क्षत्रिय नहि पण राजा हता ते अने ते केवी रीते राजा गणाया ते, आ तमाम तथ्यो आ प्रकरणमां उजागर कर्यां छे. भगवान् माटे प्रयुक्त 'विदेहदिन्ने विदेहजच्चे वेसालिए' इत्यादि विशेषणो के नामोना अर्थ पण खूब प्रतीतिकर रीते तेमणे खोली आप्या छे; आथी आ शब्दोना भ्रामक अर्थो आपोआप निरस्त थाय छे. क्षत्रियकुण्ड कयुं? हाल ते कया नामे ओळखाय छे ? क्यां वर्ते छे? आ बधा सवालोना उत्तर आ प्रकरण वांचवाथी मळी रहे छे. वर्तमानमां प्रचलित मान्यतावाळुं क्षत्रियकुण्ड ते स्थापनातीर्थ मात्र छे ते पण अहीं स्पष्ट शब्दोमां लखी दीधुं छे.

एक वात आ लखतां याद आवे छे ई. २००४मां अमे पूना भाण्डारकर इन्स्टिट्यूटनी मुलाकाते गया हता. त्यारे त्यां चाली रहेला प्राकृत कोष-प्रकल्पना मुख्य विद्वान डॉ. रामप्रसाद पोतदार मळेला. प्राकृत भाषाओना तेओ प्रखर विद्वान हता. वयोवृद्ध हता. तेमणे पूछ्युं : महाराज! तमे लोको भगवान् महावीरने ईश्वर मानो छो, तो तेमना जन्मस्थल बाबते तमने-जैनोने केम कांई पडी नथी ? तमे गतानुगतिकताए कोई जुदीज जग्याने क्षत्रियकुण्ड मानीने सन्तुष्ट छो परन्तु ते स्थल खरेखर तो जुदुं ज छे, अन्यत्र छे." आम कहीने तेमणे असली जन्मस्थळवाळी जग्या क्यां छे ते वर्णवीने ते स्थाने थयेला उत्खनन थकी प्राप्त पुरावशेषो द्वारा पण, ते जग्या ज जन्मस्थल होवानुं प्रमाणित थतुं होवानी वात कही. अमे स्तब्ध थईने बधुं सांभळता रह्या! मने खबर हती के आवी वातमां मने अने आपणामांना कोई पण जैनने रस नहोतो. आपणे तो जात्राना हकदार; आवी बधी खणखोद कोण करे? अस्तु.

'भगवान् मगध देशना हता, केमके ते अर्धमागधी भाषा बोलता हता' आवी एक मान्यता छे, तेना माटे अहीं नोंध्युं छे के "जो लोग यह कहकर कि, भगवान् अर्धमागधी बोलते थे, उन्हें मगधवासी सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं, वे नितान्त भ्रांति पर है। क्यों कि अर्धमागधी तो उस समय सम्पूर्ण २५॥ आर्यदेशों की भाषा थी। सिद्ध है कि, सभी देशों में अर्द्धमागधी भाषा और ब्राह्मी लिपि प्रचलित थी। बुद्ध शाक्य देश के वासी थे, पर वे भी मागधी में ही उपदेश करते थे। अतः भाषा को आधार मानकर इन शास्त्रीय तथा ऐतिहासिक प्रयत्नों को गलत सिद्ध करने की चेष्टा कुचेष्टा मात्र कही जायेगी।"[१] (पृ. ४९-५०, भाग.१)

आ प्रकारनां अनेक तथ्यो आ प्रकरणमां तथा अन्यत्र पण आचार्यश्रीए उजागर करी आप्यां छे. तथ्य उजागर थाय त्यारे भ्रम-निरसन पण सहेजे ज थई जाय ए कहेवानुं जरूरी नथी. वास्तवमां तथ्य-प्रकाशन अने भ्रम-निरसन बन्ने साथे ज चाले छे.

२. भ्रम-निरसननी वात लईए, तो भगवान्ना 'गर्भापहार'ना बनावने अन्य लोको जरा जुगुप्सानी नजरे जुए छे अने कलङ्करूप गणावे छे. आवुं बनवुं असम्भवित छे एम पण मान्यता छे ज. आ कारणे तेवा लोको जैनोनी हांसी पण करे छे. आनो अधिकृत जवाब आ ग्रन्थमां आचार्यश्रीए आप्यो छे. 'देवानन्दा के गर्भ में' (पृ.५८-६८, भाग-१) नामना प्रकरणमां आ विषयनी विस्तृत छणावट थई छे. तेमणे लख्युं के "जैन शास्त्र इसे 'आश्चर्य' कहते हैं, 'असम्भव' नहीं।" केटली बुद्धिगम्य रजूआत! आ पछी तेमणे 'गर्भापहार' विषे विभिन्न आगमग्रन्थोमां थयेला निर्देशना शास्त्रपाठो, अर्थो साथे आप्या छे. ते पाठोमां एक 'राजप्रश्नीय सूत्र'नो पाठ बहु अगत्यनो छे. तेमां, प्रभुना समवसरणमां सूर्याभदेव ३२ नाटको देखाडे, तेमां प्रभुना 'गर्भसंहरण'नुं नाटक पण देखाडे छे; ए वात खूब विलक्षण अने महत्त्वपूर्ण छे.

'गर्भापहार'नी वात पाछळथी उमेराई नथी, पण २००० वर्ष जेटली पुराणी छे, एम विधान करतां आचार्यश्रीए आर्कियोलोजिकल सर्वे ओफ इन्डियानो हवालो आप्यो छे. तेमां वोल्यूम २०मां प्रकाशित 'ध जैन स्तूप एन्ड अधर एन्टिक्वीटीज ओफ मथुरा' नामे रिपोर्टमां एक चित्र (Plate) छे,

तेनो परिचय 'भगवा नेमेसो' एवो त्यां अपायो छे. डॉ. बूल्हरना कथनानुसार 'आ कल्पसूत्र-वर्णित गर्भपरिवर्तननुं चित्रण' छे. आ शिल्प ईस्वी सन् ना प्रारम्भकालनुं अथवा तो तेथी पण पहेलानुं छे. (पृ. ६३).

नैगमेषी अथवा नैगमेषनो उल्लेख वैदिक ग्रन्थोमां 'नेजमेष' एवो थाय छे. आयुर्वेदना ग्रन्थोमां पण ते नामे देवनुं वर्णन छे. त्यां आ देवने पुत्रहर्ता-पुत्रशत्रु मानवामां आव्यो छे, ज्यारे जैन ग्रंथोए तेने पुत्रदाता मान्यो छे. (पृ. ६७, एवं ६४). 'हरिणैगमेषी'नो अर्थ 'हरिणगमेषी' एवो करीने तेनुं मुख हरण जेवुं आलेखातुं आव्युं छे. आ एक भ्रष्ट परम्परा गणाय. खरो अर्थ 'हरि-णैगमेषी' – इन्द्रनी आज्ञानो वाहक एवो छे. पण आ अर्थना जाणकारो पण हरणनुं मुख ज स्वीकारे छे, कोईक ठेकाणे घोडानुं मुख पण वर्णवायुं छे. डॉ. उमाकान्त प्रे. शाहे आ मुखने बकरीना मुख तरीके वर्णव्युं छे, अने गर्भपरिवर्तननी कथा प्रक्षिप्त कथा होवानुं सिद्ध करवा प्रयास कर्यो छे. आचार्यश्रीए डॉ. शाहनी बन्ने वातोनुं कडक शब्दोमां खंडन कर्युं छे, अने पोतानी वातना समर्थनमां डॉ. याकोबीना शब्दो टांकीने आ कथा मूळ कथानो ज भाग छे, अने प्रक्षिप्त नथी, तेम सिद्ध करी आप्युं छे. (पृ.६६-६७)

जैन धर्मना तीर्थंकरना गर्भपरिवर्तनने निन्दनीय तथा असम्भव गणावनारा हिन्दू पण्डितोने तेमना ज ग्रन्थना प्रमाण द्वारा आचार्यश्री प्रत्युत्तर आपे छे. श्रीमद् भागवतना दशम स्कन्धमां भगवान् वासुदेव, देवकीना उदरमां उछरी रहेला पोताना ज अंशरूप पुत्रने रोहिणीना पेटमां मूकी देवानी आज्ञा, योगमायाने आपे छे, अने ते ते प्रमाणे करी दे छे. (पृ.६७). आ वातथी ते पण्डितोनो भ्रम पण दूर थाय तेम छे, अने अणसमजना आक्षेपोनुं पण निवारण थाय छे. गर्भापहारनी आ घटना जराय अस्वाभाविक नथी, परन्तु आवुं क्यारेक बनी पण शके, तेवा पोताना आशयनी पुष्टिमां आचार्यश्री, वैज्ञानिक दृष्टिकोणथी पण ते घटनाने मूलवी बतावे छे. (पृ.६८).

मने लागे छे के आ प्रकरण वांचवाथी घणा लोकोनी भ्रमणा तथा गेरसमजोनुं निवारण अवश्य थशे.

भ्रम-निरसननो एक बीजो दाखलो – प्रख्यात इतिहासकार पं.श्री कल्याणविजयजीए भगवान् महावीर विवाहित हता के नहि – ते विषे संदेह

ऊभो कर्यो छे. पोताना ग्रन्थ 'भगवान् महावीर'मां टिप्पणी करी छे के "भगवान्ना दीक्षा-कालनी पहेलां के पछी यशोदा विषे कोई उल्लेख (कल्पसूत्रमां) नथी मळतो, यशोदा जीवित होय तो भगवान्नी बहेन तथा पुत्रीनी जेम तेणे पण दीक्षा लीधी होत, अथवा अन्य रीते पण तेनो नामोल्लेख थयो होत; भगवान् अविवाहित हता तेवी दिगम्बर मान्यता साव निराधार तो नथी लागती."

आना जवाबमां आचार्यश्री सटीक रीते लखे छे के "उनकी विवाह की शंका तो कौन मिटा सकता है, जब कि वे उनकी पुत्री को प्रव्रज्या मानकर भी विवाह होने पर ही शंका प्रकट करते हैं! ... कल्याणविजयजीने लिखा है – 'महावीरने २८ वें वर्ष के बाद घरमें रहकर दो वर्ष संयमी जीवन बिताया, ऐसे उल्लेख अनेक स्थलों में मिलते हैं-' यहां 'अनेक' लिखकर कल्याणविजयजी चूक गये। उन्हें ग्रन्थों का नाम देना चाहिए था, और जहां तक मैं जानता हूं, जहां-जहां सूत्रों में दो वर्ष तक संयमी जीवन बिताने की बात लिखी है, वहीं-वहीं उनके विवाह की भी बात है।" (पृ.८५)

आनी पूर्वे अहीं विवाह-संबंधे अनेक ग्रन्थोनां प्रमाण तेमणे देखाड्यां छे. तो दिगम्बर-ग्रन्थोना पाठ टांकीने तेमां विवाहनो निषेध न होवा छतां, 'कुमार'नो अर्थ गलत करवाने कारणे भगवान् अविवाहित होवानो भ्रम प्रवर्त्यो होवानी स्पष्टता तेमणे करी बतावी छे. 'कुमार' एटले 'राजा' थया वगर ज चारित्र लेनारा; एने बदले 'कुमार'नो मतलब 'कुंवारा' एवो थतां भ्रम पेदा थयो छे. (पृ.८१). परन्तु विविध शास्त्रपाठोथी प्रभु विवाहित हता ते सिद्ध थई शके छे.

आ समग्र प्रकरणमां बे वात फलित थाय छे : आचार्यश्रीनी असन्दिग्ध शास्त्रनिष्ठा, अने भ्रम-निवारणनी सहज क्षमता.

३. अनुचित आक्षेपो बे रीते थया छे. अमुक आक्षेप जैन विद्वानो अने विचारको द्वारा थया छे, तो केटलाक आक्षेप अजैन अथवा अन्यमतावलम्बी विचारको द्वारा थया छे.

जाणीता जैन पण्डित दलसुख मालवणियाए एवा मतलबनुं विधान कर्युं के जैनो पोतानां आगमोने यथातथ साचवी नथी शक्या, ज्यारे ब्राह्मणोए

वेदग्रन्थोने पूर्णतः साचवी जाण्या छे. आ आक्षेप अवास्तविक अने भूल होवानुं आचार्यश्रीए आ शब्दोमां नोंध्युं – "आज हमारा आगम साहित्य हमें उपलब्ध नहीं है। उसका बहुतसा भाग आज विलुप्त हो गया है। मालवणिया ने जैन-संस्कृति-संशोधन-मंडल की पत्रिका १७ (जैन आगम) में जैनों को इसका दोषी ठहराया है और ब्राह्मणों की प्रशंसा करते हुए कहा है कि, ब्राह्मणों ने वेदों को अक्षुण्ण बनाये रखा। पर, मालवणिया की यह भूल है। काल सभी वस्तुओं पर पर्दा डाला करता है – यह उसका स्वभाव है। वर्तमान शासन के जैन आगमों ने लगभग ढाई हजार वर्ष का समय देखा है। उसमें अधिकांश समय वह अलिखित रहा। फिर उसमें से कुछ अंश का विलुप्त हो जाना, क्या आश्चर्य की बात है?। जिन ब्राह्मणों की प्रशंसा मालवणिया करते हैं, उन ब्राह्मणों का भी साहित्य अक्षुण्ण नहीं है । स्वयं वेदों को लीजिए – ऋग्वेद की २१ शाखाएं थी, अब केवल १२ शाखाएं मिलती है। यह भी वस्तुतः काल का ही प्रभाव है। मालवणिया ने उसी जैन-आगम (पृष्ठ २५) में लिखा है- "कुछ में कल्पित कथाएं देकर उपदेश दिया गया है जैसे ज्ञाताधर्मकथा आदि।" – 'ज्ञाता'को यदि कल्पित माना जाये तो श्रेणिक, अभयकुमार आदि सभी कल्पित हो जायेंगे। (प्रस्तावना भाग-२)

आ वात पर लंबाण टिप्पणी कर्या पछी आचार्यश्रीए लख्युं के, "जैनों पर प्रमाद का दोषारोपण करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि,.....श्रमणों की पांच संस्थाओं में से केवल जैन ही भारत में बच रहे। तापस, गेरुय, आजीवक तो नष्ट हो गये, और बौद्ध भारत से विलुप्त हो गये।" (प्रस्तावना भाग-२)

आ ज रीते भगवाने मांसाहार कर्यो – एवा प्रतिपादन तथा अर्थघटनना प्रकरणमां पंडित सुखलालजी अने पंडित बेचरदासे जे विधानो कर्या, तेना समर्थनमां युक्ति-प्रमाणो टांक्यां, तेनो प्रतिवाद करवामां तथा ते विधानोने गलत साबित करवामां आचार्यश्रीए लेश पण कसर नथी राखी. भगवाने मांसाहर नथी कर्यो अने आगमोमां आवतां केटलाक शब्दोना अर्थ अलग ज करवाना छे ते वात सिद्ध करवा माटे तेमणे अगणित प्रमाणो अने पाठ टांकी बताव्या

छे. पं. सुखलाल विषे लखवुं पड्युं ते अंगे तेमणे दु:ख पण प्रकट कर्युं छे. केम के सुखलालना तेओ अध्यापक रही चुकेला छे. परन्तु सिद्धान्तनी वातमां तेमणे अंगत लागणीने वचमां आववा दीधी नथी, ते तेमनी सिद्धान्तनिष्ठ निष्पक्षता आमां जोवा मळे छे. वळी, आ ज प्रकरणमां अने आ ज विषयमां तेमणे अजैन लेखको श्रीधर्मानन्द कोशाम्बी अने गोपालदास जीवाभाई पटेलनी खबर लई नाखी छे. असत् आक्षेपोनुं खण्डन थवुं ज जोईए – एवी तेमनी तत्परतानुं आवा अन्य प्रसंगोमां पण दर्शन थतुं रहे छे. (विभाग २, पृ. ७५-१०२).

मांसाहारवाळा प्रकरणमां केटलाक मुद्दा बहु सरस अने महत्त्वना छे. नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरिए 'केचिन्मन्यन्ते' एम लखीने 'मांस, अस्थि, कपोत' इत्यादि शब्दोनो तेना प्रचलित अर्थमां प्रयोग थयो होवानो कोईकनो मत टांक्यो, अने पछी तेना पोताना मान्य अर्थ दर्शाव्या, ते उपरथी, उपरोक्त विद्वानोए तारण काढ्युं के 'टीकाकारना मनमां पण आ विषयमां सन्देह छे.' तेमना आवा तारणनों जलद अने बुद्धिगम्य प्रत्युत्तर/खुलासो आचार्यश्रीए आप्यो छे. तेमां टीकाकारे 'केचित्' लखीने कोईकनो मत मात्र देखाड्यो छे, अने तेमां पोतानो अस्वरस सूचव्यो छे; ठाणांगसूत्रनी टीका करतां आ विषये टीकाकारे स्पष्ट अने पोताने संमत एकज अर्थघटन आप्युं छे, एम जणावीने पेला विद्वानोनी हांसी उडाडी छे. 'युक्तिप्रबोध' जेवा ग्रन्थोना हवाला पण आप्या छे.

आचार्यश्रीए केटलाक खूब महत्त्वना मुद्दा आ प्रसंगमां, ऊभा कर्या छे : १. रेंवती भगवान्ना शासननी १२ व्रतधारी एवी प्रथम श्राविका हती. ते पोताना माटे तथा प्रभुने माटे 'मांस' रांधे खरी? तेने तो हिंसानो त्याग हतो, अने ते भवांतरमां तीर्थंकर थनार छे. २. भगवान्ने तेजोलेश्याना कारणे थयेल तकलीफनो प्रकार 'पित्तज्वर' हतो, एम आगमो जणावे छे, आयुर्वेद प्रमाणे पित्तज्वरनुं औषध मांसाहार नथी बनतुं. बल्के तेथी तो ते व्याधि वधे. आ रीते जोईए तो पण प्रभु मांसाहार न करे. ३. मांस, अस्थि, कपोत, कुक्कुट, मार्जार – ए तमाम शब्दो मांसपरक अर्थ सिवाय अन्य अर्थमां प्रयोजाय छे ज, ते अंगेना अनेक शब्दकोषो तथा जैन-अजैन धर्मग्रंथो वगेरेनां उद्धरणो/

संदर्भो आप्या छे, जे परथी स्पष्ट थई जाय तेम छे के ते बधा शब्दो वांचीने भडकी जवानी के पोताने साचा लागे तेवां तारण काढवानी अने ते रीते प्रभुनी तथा जैनागमोनी निन्दा करवानी कोई जरूर नथी. छतां कोई करे छे तो ते माटे तेनी बुद्धिमत्ता अने समजदारी विषे ज शंका करवानी रहे.

वळी, आ विषय सर्वप्रथम विवाद जाणीता जर्मन स्कोलर डॉ. हरमान याकोबीए ऊभो करेलो. तेमणे करेला 'भगवान् मांसाहार करता हता' एवा विधाननो समग्र जैन संघे अनेक प्रकारे विरोध करेलो, तथा प्रमाणो अने युक्तिओ जणावेली. परिणामे तेमणे पोते करेल अर्थघटन खोटुं होवानुं स्वीकार करतो तथा योग्य अर्थ दर्शावतो खुलासो एक पत्र लखीने आपेलो ते पत्र तेमज स्टेन कोनो नामना अन्य विद्वान्नो ते विषे संदेशो पण आचार्यश्रीए टांक्यो छे, जेथी आ विषये वाचक साव निःसंशय बनी जाय छे. (भाग-२, पृ.९७-९८).

आ उपरांत आ चरित्र-ग्रन्थमां अनेक वातो लखाई छे, जे आपणने नवीन जाणकारी तो आपे ज, आपणने आगमादि ग्रंथो तथा अन्य संदर्भो सुधी जवा माटे उत्तेजित पण करे तेवी छे. आपणे थोडीक वातोनी अछडती नोंध लईए–

१. 'कुत्रिकापण' एटले देवताई दुकान, ए वात जैन संघने खूब जाणीती छे. परंतु ते दुकान देव चलावे के मनुष्य, तथा तेवी दुकान भारतमां क्यां हती, ते विषे आगम-सूचित वीगत अहीं विस्तारथी आपी छे. (२/११)

२. 'चैत्य' शब्द आगमोमां वारंवार प्रयुक्त छे. तेनो अर्थ 'उद्यान' करवामां आवे छे. मन्दिर-निषेधको तेमनां आगम-प्रकाशनोमां ते ज अर्थ बहुधा आपे छे, पण मूर्तिपूजक वर्ग पण घणीवार तेवो अर्थ करी देतो होय छे. ते शब्दनो अर्थ 'उद्यान' नथी, पण 'चैत्य-मन्दिर' ज थाय, ते विषे अहीं सरस स्पष्टता मळे छे. (५-१३ टि.)

कोई वळी 'चैत्य'नो अर्थ 'साधु' करे छे. तेनो पण सप्रमाण निषेध (२-२३१) मळे छे.

आ गरबड थवाना मूळमां डॉ. हार्नेल नामे विदेशी विद्वाने करेल 'उवासगदसा'नुं भाषान्तर छे. तेमां तेमणे अन्यान्य संदर्भो तपास्या विना ज

अर्थ लखी दीधो, तेनुं अनुसरण पी. एल. वैद्य आदि देशी विद्वानोए कर्युं. अने तेनो उपयोग मूर्ति-निषेधक जैनोए पोताना पक्षमां करी दीधो. आ बधी वीगतो तथा तेना खुलासा माटे बीजा भागमां पृ. २३१-२३६ रोकायां छे. आ रीते आचार्यश्रीए मूल आगम-परम्पराथी विखूटा पडेला मूर्ति-निषेधकोनी योग्य रीते खबर लीधी छे. कोईके 'अरिहंत चैत्य' एवा पदनो अर्थ 'छद्मस्थ अनगार' कर्यो छे, तेनो जवाब पण तेमणे पृ. १२१-१२२मां आपी दीधो छे.

३. श्रेणिकनी प्रभु-भक्ति जाणीती छे. (२-२३६). परंतु कूणिक पण तेवो ज प्रभु-भक्त हतो, ते वात आगमपाठ साथे अहीं नोंधाई छे. (२-५२).

अहीं एक प्रश्न उद्भवे – भरहुतना प्रख्यात बौद्ध स्तूप पर कूणिक द्वारा बुद्धनुं सामैयुं शिल्पोत्कीर्ण छे. त्यां 'अजातसत्तू भगवतो वंदते' एवा अक्षरो पण कोतरायेला वंचाया छे. आनो अर्थ कूणिक बुद्ध – भक्त होवानो थाय. तो आमां यथार्थ शुं? जो के डॉ. त्रिभुवनदास लहेरचंदे 'प्राचीन भारतवर्ष' नामना पोताना ग्रंथमां, आ शिल्पने तथा तेथी आ स्तूपने माटे, ते 'जैन' होवानुं प्रतिपादन कर्युं हतुं. परंतु पुरातात्त्विक तथा ऐतिहासिक दृष्टिए ते गलत पुरवार थयेलुं. आ स्तूप बौद्ध ज छे ए सिद्ध छे.

आचार्यश्रीए आ वातने उल्लेखी नथी. अलबत्त, तेमना ध्यानबहार तो न ज होय. तेमनी पासे आ बाबतना खुलासानी अपेक्षा राखी शकाय.

एम लागे छे के, पृ. ३३२-३३-३४मां श्रेणिक जैन के बौद्ध? ते विषेनी छणावटमां, प्रथमतः ते बुद्धानुयायी होवानी, अने पछी अनाथी मुनिना संपर्कमां आवतां जिनानुयायी बन्यानुं आचार्यश्रीए नोंध्युं छे; तेमज चेटक राजा परम श्रावक हता, तेमनी पुत्री चेलणा ते जैन ज होय ते निःशंक छे; तेना सतत सहवासथी श्रेणिकनो झुकाव जिनमत प्रत्ये होय तो तेमां आश्चर्य के शंका करवानुं कारण नथी, एवी युक्ति पण नोंधी छे.

आ ज वात कूणिक परत्वे पण विचारी शकाय के, श्रेणिक जिन-अनुयायी हतो, अने चेलणा तो छे ज; तेना पुत्र तरीके कूणिक पण जिनानुयायी होय तो ते अस्वीकार्य न गणाय. वात बुद्धना सामैयानी रही. तो स्पष्ट छे के श्रेणिक हो वा कूणिक, राजा तरीके तमाम धर्मपुरुषोना मान अने सत्कार करवा ए तेमनुं कर्तव्य छे; अने ते परथी दरेक तेने स्वमत-भक्त गणे

तो तेमां वांधो न लेवो जोईए. जो आचार्यश्री हयात होत तो, तेओ पण आ वाते सहमत थात, एम मानी शकाय. एक महत्त्वनी वात उमेरवी जोईए के आ ग्रंथमां आचार्यश्रीए कूणिकनी प्रतिमानी तस्वीर आपी छे. पृ. – २७१मां ते शिल्प तथा ते परनुं लखाण जोइ शकाशे.

४. राढ के लाढ देश, वज्रभूमि, प्रणितभूमि इत्यादि विषे, केटलीक गरबड प्रवर्ते छे. ते अंगे प्रमाणपूर्वकनुं स्पष्टीकरण आ ग्रंथमां जोवा मळे छे. (१/११४, १२१, २/६१-६२). (२/१४०).

५. गोशालानो मत 'आजीवक मत' हतो. तेनो प्रभु साथेनो संपर्क, तेनुं जीवन, तेनो तेजोलेश्या तथा निमित्तशास्त्रोनो अभ्यास, तेनुं 'जिन' तरीके ख्यात थवुं इत्यादि तमाम वीगतो, तेना उचित क्रममां गोठवीने, 'गोशाला-काण्ड' नामे प्रकरणमां अपाई छे. तेना विषेनी वातोमां विसंगतिओ होय तेनुं निवारण पण थयुं छे. गोशालाना मतनी केटलीक वातो पण आपी छे. (२/५६-७२).

गोशाला द्वारा प्रत्युक्त तेजोलेश्यानो अधिकार पण आ प्रकरणमां ज चर्चायो छे. ते संदर्भे आपणा मनमां कायम रमता प्रश्ननी पण चर्चा थई छे. आपणने प्रश्न थाय छे के 'भगवाने गोशालाने तेजोलेश्याथी बचावेलो, तेनी जेम अहीं सुनक्षत्रादि अणगारोने केम न बचाव्या?' आना खुलासामां अहीं भगवतीसूत्रनो पाठ टांक्यो छे (पृ. ६७), तदनुसार, "प्रभु वीतराग छे, लब्धिनो उपयोग ते न करे; अने आ अवश्यंभावी भाव (बनाव) हतो, तेमां प्रभु हस्तक्षेप न करे; (ज्यारे गोशालाने उगार्यो त्यारे प्रभु छद्मस्थ-सराग हता, तेथी लब्धिनो उपयोग अनुकम्पावश कर्यो") – एवो खुलासो प्राप्त थाय छे, जे खूब समुचित छे.

आ विषयमां आपणे पूरक वात विचारीए: बे साधुने बचाववानी वात बाजु पर, पण खुद पोताना पर तेजोलेश्या आवी, त्यारे प्रभु तेने रोकी (अथवा देवो द्वारा रोकावी) शक्या होत. पण तेमणे तेम न कर्युं. केम?- जवाब उपर आप्यो ते ज होय; बीजो न होय.

केटलाके लख्युं के, 'गोशाला पर अनुकम्पा भगवान्नी भूल हती.' तेनो

टूंको पण, सरस प्रत्युत्तर आचार्यश्रीए आप्यो छे. (२/६८).

६. ४२मुं चोमासुं प्रभु अपापामां विराज्यानी वात जाणीती छे. परंतु ते प्रकरणमां आपणने-वाचकोने थोडाक सवालो थाय तेम छे. दा.त. १ प्रभु अपापा आव्या, समसवसरण रचायुं, अने अन्तिम उपदेश आपवा बेठा. (१५४). आमां चोमासानी वात क्यांय नथी. ४ मास क्या गाळ्या, शुं कर्युं ते वात नथी आवती. २ देशना पछी पुण्यपालना आठ स्वप्न तथा तेनुं फलकथन, ते पछी गौतम-सुधर्मा साथे प्रश्नोत्तरो बाद गौतमने देवशर्मा तरफ मोकलीने अन्तिम देशना, पछी निर्वाणनी वात थई छे. आम अन्तिम उपदेश बे प्रकारना थाय छे. ३ पेलुं समवसरण रचाया पछी देशना-भावी-कथन वगेरे पततां प्रभु त्यांथी नीकलीने हस्तिपाल-राजानी शुल्कशालामां पधार्यानी वात थई छे. (१५८) आ बधुं परम्परागत तेमज कल्पसूत्रगत हकीकतोथी जरा जुदुं पडे छे. ४ पुण्यपाल तथा हस्तिपाल राजाओ दीक्षा ले छे. (१५७-१५८). आ वात प्रायः नवी लागे छे. वळी, आना आधार टांक्या नथी. टांक्या होत तो उचित थात.

७. कल्पसूत्रानुसार आपणे का.व. ०)) निर्वाणदिन स्वीकारीए, ज्यारे दिगम्बरो तेमना ग्रंथो-अनुसार का.व.१४ माने, उत्तरप्रदेशमां ०))नी अने दक्षिणापथमां १४नी – एम पण वात छे. दिगम्बरोमां बे मत – प्रभु एकाकी मोक्षे गया; प्रभु साथे एक हजार मोक्षे गया. आवी वीगतो पण आमां मळे छे. (पृ.१६३-६४)

८. एक सरस वात आमां ए जाणवा मळी के भगवान् लिच्छिवि क्षत्रिय हता. तेमनुं गोत्र काश्यप हतुं, जेनी स्थापना आदिनाथना समयमां थयेली. ते हिसाबे भगवान्ना पूर्वजो अयोध्याना, अने त्यांथी वैशाली आवेला – एम गणाय. कोईए 'लिच्छवि काशीना' एवुं विधान कर्युं छे, ते आथी, असंगत ठरे छे. (२-१६७.)

भगवान् निर्वाण पाम्या त्यारे, अने चेटकराजा युद्धे चड्या छे त्यारे, नव मल्लकी तथा नव लिच्छिवि गणराजाओनो उल्लेख आवे छे. त्यां 'नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो' एवो पाठ होय. तेना अर्थघटनमां प्राकृतना अनभिज्ञ विद्वानोए जबरो गोटाळो कर्यो छे – ९ मल्ल,

९ लिच्छवि, अने काशी-कोसलना १८ गणराजा-एम कुल ३६ राजाओ." आनो खुलासो अहीं आचार्यश्रीए कर्यो छे. (२-१६६).

९. वीर नि. संवत् ८४मां उत्कीर्ण एक अभिलेख, जेने आचार्यश्री 'भारतनो प्राचीनतम शिलालेख' गणावे छे, तेनी तसवीर आ ग्रंथमां आपीने जैनोनी प्राचीनता विषे एक श्रेष्ठ प्रमाण उपलब्ध कराव्युं छे. आ लेख अजमेरना संग्रहालयमां मोजूद छे. (२-१६७). जैनोनुं लिपिज्ञान केवुं हतुं, केटलुं प्राचीन हतुं, ते आनाथी निर्धारित थाय तेम छे. ग्रंथनी प्रस्तावनामां आना विषे आचार्यश्रीए लख्युं के – "जैनो के लिपि-ज्ञान का अकाट्य प्रमाण उनके शिलालेख हैं । भगवान् महावीर के महानिर्वाण के ८४ वर्ष बाद के एक शिलालेख का चर्चा-चित्र और उस का पाठ हमने इसी पुस्तक में दिया है । उसके बाद के तो अशोक, खारवेल तथा मथुरा आदि के शिलालेख बहुज्ञात है।" (XVIII)

१०. बौद्ध ग्रंथ 'दीघनिकाय'मां भगवान् महावीर विषे एक भ्रामक वृतान्त छे, ते टांकीने ते अंगे आचार्यश्रीए स्पष्टीकरण कर्युं छे. ते वृत्तान्त मुजब "बुद्ध शाक्य-देशमां हता त्यारे एक दिवस चुन्द अने आनन्दे तेमनी पासे आवीने निवेदन कर्युं के निग्गंठ नातपुत्त पावामां मृत्यु पाम्या छे, अने पछी तेमना संघमां फूट पडी, अने निगंठो लड्या." आथी ते – बौद्धो बहु राजी थया.

आ वात भ्रामक छे, ते केवी रीते – तेनो विस्तृत खुलासो आचार्यश्रीए कर्यो छे. बुद्ध, महावीरथी १६ वर्ष अगाउ मृत्यु पाम्या छे. तेथी महावीरना निर्वाण – समये बुद्धनुं होवुं ज शक्य नथी, तो आ वार्ता स्वयमेव काल्पनिक ठरे छे. छतां तेनो ताळो मेळववो होय तो बे रीते मळे – डॉ. ए.एल. बाशम अनुसार, आ उल्लेख सावत्थीमां गोशालाना मृत्यु अंगे होवो जोईए. अने आचार्यश्री-अनुसार, आ उल्लेख, १६ वर्ष पूर्वे जमालि भगवान् थी अलग थया ते संबंधी होई शके. (२-१७०-७१)

हुं विचारुं छुं के जमालि पृथक् थया ते समये तेना शिष्योमां विवाद थयो होय अने तेना अमुक शिष्यो भगवान् पासे रही गया होय, ते समये

परस्पर ते शिष्योमां झगडो के विवाद थयो होय. जो के वधु साची तो गोशालाना मृत्युवाळी वात ज लागे छे. भगवाने कहेलुं के तारा (गोशालाना) मृत्यु पछी हुं सोळ वरस जीवीश. गोशालाना अवसान बाद तेना शिष्योमां झगडा थया होय. केमके गोशालाए मरणोपरान्त शुं करवुं ते विषे बे प्रकारना निर्देश आपेला. तेने लईने शिष्योमां विवाद थाय तो ते शक्य छे. ते वखते बुद्ध हयात होय, अने आ वधाई तेमने अपाई होय तो बनवाजोग छे. जे होय ते, पण ते झगडो निग्गंठ नातपुत्तना खाते बौद्धोए चडावी दीधो ते साचुं. आ अंगे डॉ. याकोबीनो खुलासो – "ते बौद्ध-सूत्रो बुद्ध निर्वाणनी २ के ३ सदी पछी लखायां छे. आटला लांबा गाळे सांभळेली वातो लिपिबद्ध थाय तो तेमां क्षति थवी स्वाभाविक छे." (२-१७१) – बिलकुल उचित लागे छे.

११. दशार्ण देशनी राजधानी दशार्णपुर. ते हाल 'विदिशा' अथवा 'भिलसा' एवा नामे ओळखाय छे. 'भिलसा ना मूळमां 'भाइल' छे; आ नगर 'भाइलस्वामी' एवा नामे प्रसिद्ध हतुं; अहीं जीवितस्वामीनी प्रतिमा हती, ते 'भाइल' नामे श्रावक द्वारा पूजाती हती. कालांतरे ते भाइलस्वामी अर्थात् सूर्यदेवनी प्रतिमा तरीके प्रसिद्ध थई पूजाई, तेथी भाइल परथी भिलसा एवुं नाम आव्युं. आनो रोचक वृत्तान्त अहीं वांचवा मळे छे. (५-२८५-८६). आमां विविध तीर्थकल्प, अल्बरुनी नामे प्रवासीनुं वर्णन, त्रिषष्टि, डॉ. होल अने डॉ. कनिंघमना रिपोर्टो वगेरेनां प्रमाणो टांकीने वर्णन थयुं छे.

दशार्ण – भिलसानी समीपे ज गजाग्रपद पर्वत होवानुं वर्णन मळे छे. आचार्यश्री लखे छे के आ नगरी 'गजाग्रपद' नामे पण ओळखाती होवानो उल्लेख मळे छे. (२८६). आ वात गळे न ऊतरे. केम के ते वाक्य पछी तरत तेओए 'दशार्णभद्रनो हाथी पोताना आगला पग उपर, भगवान् समक्ष ऊभो थवाथी तेनां पगलां पडी जतां ते पहाड 'गजाग्रपद गिरि' नामे जाणीतो थयो. (२८६). आम नगरनुं नाम के पहाडनुं नाम – बे पैकी एक नक्की करवुं कठिन बने छे. नगरीना नाम तरीके तेमणे वर्णन कर्युं पण ते अंगे कोई प्रमाण देखाड्युं नथी, तेथी ते पर्वतनुं नाम होवानुं मानवुं वधु साचुं लागे छे.

आगळनी पंक्तिओमां 'गजाग्रपद ते ज रथावर्त' एवुं पण प्रतिपादन थयुं

छे, आमां तेओ 'कल्पसूत्रार्थप्रबोधिनी'नुं साव अर्वाचीन गणाय तेवुं प्रमाण टांके छे.' (२८६). परंतु अहीं प्रश्न थाय· के आ ज पृष्ठ पर, ७ नम्बरनी पादटीपमां उद्धृत करेली आचारांग-निर्युक्तिनी गाथामां 'गयग्गपयए' तथा 'रहावत्तनगं' बे तीर्थोना अलग उल्लेख जोवा मळे छे. जो बन्ने नामो एक ज तीर्थनां होय तो निर्युक्तिकार एकज गाथामां पुनरुक्ति तो न ज करे! एटले गजाग्रपद अने रथावर्त – ए बेय पर्वतो भिन्न भिन्न होय ए वधु ठीक जणाय छे. गिरनार पर्वत पर, आ ज रीते हाथीना पग पडवाथी, 'गजपद' कुण्ड बन्यो होवानी वात, आ प्रसंगे याद आवे.

त्रिपुटी महाराज अने तेमनो इतिहास ग्रंथ 'जैन परंपरानो इतिहास' आपणे त्यां खूब जाणीता छे. ते ग्रंथमां 'रथावर्त' मैसुर राज्यमां छे, अने गोम्मटेश्वर बाहुबली ते वस्तुतः वज्रस्वामीनी प्रतिमा छे, एवुं नोंधायुं हशे; तेनो रदियो अहीं आचार्यश्रीए आपी दीधो छे. (२-२८७.)

१२. एक वात सांभरे छे. बौद्ध ग्रंथोमां एवी घटनानो उल्लेख छे के जे प्रमाणे, प्रभु महावीरनी प्रेरणाथी, केटलाक भक्त गृहस्थोए, बुद्धने बदनाम करवा माटे, सुन्दरी नामे एक वेश्याने लांच आपीने रोकेली. परंतु ते कारस्तान खुल्लुं पडी जतां भगवान्नी ज बदनामी थई. हवे आ वात नितान्त खोटी छे, ते पुरवार थई चुकेलुं छे. बीजाने बदनाम करवानी आ सांप्रदायिक रीत ज हती. पण प्रस्तुत ग्रंथमां ते विषे आचार्यश्रीए कोई नोंध नथी करी ते जरा आश्चर्य जन्मावे. जो के आवी खोटी अने अशोभनीय वातने स्पर्शवानुं आ चरित्र योग्य स्थान न होवानुं तेमना मनमां हशे.

१३. समग्र चरित्र एक स्पष्ट नकशा प्रमाणे आलेखायुं छे, तेमां भगवान्ना जन्मथी निर्वाणनां ७२ वर्षोनो वर्षवार नकशो छे, तो तेओना निवास अने विचरणनां तमाम स्थानोनो पण नकशो छे. आचार्यश्रीए प्रत्यक्ष अने ऊंडा संशोधन पछी 'वीर-विहार-मीमांसा' नामे पुस्तक पण लख्युं छे, अने तेमां भगवान्नां ४२ वर्षोनां विहारक्षेत्रोनो स्पष्ट नकशो पण तेमणे आलेख्यो छे. सांभळ्युं छे के भगवान् ज्यां ज्यां विचरेला ते तमाम क्षेत्रमां प्रायः आचार्यश्री पुरातत्त्वविभागनी टीम साथे फर्या हता, अने ते वेळा करेला उत्खनन आदि पुरातात्त्विक सर्वेक्षणो तथा ऐतिहासिक तथ्यो ना आधारे तेमणे विहारनो नकशो

बनाव्यो छे. आवश्यकनिर्युक्ति आदि शास्त्रोनां वर्णनो, ए स्वाभाविक रीते ज, तेमनी शोधखोळनां आधारस्त्रोत रहेलां.

आथी, भगवान् पालीताणा-शत्रुंजयगिरिए आवेला; मुण्डस्थलना १४मी-१५मी शताब्दीना, अर्वाचीन गणाय तेवा लेखना आधारे त्यां विचरेला; ब्राह्मणवाडामां कानमां खीला ठोकायानो उपसर्ग थयेलो अने ते वखते पाडेली चीसथी पहाडना बे भाग थई गयेला – जे त्यां अत्यारे देखाडवामां आवे छे; ईडर पधारेला अने त्यारे त्यां तेमना नाना – छेल्ला शिष्य जराक प्रमाद करवाने कारणे ते मोक्षे न जई शक्या श्रीमद् राजचन्द्र नामे पेदा थया; आ के आ प्रकारनी दन्तकथाओ आ चरित्रमां स्थान न पामी होय तो ते समजाय तेवुं छे. आपणा देवाधिदेवना नामे, आपणी रूढ मान्यताने पोषवा-पंपाळवा माटे थईने, काल्पनिक वार्ताओ आपणे क्यां सुधी चलावीशुं? कोई क्षेत्रविशेष माटे स्तुतिवाद के अर्थवाद जरूर कराय, पण ते माटे खुद तीर्थंकर प्रभुने साधनलेखे प्रयोजाय ते केटलुं उचित गणाशे? इतिहास अने कल्पनाकथारूप प्रबन्धो ए बे वच्चेनो तफावत, हवे तो समजावो ज जोईए. अस्तु.

ଌଌ

संवत् २०७२मां पालीताणा मुकामे जैनश्रमण-संमेलन मळेलुं. तेमां विविध प्रस्तावोनी भरमारमां एक प्रस्ताव 'जैन इतिहास' लखवानो मूकायेलो. ते अनुसार १०० ग्रंथोमां कडीबद्ध जैन इतिहास आलेखवानी दरखास्तना अमलनी जवाबदारी मारा शिरे आववानी थई. ते क्षणे में खूब गंभीरताथी लंबाण रजूआत करी, तेनो सार ए हतो के, "इतिहास ए कथा-वार्तानी जेम लखी नाखवानी वस्तु नथी. कोईए कीधुं : सो ग्रन्थो; बीजाए टेको आप्यो; कोईक मारा जेवाना माथे तेनी जवाबदारी नाखी दीधी; प्रस्ताव पसार! इतिहास तैयार! आवी आसान रमत नथी इतिहास-लेखन. इतिहास लखवा माटे पहेलां रोकडां पचीस वर्ष, ते माटेना अभ्यासमां अने ते माटेनी सज्जता केळववामां, खर्ची शके तेवा २०-२५ युवान साधुओ लावो. तेमणे बीजी तमाम प्रवृत्तिओ अने बाबतोमांथी निवृत्त थवुं पडे, अने पहेलां आगमो अने ते साथे जोडायेल साहित्य; अन्य विविध धर्मोना आगमादि ग्रंथो; दर्शनो वगेरे भणवां पडशे. पछी छेल्ला ४-५ सैकाओमां लखायेला इतिहास विषयक ग्रंथो तथा वर्णनो,

जे विविध भाषाओमां हशे तेनुं अध्ययन करवुं पडशे. पछी भारतीय अने विदेशना अनेक तज्ज्ञो द्वारा लखायेल इतिहासना, पुरातत्त्वना तथा संशोधन अने समीक्षाना ग्रंथोनो तलावगाही क्यास लेवो पडशे. परस्परनो छेद उडाडता अनेक दृष्टिकोणो, तारणो तथा मत-मतांतरोने समजवा तथा तेना परिप्रेक्ष्यमां मध्यस्थ-बुद्धिथी सत्यासत्यनो के तथ्यातथ्यनो निर्णय लेतां शीखवुं पडशे. त्यां पक्षीय तथा सांप्रदायिक अभिनिवेश वाळी दृष्टि काम नहि लागे. अने आम करवा जतां पोताने थती प्रतीतिने आधारे अनेक रूढ अने परम्पराप्राप्त बाबतोने गाळी-चाळीने तथ्य सुधी पहोंचवानी तथा तेने मक्कमताथी रजू करवानी त्रेवड केळववी पडशे. त्यां 'कोई शुं कहे? केवुं माने?' एवी भीरुता के 'जेने जे मानवुं-कहेवुं होय ते कहे; हुं तो मारुं नहि छोडुं' एवी नींभरता – ए बेय नहि चाले. आटली तथा आ प्रकारनी सज्जता होय त्यारे इतिहास लखी शकाय. बाकी आपणा हाथे थता उत्सवादिना वृत्तान्तो-हेवालो लखी देवा जेटलुं सहेलुं काम इतिहास लखवानुं नथी, ए बधा समजी लो. आवी तैयारी होय तो आ ठराव मंजूर करो. मारी व्यक्तिगत तैयारी नथी. केम के मने ख्याल छे के आवुं करवा जईश तो हुं स्वयं इतिहास बनी जईश, अने आ काम करी नहि शकुं."

आ वातना संदर्भमां में त्यां-सभामां पूछेलुं : आप बधामांथी विजयेन्द्रसूरि महाराजनुं नाम केटलाए सांभळ्युं छे? अने तेमणे 'तीर्थंकर महावीर' नामनुं भगवान्नुं ऐतिहासिक तेमज आगमानुसारी चरित्र बे भागमां लख्युं छे ते केटलाए वांच्युं छे?

आनो जवाब ३-४ मुनिने बाद करतां त्यां उपस्थित लगभग ७०० मुनिवरो पासे नहोतो, अथवा नकारात्मक चूपकीदीमां हतो. में सूचव्युं के पहेलां ए ग्रंथ मेळवीने वांची जाओ, पछी इतिहास लखवाना कार्यक्रम विषे विचारजो.

थयुं. ते उत्साहनी क्षणो गई ते गई. आजे, २०७६मां ते प्रस्ताव इतिहास बनी गयो होवानुं निर्लेपभावे जोउं छुं अने आपणी आपातरमणीय तथा क्षणमधुर वातोमां ज रस लेवानी वृत्ति माटे तथा इतिहासना अध्ययन माटेनी घोर उपेक्षावृत्ति माटे मन विषादथी छलकाई जाय छे. मजा तो जुओ! ते वेळा

त्यां उपस्थित पैकी एक पण मुनिवरे आ ग्रंथ विषे जिज्ञासा व्यक्त करी होवानुं जाण्युं नथी हजु. अस्तु.

आ ग्रंथनुं आकर्षण मने मारा अभ्यास-काळथी रह्युं छे. मारा गुरुमहाराज आ माटे जवाबदार गणाय. तेमणे ज आवां पुस्तकोनुं मने घेलुं लगाडेलुं. आ ग्रंथनी नकलो हुं आ.क.पेढीमांथी वेचाती मगावतो अने उपयोग करे तेवा लोकोने वहेंचतो. पेढीनुं स्थळांतर थतां ए ग्रंथो-नकलो लुप्त थई गई! संभवतः पस्तीमां गई! हवे शुं करवुं?

एमां संमेलन पछी मनमां उमंग जाग्यो के आनुं पुनः प्रकाशन करावबुं. ते उमंगनुं परिणाम आ ग्रंथरूपे आव्युं छे, तेनो आनंद छे.

विजयेन्द्रसूरि महाराज, काशीवाला महान् जैनाचार्य विजयधर्मसूरि महाराजना पट्टशिष्य हता. तेमना हाथे बनारसमां श्रीयशोविजय जैन संस्कृत पाठशाला स्थपाई, तेमा जैन समाजना पं. सुखलाल, बेचरदास, हरगोविंददास अने तेवा अन्य अनेक नामांकित पंडितो तैयार थया हता. आ पंडितोए जैन साहित्यनी खूब उच्च सेवा करी छे. तेमनामांना कोईनी विचारसरणि साथे आपणे असहमत थईए तो पण तेमनी साहित्य सेवानी नोंध तो लेवी ज पडे. तेओश्रीए शिवपुरीमां पाठशाळा तथा ज्ञानमंदिर स्थाप्यां, तेमां जयभिक्खु, रतिलाल देसाई, साठंबाकर वगेरे अनेक विद्वान् साहित्यकारो पाक्या हता. तेमना शिष्यो विजयेन्द्रसूरि, उपाध्याय मंगलविजयजी, श्रीविद्याविजयजी, श्रीहिमांशुविजयजी, श्रीजयंतविजयजी, श्रीविशालविजयजी, श्रीन्यायविजयजी वगेरे एकेकथी चडियाता विद्वान् साधुजनो हता. आ बधाए करेली शास्त्र-साहित्य सेवा अजोड हती; तेनी नोंध जो के हजी लेवाई नथी, ए आपणा समाजनी कमनसीबी छे. समीवाळा विजयभक्तिसूरि ते तेओना ज शिष्य हता. भावनगरमां यशोविजय ग्रंथमाला, महुवामां यशोवृद्धि बालाश्रम इत्यादि तेमनुं प्रदान हतुं. विदेशोना सेंकडो विद्वानो तेमना भक्त हता, अने तेओने जैन ग्रंथादिनुं अध्ययन करवा माटे तेओश्री तमाम सहाय पूरी पाडता. तेमना जीवनचरित्र भारतमां नहि, पण भारत-बहार अनेक भाषाओमां विद्वानोए आलेख्यां छे.

विजयेन्द्रसूरि संशोधन, इतिहास अने पुरातत्त्वना जीव हता. भारतना शिक्षामंत्री मौलाना आजाद तेमना मित्र हता. तो प्रसिद्ध फिल्मी एक्टर राजेन्द्रकुमारना तेओ काका हता. तेमणे रचेला अभ्यासपूर्ण अने शोधपूर्ण ग्रंथोनी यादी घणी मोटी छे. भविष्यमां जैन इतिहासना कोई मुद्दे विखवाद-विवाद थाय तो, तेमना ग्रंथो प्रमाणभूत साक्ष्य तरीके खूब उपयोगी थवाना छे. आ दृष्टिए पण तेमना ग्रंथो सचवावा जोईए अने तेनो उद्धार थवो जोईए.

आचार्यश्री संबंधे वधु जाळकारी माटे आ ग्रंथना बन्ने भागोमां श्रीकाशीनाथ सराकना 'दो शब्द' वांचवा जरूरी छे. तेमना ते लेखो परथी एटलुं समजवा मळे छे के 'वैशाली' तेमज 'वीरविहारमीमांसा' प्रकाशित थई त्यारे रूढिचुस्त जैन हचमची उठेला, अने ते पुस्तको रद्द करवानी मागणी करेली. जो के आचार्यश्रीए तेम न ज कर्युं. अने 'तीर्थंकर महावीर' प्रगट थयुं त्यारे तेनी २०० नकल आणंदजी कल्याणजी पेढीए खरीदी हती; पेलां बे पुस्तकोमांनी वातो आ ग्रंथमां हती तो पण.

मने श्रद्धा छे के आ चरित्रग्रंथमांथी अमारा आशास्पद अने होनहार मुनिगणने घणुं बधुं सांपडशे. एक एक वात लखवा माटे, विधान करवा माटे, केटकेटलां शास्त्रो तथा ग्रंथो अवलोकवा पडे, केटला बधा जैन-अजैन विविध धर्मोना ग्रंथो, विद्वानोनां पुस्तको तथा सामयिको, लेखो, रिपोर्टो-बधानुं केवुं अवगाहन करवुं पडे, ते माटे विविध भाषाओ पर आवश्यक प्रभुत्व प्राप्त करवुं पडे, ते बधाना आशय समजतां – तारवतां आवडवुं पडे, वळी लखती वखते ते बधा संदर्भो याद राखवा पडे तथा तेनों समुचित स्थाने समुचित विनियोग करवानी क्षमता केळववी पडे; आ बधुं आ मुनिओने आ ग्रंथ द्वारा समजवा-शीखवा मळशे, ए केटलो मोटो लाभ हशे!

(आ.श्रीविजयेन्द्रसूरि-लिखित ग्रन्थ 'तीर्थंकर महावीर' भाग २नी प्रस्तावना)
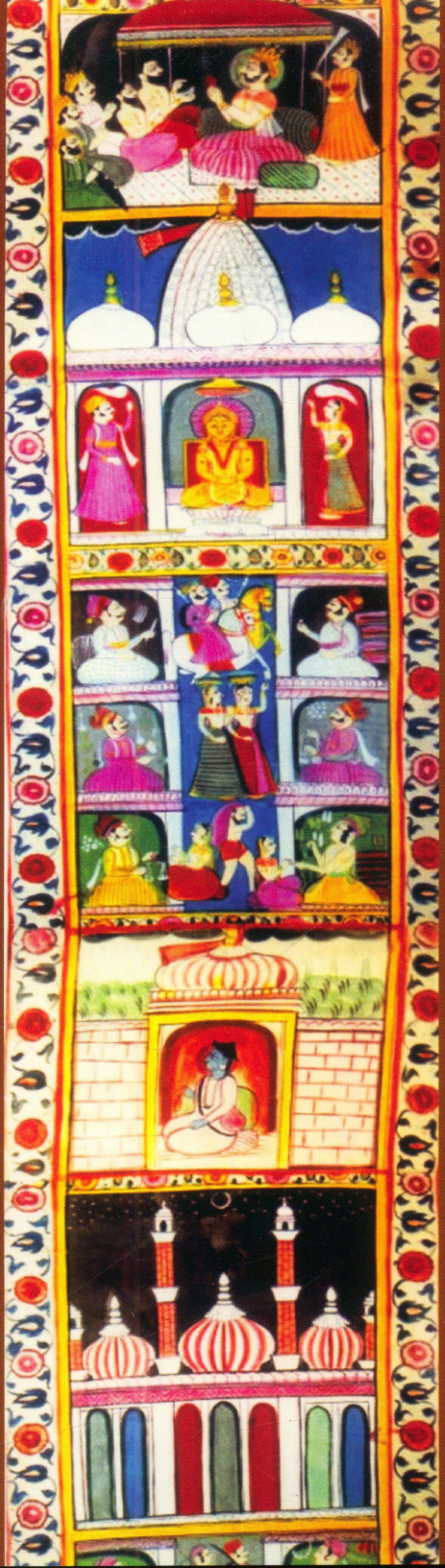
C/o. अतुल कापडिया
अमदावाद-७